दीपवर्तिका

(मैथिलीक विश्रुत साधक श्रीजगदीश प्रसाद मण्डलक आभा-प्रभा)

दीपवर्तिका

डॉ. योगानन्द झा

पल्लवी प्रकाशन
बेरमा/निर्मली

Deep Vartika: *Glimpse of a multi-dimensional legendary manufacturer of Maithili literature: Shri Jagdish Prasad Mandal by Dr. Yoga Nand Jha, Pallavi Prakashan, Nirmali, 2023, 390/-*

ISBN: 978-93-93135-77-3
दाम: 390/- (भा.रु.)
सत्त्वाधिकार: © लेखक (डॉ. योगानन्द झा)
पहिल संस्करण: 2023

प्रकाशक: पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, नेहरू मार्ग, वार्ड नं.: 06, निर्मली
जिला- सुपौल, बिहार: 847452
मुद्रक: पल्लवी प्रकाशन (मानव आर्ट)

वेबसाइट: http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल: pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल: +91 62006 35563; +91 99316 54742

फोण्ट सोर्स: https://fonts.google.com/,
https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts
आवरण चित्र: श्रीमती पुनम मण्डल, निर्मली (सुपौल) बिहार: 847452
अक्षर संयोजन: डॉ. उमेश मण्डल

एहि पोथीक सर्वाधिकार सुरक्षित अछि। सत्त्वाधिकारी अथवा प्रकाशक केर लिखित अनुमतिक बिना पोथीक कोनो अंशक छाया प्रति एवं रिकॉर्डिंग सहित इलेक्ट्रॉनिक अथवा यांत्रिक, कोनो माध्यमसँ अथवा ज्ञानक संग्रहण वा पुनर्प्रयोगक प्रणाली द्वारा कोनो रूपमे पुनरुत्पादित अथवा संचारित-प्रसारित नहि कएल जा सकैत अछि।

अनुक्रम

स जातो येन जातेन.../07

आस्था, जिजीविषा ओ संघर्षक प्रवाह 'गामक जिनगी'/22

आदर्शक उपस्थापन: 'मौलाएल गाछक फूल'/29

ग्रामजीवनक सत्यक संवाहक: 'अर्द्धांगिनी'/38

लोकजीवनक घनीभूत चिन्तनक राजमार्गपर दृष्टिपात:
'कर्ताक रंग कर्मक संग'/52

कथाकृति: 'बजन्ता-बुझन्ता'/60

'कम्प्रोमाइज'क वस्तु-विन्यास/72

'एक चुटकी खुशी'क पाठ/82

'एकलव्यपन'मे मिथिलाक जीवन-दर्शन/87

'सतबेध': काव्य सौन्दर्य/95

स्वतंत्रतापूर्व मिथिलाक इतिवृत्त: 'उत्थान-पतन'/102

उपन्यासक सुमेरु : 'पंगु'/129

स जातो येन जातेन...

कर्मवीर, सुधी, सविद्य ओ पुरुषार्थवान साहित्यकारक रूपमे प्रख्यात श्रीजगदीश प्रसाद मण्डलजी मिथिला-महीक एहन वरद सुपुत्र थिकाह जनिक जीवनक पूर्वार्द्ध संघर्षशीलताक पर्याय बनल लोककल्याणक मार्गकँ प्रशस्त करबामे दत्तचित्त रहल तँ उत्तरार्द्ध बहुआयामी साहित्य-सृजनक माध्यमे समाज, राष्ट्र ओ अखिल मानवताक उन्नयन दिस अभिमुख देखि पड़ैत अछि। एहन लोक सहजहि अपन कर्म, शौर्य, आदर्श ओ ऐश्वर्यक द्वारा लोकजगतमे लोकनायकक अभिधानसँ विभूषित होइत रहल छथि तथा वन्दनीय ओ अभिनन्दनीय मानल जाइत रहल छथि। जनसामान्य एहन लोकनायकक आदर्शक अनुपालन द्वारा कृतकृत्य तँ होइतहि छथि, हुनक जीवन-चरितक अनुगायन द्वारा सार्थक जीवन-पद्धतिक मार्गक अन्वेषण सेहो करैत देखि पड़ैत छथि।

कृती-व्यक्तित्व श्रीमण्डलजी मानव मात्रक समता, स्वतंत्रता ओ बनधुत्वक स्थापनाक हेतु प्रतिबद्ध तँ छथिहे, 'तमसो मा ज्योर्तिममय'क भावनाकेँ प्रतिबद्धताक संग अंगीकृत करैत लोकजगतकेँ अज्ञानान्धकारसँ प्रकाश दिस उन्मुख करयबाक उद्देश्यसँ नहि केवल चिन्तनशील रहैत आयल छथि अपितु लेखन ओ कर्म दुनूमे समन्वय स्थापित कऽ एकटा विशिष्ट उदाहरणे सावित भऽ गेल छथि। आधुनिक मैथिलीक साहित्योद्यान हिनका द्वारा प्रणीत विविध ओ विपुल पुष्प-पादपक सम्मिलित सुवाससँ महमहाइत रहल अछि।

हिनक जन्म झंझारपुर अनुमण्डलक बेरमा गाममे पाँच जुलाई 1947 इस्वी कऽ भेल छलनि। ई गाम दरभंगा-निर्मली रेलवे लाइनक तमुरिया स्टेशनसँ लगभग चारि किलोमीटर उत्तर-पश्चिम दिशामे तथा

राष्ट्रीय उच्च पथ संख्या 57क चनौरागंज चौकसँ लगभग तीन किलोमीटर पूब-दक्षिण दिस अवस्थित अछि। एहि गाममे विभिन्न जाति ओ सम्प्रदायक लोकक निवास रहलनि अछि जे परस्पर समन्वयपूर्वक जीवन-यापन करैत आयल छथि। कृषि ओ पशुपालन एहि गामक लोकक आजीविकाक प्रमुख साधन रहलनि अछि। ओना ई गाम पण्डित लोकनिक गामक रूपमे प्रख्यात रहल अछि। एकर निकटवर्ती गाम नवानी ओ दीप अध्ययन-अध्यापनक दृष्टिऍ संस्कृत शिक्षाक केन्द्रक रूपमे प्रख्यात रहल अछि जतऽ वेद, वेदाङ्ग, व्याकरण, ज्यौतिष, साहित्य आदिक पठन-पाठनक उत्तम व्यवस्था रहलैक अछि। शिक्षा ओ राजनीति दुनू दृष्टिऍ बेरमा गाम अत्यन्त जाग्रत मानल जाइत रहल अछि।

पिता:

श्रीजगदीश प्रसाद मण्डलजीक पिताक नाम छलनि दल्लू मण्डल। ई सम्भ्रान्त प्रकृतिक मध्यमवर्गीय कृषक छलाह। कृषि योग्य पर्याप्त भूमि हिनका लग छलनि जाहिसँ परिवारक गाड़ी सुगमतापूर्वक चलैत रहलनि। गाम-गामातिमे ई कहबैका लोकक रूपमे मान्यता प्राप्त छलाह आ सभ जातिक लोकक बीच हिनका पर्याप्त सम्मान प्राप्त छलनि। कृषि कार्यक हेतु जोड़ा बड़द आ पशुपालनक दृष्टिऍ तीनटा महींस हिनका खुट्टापर सभ दिन वर्तमान रहैत छलनि। ई कबीरपन्थमे दीक्षित छलाह आ महात्मा जकाँ जीवन गुदस्त करैत छलाह। श्रीजगदीश प्रसाद मण्डलजीकेँ अपन पिताक छत्र-छाया अधिक दिन धरि प्राप्त नहि रहि सकलनि। जखन ई लगभग तीने वर्षक रहथि, तखने हिनक पिताजीक देहान्त भऽ गेलनि।

माता:

स्वभावत: श्री मण्डलजीक लालन-पालनक भार समष्टि रूपमे हिनक माता श्रीमती मकोवती देवीपर पड़ि गेलनि। माता मकोवती देवी अत्यन्त साध्वी प्रकृतिक महिला छलथिन। अपन संघर्ष ओ विवेकक

बलपर ई नेना लोकनिक लालन-पालनमे कनेको कोताही नहि होमय देलथिन। मातृदेवीक असमय वैधव्यजन्य संघर्ष ओ सहज विवेकशील संस्कार मण्डलजीक बालमनकेँ अवश्ये अनुप्राणित कयने होयतनि। ई हुनक संघर्षी ओ परोपकारी व्यक्तित्वक निर्माणक आधारशिला बनल होयत, से सहजहिँ उह्य थिक।

माता मकोवती देवीकेँ दुइ पुत्र भेलथिन जाहिमे श्री कुलकुल मण्डल ज्येष्ठ छलाह आ श्रीजगदीश प्रसाद मण्डल छोट। मकोवती देवीकेँ हिनका दुनूक परिपालनमे प्रारम्भमे कोनो बेसी संघर्ष नहि करऽ पड़लनि। एकर कारण ई छल जे ताहि समय धरि हिनक ननदिक दुइ गोट पुत्र क्रमशः गोनर मण्डल आ कारी मण्डल जनिक वासडीह हरनाही ग्राम छलनि, हिनके परिवारक अंगीभूत भऽ कऽ रहैत छलथिन। ओ लोकनि अपन गामसँ प्रव्रजित भऽ कऽ बेरमहिमे वास लऽ लेने छलाह। एकर कारण छल बिहारक शोक कहल जायवाली नदी कोसिका। हिनक धार जखन पच्छिम दिस कटाओ शुरू कयलक तँ हरनाही ग्रामकेँ अपन पेटमे लऽ लेलक जकर कारणे गोनर मण्डल ओ कारी मण्डल प्रव्रजित भऽ कऽ बेरमामे मामाक लग शरण ग्रहण कयलनि। ई दुनू भाइ परिवारक अंग छलथिन तँ दल्लू मण्डलक मृत्युक बादो हुनक परिवारक कृषि ओ पशुपालन-व्यवस्थापर कोनो आँच नहि अयलनि आ श्रीमती मकोवती देवीक पुत्र लोकनिक परिपालन सहज रूपेँ होइत रहलनि। ओ पुत्र द्वयकेँ पिताक अनुपस्थितिक भान नहि होमय देलथिन आ पर्याप्त दुलार-मलार ओ सुव्यवस्थाक संग हुनका लोकनिक परिपालन करैत रहलथिन।

क्रमशः हिनक ज्येष्ठ पुत्र कुलकुल मण्डलक शिक्षारम्भ अपन गामेक लोअर प्राइमरी स्कूलसँ आरम्भ भेलनि आ ततःपर ओ कछुबी मिड्ल स्कूलमे नामांकन करौलनि। मुदा मिड्ल क्लासमे उत्तीर्ण होयबासँ पूर्वहि कुलकुल मण्डल शिक्षासँ विरक्त भऽ गेलाह आ 1956-57 इस्वीमे मिड्ल स्कूल छोड़ि अमानतक प्रशिक्षण लेबऽ लगलाह। ततःपर ओ अमानतहिकेँ

अपन आजीविकाक सम्पूरक बना लेलनि आ पारिवारिक कृषि ओ पशुपालन व्यवस्थासँ सम्पृक्त रहय लगलाह। 1960 इस्वीमे गोनर मण्डल ओ कारी मण्डलक पुश्तैनी जमीनकेँ कोसी अपन पेटसँ बहार कऽ देलथिन आ ई दुनू भाइ बेरमा छोड़ि अपन गाम चलि गेलाह। परिणामत: पारिवारिक कृषि-व्यवस्थाक भार माता मकोवती देवी ओ हुनक ज्योष्ठ पुत्र कुलकुल मण्डलपर पड़ि गेलनि।

शिक्षा:

श्रीजगदीश प्रसाद मण्डल जखन पाँच-छओ वर्षक छलाह, तखने अपन भाइ कुलकुल मण्डलक संग गामेक लोअर प्राइमरी स्कूल जाय लगलाह। ई तीक्ष्ण बुद्धिक छात्र छलाह तथा शिक्षाक प्रति सर्वथा अभिभूत रहल करथि। 1956 मे हिनक नामांकन गामक सटले पूब कछुबी मिड्ल स्कूलमे करा देल गेलनि। 1960 मे ई मिड्ल परीक्षोत्तीर्ण भेलाक बाद उच्च शिक्षाक हेतु झंझारपुर स्थित केजरीवाल हाइस्कूलमे नामांकन करौलनि। एही स्कूलसँ 1965 मे ई हायर सेकेण्डरी परीक्षोत्तीर्ण भेलाह। तत:पर जनता कालेज, झंझारपुरसँ आइ.ए. तथा बी.ए. पार्ट वन परीक्षा पास कऽ ई प्राइवेट छात्रक रूपमे सी.एम. कालेजसँ हिन्दीमे प्रतिष्ठाक संग स्नातक परीक्षोत्तीर्ण भेलाह। अन्तत: सी.एम. कालेजहिसँ ई 1969-71 सत्रमे एम.ए. (हिन्दी) मे अपन नामांकन करौलनि आ स्नातकोत्तर स्तरक शिक्षा प्राप्त करबामे सफल भेलाह। पछाति राजनीति विज्ञान विषयमे सेहो एम.ए. परीक्षोत्तीर्ण भेलाह। एतावता अनेक विपरीत परिस्थितिक बादो द्दढ़ संकल्प द्वारा कोना लक्ष्य सिद्धिकेँ प्राप्त कयल जा सकैछ, से हिनक विद्यार्थी-जीवनक चर्यासँ स्फुट प्रतीत होइत अछि।

कर्मवीरता:

जाधरि श्रीजगदीश प्रसाद मण्डलजीक परिवारमे हुनक दुनू पिसियौत भाय गोनर मण्डल ओ कारी मण्डल रहैत छलथिन ताधरि

हिनका पारिवारिक काज-धंधासँ स्वतंत्रता प्राप्त रहलनि। मुदा तत:पर हिनका महींस चरयबाक हेतु यदा-कदा जाय पड़ऽ लगलनि। परिवारमे काज कयनिहारक संख्या अकस्मात् घटि जयबाक कारणे हिनक मायकेँ सेहो बाध-बोनक काज देखबाक विवशता होमऽ लगलनि। कुलकुल मण्डल स्वयं तँ उच्च शिक्षा ग्रहण करबामे असमर्थ भेल छलाह, तेँ हुनक इच्छा होइनि जे श्रीजगदीश प्रसाद मण्डल सेहो आगूक पढ़ाइ छोड़ि पारिवारिक कृषि ओ पशुपालनमे सन्नद्ध भऽ जाथि। मुदा श्रीजगदीश प्रसाद मण्डल पढ़ाइ चालू रखने रहलाह जे कुलकुल मण्डलकेँ सोहाओन नहि बूझि पड़लनि। ओहो पारिवारिक काजसँ मुँह मोड़ि देलनि आ नाच-पार्टी ठाढ़ कऽ ताहीमे मगन रहऽ लगलाह। एहि तरहेँ श्रीजगदीश प्रसाद मण्डलक उच्चतर शिक्षामे बाधाक स्थिति तँ बनल, मुदा ई कर्मवीर अपन पथपर अटल रहलाह।

श्रीजगदीश प्रसाद मण्डलक जीवनमे विचलनक अवसर हुनक विवाहोक कारणे बनल। ताहि समयमे अत्यन्त बाल्यावस्थहिमे विवाह करयबाक परिपाटी छलैक। पिताक मृत्युक बाद जखन श्री मण्डलजी लगभग तीने वर्षक छलाह, तखने हिनक विवाहक वाक्-दान भऽ गेल छलनि आ सोलहम वर्षमे द्विरागमन सेहो भऽ गेल छलनि। उच्च शिक्षा प्राप्त करबाक दिस दृढ़ताक कारणे गृहकार्यसँ हिनक अन्यमनस्यता एवं दू-दू प्राणीक भरण-पोषणक संगहि शिक्षामे व्ययाधिक्यक कारणे पारिवारिक कलहक स्थिति बनल अवश्य मुदा अनुशासित पुतोहुक प्रति सासुक वात्सल्य एवं नेनाक शिक्षाक प्रति हुनक प्रगतिशील विचारक आगू ओ कलह श्रीजगदीश प्रसाद मण्डलजीक जीवन-गतिपर कोनो प्रतिकूल प्रभाव नहि प्रदान कऽ सकल आ पारिवारिक विघ्न-बाधासँ संघर्ष करैत ई आगू बढ़ैत चलि गेलाह।

नेतृत्व शक्ति:

श्रीजगदीश प्रसाद मण्डलजीमे नेनपनहिसँ अपूर्व नेतृत्व शक्ति

छलनि जे हुनक बाल ओ किशोरहि वयमे परिलक्षित होमऽ लागल छल। तथापि हुनक ई प्रवृत्ति जगजियार भेल 1967 इस्वीक आम चुनाओक समयमे। एही वर्ष ई कम्युनिस्ट पार्टीक सदस्यता ग्रहण कयलनि आ सक्रिय राजनीति दिस अभिमुख भेलाह। क्रमश: ई प्रसिद्ध साम्यवादी नेता भोगेन्द्रझाक दहिन बाँहिये बनि कऽ ठाढ़ भेलाह आ पार्टीक राजनीतिक अनुरूप धरना-प्रदर्शन कार्यक्रम सभमे भाग लैत शोषित-उत्पीड़ितक अधिकारक संरक्षण हेतु संघर्षमे जी-जाने अरोपि देलनि।

हिनक नेतृत्व क्षमताक पहिल परिणाम जे समाजक समक्ष आयल, से छल बेरमामे वर्गीय आधारपर पृथक् स्थानपर दुर्गापूजाक आरम्भ। पूर्वमे बेरमामे स्कूल प्रांगणमे सार्वजनिक दुर्गापूजा करबाक निर्णय भेल। बीचमे मात्र आठ दिन समय बाँचल छल। समय अयलापर व्यक्ति विशेष द्वारा दोसर ठाम आयोजन करबाक सूरसार भेल, जकरा देखि जगदीश प्रसाद मण्डलजी ग्रामीणक संग निर्णय भेल स्थानपर सेहो दुर्गापूजाक आयोजन केलनि। आ ओमहर, तत्कालीन प्रमुख, मधेपुर प्रखण्ड, जे पूजा समितिक अग्रेसर छलाह, समस्त समाजक निर्णयक विपरीत दोसर पूजा स्थलपर पूजाक आयोजन कयलनि। तेँ बेरमा गाममे दू ठाम दूर्गापूजाक आयोजन आइ धरि होइत आबि रहल अछि।

जखन श्रीजगदीश प्रसाद मण्डलजी एहि तथ्यसँ अवगत भेला तँ ई निर्णय हुनका समुचित नहि बुझि पड़लनि। परिणामत: लोकरुचिक आदर करैत श्रीजगदीश प्रसाद मण्डलजी पूर्वहिसँ निर्धारित स्थलपर पूजा करयबाक नेयार कयलनि। एहिमे हुनका पर्याप्त जन-समर्थन भेटलनि। सर्वहारा समाजक नेताक रूपमे हिनक ई प्रथम विजय छलनि। हिनक ई विजय हिनका सर्वहारा वर्गक नेताक रूपमे प्रतिष्ठापित कऽ देलकनि जकर अधिकारक संरक्षाक हेतु ई सदति संवेदनशील बनल रहल छथि। ई हिनके प्रयत्नक परिणाति छल जे दुर्गापूजामे कन्या पूजन ओ दीप दान पूजन पर्यन्त सभ जातिक हेतु खोलि देल गेल।

राजनीतिमे अयलाक बाद श्रीजगदीश प्रसाद मण्डलजी सामाजिक समन्वयक हेतु जाति प्रथापर कशाघात आरम्भ करऽ चाहैत छलाह। एहि हेतु विभिन्न जातिक लोकक बीच छूता-छूतक अन्ध परम्पराकेँ नष्ट करबाक हेतु तथा विभिन्न जातिक बीच परस्पर खान-पानक व्यवस्था करबाक हेतु ओ क्रमश: विभिन्न जातिक टोलपर जाय सभा करब आरम्भ कयलनि। एहि सभामे साम्यवादी दलक विभिन्न जातिक सदस्य उपस्थित भऽ ओहि टोलक समस्या ओ तकर समाधान पर विमर्श करैत छलाह। टोलबैया लोकनि आगत समस्त लोकक हेतु भोजनक व्यवस्था करैत छलाह आ सहभोज होइत छल। एहि तरहेँ विभिन्न जातिक बीच खान-पानक सहज सम्बन्ध होइत चल गेल आ छूता-छूतक भावनासँ ऊपर उठि कऽ लोक परस्पर समानताक सूत्रमे आबद्ध होइत गेलाह। श्रीमण्डलजीक ई अभियान हुनक समाज सुधारवादी प्रवृत्तिक द्योतन करैत अछि।

समाज सुधार:

श्रीजगदीश प्रसाद मण्डलजीक समाज सुधारवादी प्रवृत्ति कर्मकाण्डक बाह्याडम्बरपर सेहो प्रहार कयलक। हिनक प्रयाससँ मृतक संस्कारमे महापात्र ओ पुरोहितक वर्चस्वकेँ समाप्त कऽ एकटा नव पद्धतिक स्थापना कयल गेल। एहि पद्धतिमे मृतकक स्वजातीये पुरोहित ओ महापात्रक काज आडम्बररहित ढंगसँ सम्हारबाक हेतु प्रतिनियुक्त होमय लगलाह, केशकट्टीकेँ मृतकक दयादेक सीमा धरि सीमांकित कऽ देल गेल तथा मृतक भोजक नामपर ओकर कर्त्तापर दबाब बनयबाक पद्धतिक अन्त कऽ देल गेल।

ताहि समयमे स्थानीय स्तरपर कृषक ओ पशुपालक वर्गक शोषणक दूटा प्रमुख स्रोत छल- बटाइदारी ओ महाजनी प्रथा। अल्प खेतवला किसान बटाइपर खेती करैत छलाह जाहिमे उपजाक आधा भाग हुनका जमीनक मालिककेँ दऽ देबऽ पड़ैत छलनि। लग्गतिक अपेक्षा उपजाक परिमाण, रौदी-दाहीक प्रभाव आदिक कारणे बहुधा बटाइदारकेँ

ओकर लग्गतियो संयोगेसँ सुकालोमे उपलब्ध भऽ पबैत छलैक जकर परिणामस्वरूप अधिकांश फसिलक बटाइदारीमे ओकरा हानियेँ होइत छलैक। एकर परिणाम होइत छलैक जे ओ महाजनक चक्करमे पड़ि अपन सर्वस्व गमा कऽ कृषक मजदूर बनबाक हेतु बाध्य होइत छल। श्रीजगदीश प्रसाद मण्डलजी अपना गामक कृषक लोकनिकेँ महाजनक चक्रव्यूहसँ बचयबाक हेतु निरन्तर संघर्ष करैत रहलाह आ अन्ततः तत्कालीन जिलाधिकारी श्री नित्यानन्द सिंह स्वयं बेरमा आबि कृषक लोकनिकेँ स्वयं ऋणमुक्ति प्रमाण-पत्र प्रदान कऽ हुनका सभकेँ महाजनक चाङ्गुरसँ मुक्त करौलनि।

ततबे नहि, श्री मण्डलजी जन-जागरण द्वारा बटाइदार लोकनिकेँ ततेक सशक्त बना देलथिन जे अधिकांश जमीन्दार अपन जमीनक मालिकाना हक बटाइदारकेँ दऽ देबाक हेतु बाध्य भेलाह। शोषित-पीड़ित कृषक समुदायक प्रति हिनक ई अन्यतम अवदान रहलनि। हिनके प्रयाससँ बेरमामे हरिजन कॉलनीक निर्माण भऽ सकल जे मधुबनी जिलाक प्रायः प्रथमे हरिजन कॉलनी अछि।

एहि तरहेँ श्रीजगदीश प्रसाद मण्डलजी इलाका भरिक समस्याक समाधानमे जुटल रहैत टोल, गाम, ब्लॉक, जिला, राज्य ओ केन्द्रक स्तरपर सम्मेलन-प्रदर्शनमे लागल रहलाह। परिणामस्वरूप कृषक ओ मजदूरक जीवनमे अनेक सुधार सम्भव भऽ सकल आ शोषणक अन्त होइत चल गेल। इलाकाक नामी नेताक रूपमे ई प्रतिष्ठित भेलाह आ लोकजीवनमे व्याप्त विसंगति सभकेँ दूर करबाक हेतु विभिन्न प्रयत्नमे लागल रहलाह।

लोकजीवनक सुधारक हेतु व्रती एहि महानुभावकेँ विरोधी विचारधाराक लोक ओ सरकारक दमन चक्रक निरन्तर सामना करऽ पड़लनि। जहल-यात्रा हिनक जीवनक अभिन्न अंग बनि गेल छलनि तथा शताधिक आपराधिक मामिलामे सेहो ई फँसैत चल गेलाह। अन्ततः जखन ई अनुभव कयलनि जे छल-प्रपंचमय राजनीतिमे वास्तविक

लोकनायक प्रताड़ित होइत चल जाइत छथि आ भ्रष्ट राजनेता ओ हुनक लगुआ-भगुआ राज करबामे सक्षम होइत छथि तँ जेना हिनका दिव्य ज्ञान भेलनि। एहि समय धरि आयुक दृष्टिएँ सेहो ई प्रौढ़त्व प्राप्त कऽ चुकल रहथि। परिणामत: ई अपना ऊपर लम्बित मामिला सभकेँ समेटब शुरुह कयलनि। अन्तत: 5 मई 2005 केँ समस्त मामिलासँ विमुक्त भऽ सकलाह। तत:पर ई अपन जीवनक मार्गे बदलि ललेनि आ साहित्यक माध्यमे जनहितक सृजन दिस अग्रसर भेलाह। एकर माध्यम ई बनौलनि मातृभाषा मैथिलीकेँ। तहियासँ मैथिलीक विविध विधामे रचना द्वारा लोकशिक्षण हिनक जीवनक उद्देश्ये बनल रहलनि अछि।

आजीविका:

श्रीजगदीश प्रसाद मण्डलजी राजनीतिमे अवश्य लागल रहैत छलाह मुदा आरम्भहिसँ ई एकटा सम्भ्रान्त कृषक-जीवनक प्रति प्रतिबद्ध छलाह।कृषक जीवनमे हिनक प्रवेश 1960 इस्वीसँ आरम्भ भेल आ तहियासँ अद्यपर्यन्त ई अपन आजीविकाक एहि साधनक प्रति पूर्ण मनोयोग दैत आबि रहल छथि। प्रारम्भेसँ ई नहि केवल धान, गहूम आदि पारम्परिक फसिलक खेतीमे रुचि लैत रहल छथि अपितु नूतन तकनीकक प्रयोग द्वारा अपन क्षेत्रमे आलू, मिरचाइ, भाँटा, कोबी आदि नगदी फसिलक संगहि विभिन्न प्रकारक फल-फलहरीक उत्पादनमे क्रान्तिक सर्जकक रूपमे प्रतिष्ठा प्राप्त कयलनि अछि। उन्नत कृषिक गूढ़ रहस्य सभकेँ आत्मसात कऽ तकर व्यावहारिक उपयोगक हेतु ई पूसा जाय कृषि-विषयक प्रशिक्षण लेल करथि, खेती-बाड़ीसँ सम्बद्ध पोथी कीनि तदनुरूप प्रयोग कयल करथि। परिणामत: ई कृषि-कर्मकेँ लाभकर व्यवसायक प्रतिष्ठा दिऔलनि तथा खेतीहर-कृषक लोकनिकेँ सेहो उन्नत कृषि औजारक प्रयोग ओ सामुदायिक आधारपर सिंचाइ साधनक उपयोग करबाक हेतु प्रशिक्षित करैत रहलाह। स्वभावत: हिनक प्रतिष्ठा उत्तम कृषकक रूपमे तँ छन्हिएँ, कृषि-व्यवसायक मार्गदर्शकक रूपमे सेहो ई

पर्याप्त यशस्विता प्राप्त कयने छथि। कृषिक सहयोगी व्यवसाय पशुपालन हिनका प्रिय रहलनि अछि। अपन क्षेत्रमे देसी गायक नस्ल-परिवर्तन करयबाक दिशामे हिनक अवदान सेहो उल्लेखनीय अछि।

मैथिली आन्दोलनमे सहभागिता:

पूर्वहि कहल जा चुकल अछि जे श्रीमण्डलजी मिथिलाक प्रसिद्ध साम्यवादी नेता भोगेन्द्रझाक अनुयायी छलाह। मिथिलाक मातृभाषा मैथिलीक प्रति भोगेन्द्र झाकेँ आत्यन्तिक स्नेह छलनि आ एहि भाषाक अधिकारक संरक्षणक हेतु ओ प्रतिबद्धता पूर्वक नेतृत्व करैत रहल छलाह। मिथिलामे एकमात्र साम्यवादी पार्टी अपन क्रियाकलापमे मैथिलीक उपयोगक पक्षधर छल। एकर नेता लोकनि नहि केवल संभाषण-प्रवचन ओ बैनर-पोस्टरहिमे मैथिलीकेँ प्रश्रय दैत छलाह अपितु एकर विकासक मार्ग प्रशस्त करबाक हेतु विभिन्न प्रकारक आन्दोलन सेहो करैत रहैत छलाह। मैथिली भाषाकेँ सरकारी मान्यता प्रदान करयबाक हेतु श्रीजगदीश प्रसाद मण्डलजी भोगेन्द्र झाक संग पुरैत रहलाह आ एहि कारणे सेहो हिनका दर्जनो बेर जहल-यात्रा करऽ पड़लनि। मैथिलीक हेतु हिनक ई त्याग मैथिली आन्दोलनक इतिहासक विशिष्ट घटनाक रूपमे स्मर्त्तव्य अछि।

अटनशील जीवन:

कृषि कर्म एवं कम्यूनिस्ट पार्टीक विभिन्न आन्दोलनी गतिविधिमे संलग्न श्रीमण्डलजी निरन्तर पार्टीक सम्मेलन सभमे भाग लैत रहल छलाह। एहि क्रममे हिनका देशक विभिन्न भाग यथा त्रिपुरा, राजस्थान, आसाम, हैदराबाद आदि स्थलक भ्रमण करबाक अवसर भेटैत रहलनि। ई जाहि प्रदेशमे जाथि, ताहि ठामक कृषक जीवनसँ परिचित होयबाक प्रयास करथि आ तदनुरूप अपना क्षेत्रमे कृषिक समस्या सभसँ निदानक हेतु प्रयोग कयल करथि। अटनशील जीवन रहबाक कारणे हिनक ज्ञानक

क्षेत्र विस्तृत होइत गेलनि जकर उपयोग कऽ ई अपना क्षेत्रमे उन्नत कृषि-व्यवस्थाक सूत्रपात ओ प्रचार-प्रसारमे संलग्न रहैत छथि।

प्रगतिशील लेखक संघक सान्निध्य:

श्रीमण्डलजी अखिल भारतीय प्रगतिशील लेखक संघक कार्यक्रम सभमे भाग लैत रहैत छलाह। एक बेर ई एहि संघक सम्मेलनमे हैदराबाद गेल छलाह। ताहि समयमे अखिल भारतीय प्रगतिशील लेखक संघक सचिव छलाह रमेश चन्द्रा। ई विद्वान वक्ता ओ क्रान्तिकारी लेखक छलाह। हैदराबादक सम्मेलन प्रेमचन्द साहित्यपर केन्द्रित छल। एहिमे विद्वान लोकनि प्रेमचन्दक साहित्यपर विशद विवेचन प्रस्तुत कऽ हुनका एकमतसँ प्रगतिवादी विचारधाराक लेखक सावित कयने छलाह। मण्डलजी एहि विचारधाराक सूक्ष्म तत्त्वसँ अवगत भऽ अपन मातृभाषाक माध्यमे मिथिलाक कृषक जीवनक अनुभूत तथ्य सभक आधारपर यथार्थवादी-प्रगतिवादी रचना दिस उन्मुख छथि, तकर एकटा विशिष्ट प्रेरक तत्त्व हिनक प्रगतिशील लेखक संघक सान्निध्यकेँ मानल जा सकैछ। वर्तमानमे ई मधुबनी जिलाक प्रगतिशील लेखक संघक उपाध्यक्षोक पदकेँ सुशोभित कयने छथि।

श्रीमण्डलजी आशुलेखक छथि। यद्यपि ई रचना कर्ममे दू हजार इस्वीक पछाति प्रवेश कयलनि मुदा तहियासँ अनवरत लेखनमे प्रवृत्त छथि। हिनक प्रथम रचना थिकनि 'गामक जिनगी' कथा संग्रह। तत:पर ई कथा, कविता, नाटक, निबन्ध-प्रबन्ध ओ उपन्यासक क्षेत्रमे रचना कऽ बहुआयामी लेखकक रूपमे प्रसिद्ध छथि। कथा ओ उपन्यास हिनक प्रिय विधा रहलनि अछि। कोनो अनुभूत परिदृश्यकेँ तत्काल कलमबद्ध कऽ लेबामे हिनका निपुणता प्राप्त छनि। लेखन-कर्म हिनक दैनन्दिनीक अभिन्न अंग बनल रहलनि अछि। स्वभावत: खास कऽ परिमाणात्मक लेखनक दृष्टिऍ ई आधुनिक मैथिली रचनाकार लोकनिक मध्य शीर्षपर छथि।

पुरस्कार ओ सम्मानः

पुरस्कार ओ सम्मान श्रीमण्डलजीक अनुगामी रहलनि अछि। प्रथमतः 2011 मे हिनका चौबीस गोट राष्ट्रीय मान्यताप्राप्त भाषाक बीच केन्द्रीय स्तरक टैगोर लिटरेचर एवार्ड प्राप्त भेलनि। अखिल भारतीय स्तरक साहित्य अकादेमी पुरस्कारसँ ई 2021 मे समलंकृत भेल छथि। तदतिरिक्त हिनका विभिन्न संस्था सभसँ अनेको पुरस्कार ओ सम्मान भेटल छनि जे हिनक लेखकीय व्यक्तित्वक लोकप्रियता ओ गरिमाक परिचायक थिकनि। उल्लेख्य अन्य पुरस्कार सभ अछि-

01. विदेह सम्मान- 2011
02. वैदेह सम्मान- 2012
03. कौशिकी साहित्य सम्मान- 2015
04. वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री' सम्मान- 2016
05. कौमुदी सम्मान- 2017
06. यात्री चेतना पुरस्कार- 2017
07. स्व. बाबू साहेव चौधरी सम्मान-2018
08. राजकमल चौधरी साहित्य सम्मान- 2020
09. अमर शहीद रामफल मंडल राष्ट्रीय पुरस्कार-2022
10. यात्री सम्मान- 2022
11. शिखर सम्मान- 2022
12. महाकवि पण्डित लालदास साहित्य गौरव सम्मान- 2023

भाषा ओ वर्तनीः

श्रीमण्डलजी साहित्यिक भाषा सरल, सहज ओ बोधगम्य होइत छनि। ई लोकजगतमे प्रचलित भाषाक प्रयोग करैत छथि जाहिमे कतहु

कृत्रिमताक निदर्शन नहि भेटैत अछि। हिनक शैली विवरणात्मक होइत छनि। सूक्ष्म विवेचनपूर्वक सरल शब्दावली द्वारा वस्तुकेँ उपस्थापित करबाक हिनक रचना-शैलीमे मिथिलाक माटि-पानिक सौरभ ओ बोली-वाणीक सौन्दर्य प्रस्फुटित होइत चलैत अछि। एकटा निविष्ट कथावाचक जकाँ ई अपन रचनामे स्वयं विद्यमान रहिते छथि आ कथासूत्रकेँ आगू बढ़बैत चलैत छथि। ग्राम जीवनक यथार्थकेँ रूपायित करबाक हेतु ई ओकर परिवेशक यथावत् चित्र प्रस्तुत करबामे दक्ष छथि। पात्र सभक नामकरण सेहो ई ओकर शिक्षा-दीक्षा, सामाजिक-आर्थिक स्थितिक अनुरूपे करैत देखि पड़ैत छथि। एहन ठाम हिनक नामकरणोमे यथार्थताक बोध होइत अछि आ ग्रामीण पात्रक विशिष्ट व्यक्तित्व स्वतः उद्भासित होइत चलैत अछि। वर्णनकर्त्ताक रूपमे ई बहुधा एहन भाषाक प्रयोग करैत छथि जाहिमे अभिधा शक्तिक प्रधानता रहैत छनि। उपमामूलक अलंकारक प्रयोग कऽ ई बहुधा अपन भाषामे सर्जनात्मकताक सृष्टि करैत देखि पड़ैत छथि।

वर्तनीक प्रयोगमे हिनका यात्रीजी ओ किरणजीक अनुगामी कहल जा सकैत छनि। ई 'जेना बाजी तेना लिखी'केँ अपन वर्तनीक आधार बनौने देखि पड़ैत छथि। एक दिस हिनक भाषामे पड़ैए, ओइ, बुझितैथ, छेलैहे, एहेन सदृश प्रयोग अछि तँ दोसर दिस 'अछि' सेहो अपवारित नहि अछि।

पारिवारिक समुन्नतिः

श्रीमण्डलजीकेँ केवल तीन पुत्र सन्तति थिकथिन। ज्येष्ठ पुत्र श्री सुरेश मण्डल कृषि व्यवसायसँ सम्बद्ध छथिन। हिनक पुत्र अखिलेश मण्डल संस्कारी छात्र छथिन आ एही अवस्थामे मैथिली कथा लेखनमे प्रवृत्त छथि।

श्रीमण्डलजीक दोसर पुत्र डॉ. श्री उमेश मण्डल मैथिली विषयसँ एम.ए., पी.एच-डी. स्तर धरि शिक्षा प्राप्त कऽ सम्प्रति मुद्रण व्यवसाय ओ

स्वास्थ्य सेवामे संलग्न छथि। लघुकथा ओ विश्लेषणात्मक निबन्ध लेखनमे यशस्वी एहि युवा लेखकक एकटा कविता संग्रह, एकटा कथा संग्रह प्रकाशित छनि तथा ई दू दर्जनसँ अधिके पोथीक सम्पादन-प्रकाशन कयने छथि।

डॉ. श्री उमेश मण्डलकेँ दुइ गोट पुत्री क्रमश: पल्लवी ओ तुलसी तथा एक गोट पुत्र श्री मानव अनीश छथिन। सुश्री पल्लवी मैथिलीसँ स्नातक (प्रतिष्ठा)क अध्ययन कऽ रहल छथि आ मैथिली ओ हिंदी काव्य-सृजनमे सेहो प्रवृत्त छथि। हिनक एक गोट कविताक पोथी प्रकाशित छनि, 'ढाई आखर प्रेम का'। विद्वत्वर्ग द्वारा एकर सराहना कयल गेल अछि। मैथिलीक ई भविष्णु कवयित्री ओ साहित्यिक होयतीह, से शुभकामना अछि।

श्रीमण्डलजीक तेसर पुत्र श्री मिथिलेश मण्डल पिताक संग गाममे खेती-बाड़ीक कार्यक संग सम्प्रति दवाइ दोकान खोलि जीविकोपार्जनमे संलग्न छथि।

एतावता श्रीमण्डलजीक परिवार शिक्षा ओ समृद्धिक मार्गपर अग्रसर छनि। उक्ति प्रसिद्ध अछि- 'स जातो येन जातेन याति वंशसमुन्नतिम्', से एहि वरिष्ठ समाजसेवी ओ मैथिलीक निविष्ट साहित्यकारक हेतु सर्वथा सार्थक सिद्ध अछि।

प्रस्तुत पोथी मैथिलीक वरदपुत्र श्री जगदीश प्रसाद मण्डलजीक किछु कृतिक पठनोपरान्त संक्षिप्त समीक्षात्मक निबन्ध सभक संकलन थिक जकरा हुनक विशाल कृति समुच्चयक किछु बानगीक समीक्षात्मक निदर्शन कहल जा सकैछ। एहिसँ जँ एहि विश्रुत साधकक आभा-मण्डलक किञ्चितो परिचय मैथिली अनुरागी लोकनिकेँ भेटि सकतनि तँ हम अपनाकेँ कृतार्थ बुझब।

धन्यवादक पात्र थिकाह डॉ. श्री उमेश मण्डल एवं पल्लवी

प्रकाशनक नियन्ता लोकनि जे एहि विकीर्ण निबन्ध सभकेँ एकत्र कऽ प्रकाशनक उत्साह दर्शौलनि। कृतज्ञ छियनि विदेह प्रकाशन ओ पल्लवी प्रकाशनक अधिष्ठाता लोकनिक जे मैथिली विभूति श्री जगदीश प्रसाद मण्डलजीक पोथी सभ यथासमय उपलब्ध करबैत रहलाह आ हमरा पाठकीय प्रतिक्रियाक हेतु प्रोत्साहित करैत रहलाह।

त्रुटि-भ्रमक हेतु सहृदयक प्रति क्षमायाचनाटा अवलम्ब।

- योगानन्द झा

कबिलपुर, लहेरियासराय

दरभंगा- 846001 (बिहार)

मो.: +91 93344 93330

आस्था, जिजीविषा ओ संघर्षक प्रवाह 'गामक जिनगी'

श्रीजगदीश प्रसाद मण्डल कृत "गामक जिनगी" हिनक उन्नैस गोट कथाक संग्रह थिक। एहि कथा सभमे मिथिलाक ग्राम्य जीवनक मौलिक ओ अकृत्रिम छवि अभिव्यक्त भेल अछि। आजुक संक्रमणशील युगमे मिथिलाक गाम कोन तरहेँ अपन परम्परित जीवन पद्धति, आस्था ओ विश्वासक संग प्रबल जिजीविषाक बलेँ निरन्तर संघर्ष पथपर आरूढ़ अछि, तकरा एहि संग्रहमे रूपायित कएल गेल अछि।

संग्रहक तीन गोट कथा क्रमश: 'भैँटक लावा', 'बिसाँढ़' ओ 'पीराड़क फड़' मिथिलामे उपलब्ध प्राकृतिक उपादानक उपयोगितापर विमर्श प्रस्तुत करैत अछि। बाढ़ि आ सुखारसँ पीड़ित मिथिलाक जनसमुदाय अपन जीवन रक्षाक हेतु कोन तरहेँ भैँट, विसाँढ़, पीराड़ आदिकेँ अपन मेहनतिक बलेँ खाद्य पदार्थक रूपमे ग्रहण करैत रहल अछि तथा एहि ठामक प्राकृतिक संसाधनक उपयोग द्वारा कोना मिथिलाक भूखमरी ओ बेरोजगारीकेँ दूर कएल जा सकैछ, एकर आर्थिक विकास कएल जा सकैछ, तकर चित्र एहि तीनू कथामे भेटैत अछि। श्रमपर विश्वास, इमानदार प्रयास, कर्मण्यता ओ चातुर्यक संबलसँ विपन्नतापर विजयक ई गाथा सभ मिथिलाक लोकजीवनमे व्याप्त उत्साह ओ संघर्षक मर्मस्पर्शी चित्र प्रस्तुत करैत अछि।

संग्रहक अन्यान्य कथा सभमे विभिन्न प्रकारक समस्या सभपर विमर्श प्रस्तुत भेल अछि आ एक गोट आदर्श ग्राम्य समाजक परिकल्पना प्रस्तुत भेल अछि। दहेजक सामाजिक समस्याक

उन्मूलनक दृष्टियेँ 'घरदेखिया' कथा अत्यन्त हृदयस्पर्शी अछि। मिथिलाक उच्चवर्गीय समाजमे धनलोलुपताक कारणेँ उत्पन्न एहि समस्याक कुफल नारी प्रताड़नाक अतिरेकक रूपमे अत्यन्त गर्हित स्थिति प्राप्त कयने अछि जकर कारणेँ कन्याक विवाह एकटा पैघ समस्या बनल रहल अछि आ एकर कोनो ठोस समाधान अद्यावधि समक्ष नहि आबि सकल अछि। मण्डलजी एहि समस्याक समाधान लोकजीवनक वैचारिक परिवर्त्तनकेँ मानैत छथि आ सर्वहारा वर्गक अतिशय दीन पात्र लुखियासँ कहबैत छथि- "नै। हम ककरो बेटीकेँ पाइ लऽ कऽ अपना घर नै आनब।" लुखियाक एही वाक्यमे दहेज समस्याक प्रति समाधानक दिशा-बोध होइत अछि।

आजुक युग तकनीकक युग थिकैक। नित्य नूतन तकनीकक विकासक कारणेँ जे केओ अपन तकनीकी ज्ञानमे अद्यतन बनल नहि रहि सकत, ओ जीवन-संघर्षमे पाछाँ धकेलि देल जाएत। एहि तथ्यसँ अवगत करयबाक उद्देश्य मण्डलजीक दुइ गोट कथा- 'दूटा पाइ' आ 'हारि-जीत'मे अभिव्यक्त भेल अछि। 'दूटा पाइ'क फेकुआ नूतन फैशनक अनुरूप सिआइक काज सिखबामे असमर्थ रहैत अछि, तेँ ओकरा शहरो छोड़ए पड़ैत छैक आ जीविकासँ हाथो धो लैत अछि, जखन कि 'हारि-जीत' कथाक रामदत्त कुम्हार व्यवसायमे होइत नित्य परिवर्त्तनक अनुरूप अपन व्यवसायोमे परिवर्त्तन कऽ मूर्त्तिकार बनि जीविकोपार्जनमे समर्थ बनल रहि पबैत अछि। ओकरा जीविकापर एहि परिवर्त्तनक कोनो असरि नहि पड़ि पबैत छैक। घरैया बासनमे माटिक बदला धातुक प्रयोग होमए लगैत छैक आ खपराक घरक स्थान एस्बेस्टस शीटक मकान लऽ लैत छैक। एहि तरहेँ ई दुनू कथा युग-परिवर्त्तनक संग चलबाक शिक्षा प्रदान करैत अछि।

उपयोगितापर आधारित व्यवहारपरक एहि युगमे लोक स्वार्थ मात्र दिस ततेक झुकि गेल अछि जे वृद्ध माता-पिताक प्रति कुभेला

एकटा सामान्य बात भऽ गेल छैक। आइ 'मातृ देवो भव', 'पितृ देवो भव', लोक संस्कारसँ विलुप्त भेल जा रहल छैक। श्रवण कुमारक आदर्शसँ लोक बान्हल नहि रहि सकल अछि। जाहि भारतमे कृतज्ञता वशात् लोक गाछ पर्यन्तक पूजक अछि, ततहि पालि-पोसि, पढ़ा-लिखा कऽ समर्थ बनौनिहार माता-पितोक प्रति कृतज्ञ रहबामे संकोच भऽ रहल छैक। समाजमे आएल एहि परिवर्त्तनकेँ रेखांकित कऽ मण्डलजी दू गोट कथामे एहिपर विमर्श प्रस्तुत कएलनि अछि जकर नाम अछि क्रमश: 'भैयारी' आ 'बहिन'। 'भैयारी'क कुसुमलाल अपन जेठ भाय दीनानाथक परिश्रमक बलपर उपार्जित पाइसँ जखन पढ़ि-लिखि कऽ नोकरी करऽ लगैत अछि तँ गामक अपन हिस्साक सम्पत्ति बेचि शहरी जीवन व्यतीत करऽ लगैत अछि। ओकरा अपन लकवाग्रस्त पिता आ वृद्धा माताक कोनो ध्यान नहि रहैत छैक। तेँ जखन ओ दारूक सेवनक कारणेँ असमय कालकवलित होएबापर वृत्त भऽ जाइत अछि आ मायकेँ ई समाद भेटैत छनि जे ओ ओकर अन्तिम दर्शन कऽ लेथि तँ मायक एहि उक्तिमे वृद्ध माता-पिताक वैकल्य अभिशापक रूपमे प्रकट होइत अछि- "कुसुमा हमर बेटा थोड़े छी जे मुँह देखबै। उ तँ ओही दिन मरि गेल जइ दिन हमरा दुनू परानीकेँ छोड़ि चलि गेल। आइ बीस बर्खसँ अइ हाथ-पाएरक बलेँ बीमार पतिकेँ जीवित राखि अपन चूड़ी आ सिनूरक मान रखने छी।"

'बहिन' कथामे सरोजनी नामक वृद्धाक कथा अछि जनिक मृत्युक अवसरपर बजौलो उत्तर हुनक पुत्री रीता हुनक अन्तिम दर्शनक हेतु नहि अबैत छथि आ व्यस्त होएबाक लाथ लगा दैत छथि जखन कि परजातिक मुसलमानि बहिना शबाना हुनका देखबाक हेतु अबैत छथिन। राधेश्यामक एहि चिन्तनमे सम्बन्ध-बन्धक वास्तविकताकेँ उद्घाटित करैत कहल गेल अछि- "दुनियाँमे बहिनिक कमी नहि अछि। लोक अनेरे अप्पन आ बीरान बुझैत अछि। ई सभ

मनक खेल थिक। हँसी-खुशीसँ जीवन बितबैमे जे संग रहए वएह अप्पन।” माता-पिताक प्रति धियापुताक कुभेलाक संगहि एहि कथामे मानवतावादक प्रतिपादन मण्डलजीक लक्ष्य बुझना जाइत छनि।

उच्च शिक्षा प्राप्त वर्गमे सम्प्रति विदेश गमनक लिलसा प्रबल देखल जाइत छनि। एहि प्रवृत्तिक कारणेँ ओ लोकनि स्वदेश सेवासँ तँ वंचित रहिये जाइत छथि, अपनो जीवनक परिवेश संकुचित बना लैत छथि। ‘पछतावा’ कथा शिक्षित वर्गक एही अध:पतनक कथा थिक। एकर प्रमुख पात्र रघुनाथक एहि पश्चात्तापपूर्ण उक्तिमे एहन लोकक मानसिकताक अभिव्यक्ति कएल गेल अछि- “हमरासँ सइओ गुना ओ नीक छथि जे अपना माथपर पानिक घैल उठा मातृभूमिक फुलवारीक फूलक गाछ सीचि रहल छथि। अपन माए-बाप, समाजक संग जिनगी बिता रहल छथि। जिनगीक अन्तिम पड़ावमे पहुँचि आइ बुझि रहल छी जे ने हमरा अपन परिवार चिन्हैक बुद्धि भेल आ ने गाम-समाजक।”

एही तरहेँ ‘बोनिहारिन मरनी’मे सर्वहाराक प्रति करुणा, ‘ठेलाबला’मे सर्वहाराक संघर्ष, ‘जीविका’मे जनवितरण प्रणालीमे व्याप्त भ्रष्टाचार, ‘रिक्शाबला’मे सर्वहाराक उन्मुक्त जीवन आ सम्पत्तिशाली वर्गक नारीक कुंठा, ‘चूनवाली’मे सर्वहारावर्गक स्नेह-सम्बन्ध आदिकेँ आधार बना कऽ कथा गढ़ल गेल अछि जे अत्यन्त रोचक भेल अछि। ‘अनेरुआ बेटा’ लोकजगतमे शिक्षाक आवश्यकतापर बल दैत अछि तँ ‘डाक्टर हेमन्त’ सुदूर देहातमे स्वास्थ्य सुविधाक व्यवस्थाकेँ रेखांकित करैत अछि। ‘बाबी’ कथाक माध्यमे मण्डलजी हिन्दू-मुस्लिम एकताकेँ छठि पाबनिक आधारपर दृढ़ता प्रदान करबाक राष्ट्रीय दायित्वक प्रति सतर्कता दर्शौलनि अछि। ‘डीहक बँटबारा’ भ्रष्टाचार पूर्वक धन अर्जन कएनिहार समाजक अधोगतिक चित्रांकन करैछ।

मण्डलजीक अधिकांश कथा वर्णनात्मक शैलीमे लिखल गेल अछि। एहि शैलीक कारणें हिनक कथा सभमे औपन्यासिक आनन्द भेटैत अछि। मुदा एके कथामे अनेक उपकथा सभक सम्मिश्रणक कारणें बहुधा लघुकथाक क्षिप्रता ओ सघनता बाधित देखि पड़ैत अछि। हिनक वर्णनमे अवश्ये चारुताक दर्शन होइत अछि आ पाठकक समक्ष समग्र चित्र रूपायित भऽ जाइत अछि यथा- "पछिला चारि सालक रौदी भेने गामक सुरखिये बेदरंग भऽ गेल। जे गाम हरियर-हरियर गाछ-बिरीछ, अन्नसँ लहलहाइत खेत, पानिसँ भरल इनार-पोखरि, सैकड़ो रंगक चिड़ै-चुनमुनी, हजारो रंगक कीट-पतंगसँ लऽ कऽ गाए, महींस आ बकरीसँ भरल रहैत छल, से मरणासन्न भऽ गेल। सुन्न-मसान जेकाँ। वीरान। सबहक मनमे एक्केटा विचार अबैत जे आब ई गाम नै रहत। जँ रहबो करत तँ माटियेटा। किएक तँ जाहि गाममे खाइक लेल अन्न नहि उपजत, पीबैक लेल पानि नहि रहत, ताहि गामक लोक की हवा पीबि कऽ रहत।" इत्यादि।

मण्डलजीक हृदयमे ग्राम्य जीवनक प्रति अगाध निष्ठा छनि आ मिथिला ओ भारतक आदर्श ग्रामक परिकल्पना छनि। तेँ ओ ओहि सभटा परिस्थिति दिस नजरि खिरबैत देखि पड़ैत छथि जे ग्राम्य जीवनक सौन्दर्यक हेतु बाधक बनल अछि। एकटा पात्रक माध्यमे ओ कहैत छथि- "गाममे ने पानि पीबैक ओरियान छै, ने खाइक लेल सभकेँ सन्तुलित भोजन भेटै छै, ने भरि देह कपड़ा भेटै छै, ने रहैक लेल घर छै, ओहि देशकेँ मरल नै कहबै तँ की कहबै। एखनो लोक सड़ल पानि पीबैत अछि, कहुना कऽ किछु खा दिन कटैत अछि, गाछक निच्चाँमे आगि तापि समय बितबैत अछि, हजारो रंगक रोग-व्याधिसँ घेरल अछि, ओहि देशकेँ की कहबै? हजारो वर्षक मनुक्खक इतिहासमे एखनो धरि सरस्वतीक आगमन सभ मनुक्ख धरि नै भेल अछि, ओहि देशकेँ की कहबै? आदि।" अवश्ये हुनक आदर्श गामक

परिकल्पना सर्वथा सुविधासम्पन्न, आर्थिक रूपेँ सबल आ सुशिक्षित गामक छनि जकर चर्चा बेर-बेर हुनक कथा सभमे अनायास आयल अछि।"

अपन कथा सभमे मण्डलजी कतहु कृत्रिमताक प्रवेश नहि होमऽ देलनि अछि। स्वभावत: हिनक भाषा, संवाद, वर्णन, वस्तु, चरित्र आदि समस्त उपादानमे सहजताक दर्शन होइत अछि। हिनक अधिकांश कथा ग्राम्य जीवनसँ सम्बद्ध अछि, तेँ ई पात्रक नामावली सेहो ओही जीवनसँ लेने छथि यथा- फुलिया, दुखनी, बेचन, सुगिया, धनिया, पिचकुन, पिहुआ, भुलिया, फेकुआ, लुखिया, सोमन, मरनी, रघुनी, बुचाइ, बचनू आदि, मुदा जखन ई नागर पात्रकेँ अपन कथामे प्रवेश दैत छथि तँ वर्गीय नामोक प्रयोग करैत छथि यथा- मुकुन्द, शिवनाथ, रुक्मिणी, शोभाकान्त, रागिनी, सुनयना आदि। पात्रक रेखाचित्र पाठकक मानसमे उतारि देबाक हिनक क्षमता मरनीक एहि स्वरूप-वर्णनमे अत्यन्त उत्कृष्ट देखि पड़ैछ- "कारी झामर एकहड्डा देह, ताड़-खजूरपर बनाओल चिड़ैक खोंता जेकाँ केश, आंगुर भरि-भरिक पीअर दाँत, फुटल घैलिक कनखा जेकाँ नाक, गाइयक आँखि जेकाँ बड़का-बड़का आँखि, साइयो चेफड़ी लागल साड़ी, दुरगमनियाँ आँगी फटलाक बाद कहियो देहमे आंगीक नसीब नहि भेल, बिना साया-डेढ़ियाक साड़ी पहिरने। इएह छी मरनी।" मात्र ई वर्णन मरनीक प्रति करुणा उत्पन्न करबामे सक्षम सिद्ध अछि।

ग्राम्य जीवनक वर्णन करैत काल ओकर श्याम पक्षकेँ सेहो मण्डलजी यथावत् राखि कथाक सहजताकेँ अक्षुण्ण रखलनि अछि। ग्राम्य जीवनमे ताड़ी-दारू, गाँजा-भांग, बीड़ी-सलाइ आदिक प्रयोगकेँ ई विभिन्न कथामे सहजताक सृजनक हेतु प्रयुक्त कएलनि अछि।

आस्था आ विश्वास ग्राम्य जीवनक अंग थिक। मण्डलजीक कथा सभमे अनेक ठाम लोकजीवनक जीवन्त आस्थाक चित्रण भेल

अछि यथा- “इन्द्र भगवानकेँ कोनो चीजक दुख भऽ गेल हेतनि। तेँ हुनका बौंसब जरूरी अछि।” इएह सोचि कियो भूखल-दुखलकेँ अन्नदान तँ कियो कीर्तन-अष्टयाम-नवाह, तँ कियो यज्ञ-जप, चंडी, विष्णु तँ कियो महादेव पूजा, लिंग इत्यादि अनेको रंगक बौस’क ओरियान शुरू केलक। जनीजाति सभ कमला-कोशीकेँ छागर-पाठी कबुला सेहो करय लगलीह। इत्यादि। ग्राम्य जीवन लाख अभाव-अभियोगक अछैतो जाहि उत्साह ओ उमंगकेँ अङेजने रहैत अछि, से एकर अपार जिजीविषाक प्रतीक थिक। मण्डलजीक कथा सभमे पात्रक चरित्रमे कुंठा ओ संत्रास पर जिजीविषाक विजय देखाओल गेल अछि जाहिसँ हिनक कथा सभ नव आशाक संचार कऽ लोकजीवनक सोनहुल भविष्यक प्रति आश्वस्त करैत अछि। द्रष्टव्य अछि किछु पाँती- “अपन धन हएत, तइपर सँ मेहनत करब तँ कोन दरिदराहा दुख आबि कऽ हम्मर सुख छीनि लेत।”

- “एक्केटा बाढ़िमे एत्ते चिन्ता करै छथि काका, कनी नीक की कनी अधलाह, दिन तँ बितबे करतनि।”

- “जकरा खाइ-पीबैक ओरियान बुझल छैक ओ कथीक चिन्ता करत।” इत्यादि।

एतावता मण्डलजीक ‘गामक जिनगी’ कथा संग्रहमे ग्राम्य शब्दावलीक माध्यमे ग्राम्य जीवनक सौन्दर्य ओ समस्या तथा तकरा सबहक विवेकपूर्ण निदान दिस इंगित करबाक प्रयास भेल अछि जे मैथिली कथा विधामे अन्यतम योगदानक रूपमे चर्चित-अर्चित होएबाक सामर्थ्य रखैत अछि। ❑

आदर्शक उपस्थापन: ‘मौलाएल गाछक फूल’

श्रीजगदीश प्रसाद मण्डल बहुआयामी रचनाकार छथि। कथा, उपन्यास, नाटक आदि विभिन्न विधामे प्रभूत रचना द्वारा ई आधुनिक मैथिली साहित्यमे बेछप स्थान बना चुकल छथि। ‘मौलाएल गाछक फूल’ हिनक औपन्यासिक कृति थिकनि। आदर्शवादी विचारधारासँ ओतप्रोत हिनक एहि उपन्यासमे मण्डलजीक उदात्त सामाजिक चिन्तनक प्रक्षेपण भेल अछि।

एहि उपन्यासक अधिकांश चरित्र उदार ओ सज्जन प्रकृतिक छथि। हुनका लोकनिक हृदय पवित्र छनि आ स्वार्थ ओ वासनासँ फराक रहि समाज उत्थानक हेतु चिन्तन करैत देखि पड़ैत छथि। स्वभावत: एहन चरित्र सबहक अनुगुम्फनसँ ई उपन्यास एक गोट परिष्कृत सामाजिक चिन्तनक मार्ग प्रशस्त करैत देखि पड़ैत अछि।

एहि उपन्यासक केन्द्रीय पात्र छथि रमाकान्त। उपन्यासक अधिकांश घटना हिनके परित: आघूर्णित होइत अछि। ई जमीन्दार छथि आ सुभ्यस्त सेहो। उदार विचार, इमानमे गंभीरता, मनुक्खक प्रति सिनेह हिनक चारित्रिक विशिष्टता छनि। हिनकामे ने सूदिखोर महाजनक चालि छनि ने धन जमा कएनिहार लोकक अमानवीय व्यवहारे छनि। नीक समाजमे जेना धनकेँ जिनगी नहि अपितु जिनगीक साधन बुझल जाइत अछि, सएह रमाकान्तोक परिवारमे छनि। उपन्यासक आरम्भहिमे हिनक उदात्त चरित्रक परिचय भेटि जाइत अछि। गाममे अकाल पड़ि जाइत छैक आ लोक सभ अन्न बेत्रेक मरब शुरू कऽ दैत अछि। मुदा रमाकान्त लग बखारीक बखारी अन्न पड़ल छनि। लोकक प्रति सहानुभूतिसँ द्रवित भऽ रमाकान्त अपन बखार फोलि दैत छथि आ काजक बदला अनाज कार्यक्रम शुरू

कऽ अपन पोखड़िकेँ उरहबा लैत छथि। एहिसँ एक दिस जँ लोककेँ अकर्मण्यतापूर्वक खराती अन्न लेबासँ परहेज करबैत छथि तँ दोसर दिस अन्नाभावमे लोककेँ मरबासँ बचबैत छथि।

रमाकान्तक ई अवधारणा छनि जे संसारक यावन्तो मनुक्ख अछि सभकेँ जीबाक अधिकार छैक। सभकेँ सभसँ सिनेह होएबाक चाहिऐक। मुदा जाहि परिवेशमे हमरालोकनि जीबि रहल छी, जाहि ठाम व्यक्तिगत सम्पत्ति आ जवाबदेहीक बीच मनुक्ख चलि रहल अछि, ओहि ठाम सिनेह खण्डित होएबे करतैक आ सिनेह खण्डित भेने पारस्परिक द्वेष ओ लड़ाइ-दंगाकेँ कोनो शक्ति रोकि नहि सकैत छैक। तेँ नूतन समाजक निर्माणक हेतु, सामाजिक समरसता हेतु त्याग भावनाक आवश्यकता छैक आ छैक पारस्परिक सहयोग भावनाक विस्तारक आवश्यकता। तेँ ओ अपन दू सए बीघा जमीन गामक भूमिहीन परिवार सबहक बीच वितरणक निर्णय लैत छथि जाहिसँ गामक सभ व्यक्ति सुखी आ सम्पन्न भऽ सकथि। यद्यपि रमाकान्तक एहि प्रकारक अतिशय उदारता, जमीन्दारक प्रवृत्ति ओ समसामयिक यथार्थक दृष्टिञे सर्वथा अविश्वसनीय प्रतीत होइत अछि, तथापि ई उदात्त लेखकीय कल्पना उपन्यासकारक एहि उद्देश्यकेँ प्रतिपादित करैत अछि जे यावत् समाजमे एक दिस अति विपन्न आ दोसर दिस अति सम्पन्न लोकक वास रहत, ताधरि सामाजिक समरसताक बात स्वप्ने बनल रहत।

रमाकान्तक उदारताक अतिरंजित वर्णन उपन्यासमे अनेक स्थलमे देखि पड़ैत अछि यथा ओ शशिशेखर नामक युवकक उच्च शिक्षाक हेतु सहायता प्रदान करैत छथि, गाममे स्कूल स्थापित होएबा काल शिक्षकक भोजनादिक व्यवस्थाक भार अपना ऊपर लऽ लैत छथि, टमटमबलाक दु:खिताहि घरवालीक इलाजक हेतु ओकरा पर्याप्त टाका दऽ सहायता करैत छथि, आदि।

एहि उपन्यासमे मण्डलजी मिथिलाक ग्राम्य जीवनमे पसरल धर्मभीरुताक समस्याक यथार्थवादी चित्रण कएलनि अछि। एहि समस्याक चित्रण हेतु ओ सोनेलाल नामक पात्रक अवतारणा कयने छथि। सोनेलालक पत्नी दु:खित पड़ि जाइत छथिन। ओ हुनका अस्पतालमे देखएबाक हेतु अपन जमीन भरनापर दऽ दैत छथि। उपचार भेलापर हुनक पत्नी स्वस्थ भऽ जाइत छथिन। मुदा ताही क्रममे ओ साधु भण्डाराक कबुला कऽ लैत छथि। एहि कबुलाकेँ पूर करबाक हेतु साधुक दूटा दल निमंत्रित कएल जाइत छथि। हिनका लोकनिक हेतु सोनेलाल पर्याप्त भोज्य पदार्थ जुटबैत छथि। मुदा साधुक दुनू दलमे एकटा वैष्णव सम्प्रदायक तथा दोसर कबीरपन्थी सम्प्रदायक रहैत छथि आ दुनू दल अपन-अपन साम्प्रदायिक अभिमानसँ ग्रस्त रहैत छथि जकर कारणेँ भण्डारामे अनेक विसंगति उत्पन्न होइत छैक। मुदा सर्वाधिक कष्टकर स्थिति तखन बनैत छैक जखन वैष्णव सम्प्रदायक महन्थ भण्डाराक बाद स्थानक हेतु एक सए एक, अपना हेतु एक सए एक, भजनिया सभक हेतु एकावन-एकावन आ भनसीयाक हेतु एकासी-एकासी टाका दक्षिणाक मांग कऽ बैसैत छथि। पराभवमे पड़ितहुँ धर्मभीरु सोनेलालकेँ ओ रकम चुकता कऽ देबऽ पड़ैत छनि। तत:पर दोसर दल सेहो हुनका ओतबे दक्षिणा देबाक हेतु दबाब दैत छनि आ सेहो हुनका चुकता करऽ पड़ैत छनि। एहि तरहेँ धर्मभीरु लोक पाखंडी साधु समाज द्वारा कोना लूटल जाइत छथि, तकर वर्णन कऽ उपन्यासकार एहि समस्याक प्रति लोकदृष्टिकेँ सचेत करबाक उपदेश दैत छथि। अवश्ये दोसर मण्डली द्वारा दक्षिणाक रकम घुरा देलासँ सोनेलालकेँ थोड़ेक राहत भेटैत छनि आ ओहि मण्डलीक प्रति लोकजगतमे सहानुभूति जगैत छैक।

मिथिलाक अनेक लोकव्यवहार सेहो लोकजीवनक अभ्युन्नतिमे बाधक रहल अछि। एहू दिस मण्डलजी संकेत कएलनि अछि। एहि

हेतु ई शशिशेखर नामक पात्रक अवतारणा कएलनि अछि। शशिशेखर कृषि कओलेजमे प्रवेश पाबि जाइत अछि। ओ एहि प्रवेशसँ अपन भावी सुखी जीवनक परिकल्पना कऽ अत्यन्त आनन्दित होइत अछि। ओकर पिता खेत बेचियो कऽ ओकर पढ़ाइ पूरा करएबाक संकल्प लैत छथि। मुदा किछु दिनक बाद पिता बीमार पड़ि जाइत छथिन। शशिशेखर खेत बेचियो कऽ हुनक इलाज करबैत छनि मुदा ओ कालकवलित भऽ जाइत छथिन। तत:पर अपन बूढ़ि माताक सेवा करैत शशिशेखर अपन आगूक पढ़ाइ कोना जारी राखि सकत ताहि बिन्दुपर विचार करैत खेते बेचि कऽ पिताक श्राद्धो कऽ लैत अछि। परिणामत: ओकरा कओलेज छोड़बाक बाध्यता होइत छैक। एहि तरहेँ मण्डलजी लोकजगतमे व्याप्त अन्धविश्वास ओ लोकव्यवहारसँ बचले उत्तर समाजक कल्याणक दिशानिर्देश करबैत देखि पड़ैत छथि। अन्तत: रमाकान्तक सहायतासँ शशिशेखरकेँ अपन पढ़ाइ पूर करबाक संबल भेटि जाइत छैक, मुदा श्राद्धादिक लोकव्यवहारक समस्याक प्रति जुगुप्साक भाव अवश्य उत्पन्न भऽ जाइत छैक।

अशिक्षा ग्राम्यजीवनक दैन्यक अन्यतम कारण अछि। एखनो मिथिलाक निम्नवर्गीय समाजमे शिक्षाक सर्वथा अभाव छैक जकर कारणेँ सामाजिक उन्नति बाधित छैक। मुदा एहू समस्याक समाधान सामाजिक लोकनिक जागरूकतासँ सम्भव छैक। मसोमातक दान कएल जमीनपर विद्यालयक स्थापना, हीरानन्द द्वारा बौएलाल ओ बौएलाल द्वारा सुमित्राकेँ शिक्षित कऽ ओकरा सबकेँ स्तरीय जीवन जीबाक चित्रण 'मौलाएल गाछक फूल' उपन्यासक एही उद्देश्यपरक दृष्टिकोणक परिचायक थिक।

आजुक ग्राम्य समाजक ई विडम्बना छैक जे पढ़ल-लिखल धियापुता पाइ कमएबाक अन्ध दौड़मे शामिल भऽ गेल छैक। तेँ ओ सभ अपन गाम-समाजकेँ छोड़ि हजारो मीलक दूरीपर नोकरी करऽ

चलि जाइत छैक। परिणामत: बूढ़ माता-पिताक परिचर्या कएनिहार केओ रहि नहि पबैत छैक। पारिवारिक विघटनक फलस्वरूप सामाजिक जगतमे पसरल एहि विसंगतिक कथा रमाकान्त ओ हुनक डाक्टर पुत्र सबहक कथामे भेटैत अछि। मण्डलजी एहू विडम्बनासँ समाजकेँ बचबाक संकेत एहि उपन्यासक माध्यमे कएलनि अछि। हुनक भावना सुबुधक एहि उक्तिमे साकार भेल अछि- 'आइक जे एकांगी परिवार अछि ओ कुम्हारक घराड़ी जकाँ बनि गेल अछि। बाप-माए कत्तौ, बेटा-पुतोहु कत्तौ आ धिया-पुता कत्तौ रहऽ लागल अछि। मानवीय सिनेह नष्ट भऽ रहल अछि।' यद्यपि ई भावना कृषक युगीन होएबाक कारणेँ साम्प्रतिक यथार्थक दृष्टिञे पुरातन पद्धतिक अछि, तथापि एकटा वैचारिक द्वन्द्वकेँ ठाढ़ करैत अछि।

मण्डलजी रमाकान्तक दुनू डाक्टर पुत्रक मद्रासमे नोकरी करबाक लाथे किछु ग्रामेतर समस्या सबहक चित्रण सेहो कएलनि अछि। एहिमे सर्वाधिक प्रमुख अछि धनलिप्सामे व्यस्त समाजक बेचैनी। महेन्द्रक एहि कथनसँ ई प्रतिभासित होइत अछि जे ग्रामेतर समाजमे अत्यधिक सुविधा सम्पन्न लोकोक जीवन असामान्य भऽ गेल छैक- 'अपनो सोचै छी जे एते कमाइ छी, मुदा दिन राति खटैत-खटैत चैन नहि भऽ पबैत अछि। कोन सुखक पाछू बेहाल छी से बुझिये ने रहल छी। टी.भी. घरमे अछि, मुदा देखैक समये ने भेटैत अछि। खाइले बैसै छी तँ चिड़ै जकाँ दू-चारि कौर खाइत-खाइत मन उड़ि जाइत अछि जे फल्लांकेँ समय देने छिऐक, नहि जाएब तँ आमदनी कमि जाएत। तहिना सुतइयोमे होइत अछि। मुदा एते फ्रीसानीक लाभ की भेटैत अछि? सिर्फ पाइ। की पाइये जिनगी छिऐक?'

एतावता मौलाएल गाछक फूलमे लोकजीवनक विविध समस्या ओ तकर समाधानक मार्ग तकबाक प्रयत्न भेल अछि। 'अपन जिनगीकेँ जिनगी देखैत, परिवार-समाजक जिनगी देखब जिनगी

थिक।' मण्डलजीक आदर्शवादी चिन्तनक रूपमे प्रतिफलित भेल अछि। प्राय: एही तथ्यकेँ ध्यानमे रखैत महेन्द्र द्वारा गामहिमे स्वास्थ्य केन्द्र स्थापनाक विचार अभिव्यक्त कराओल गेल अछि। ओतऽ ओकर परिवारक एकटा डाक्टरक नित्य मरीजक सेवा, ग्रामवासीक सेवाक हेतु उपलब्ध रहितैक।

सामाजिक समन्वयक प्रति पक्षधरता एहि उपन्यासमे भजुआक कथामे भेटैत अछि। जाति-पातिमे बँटल ग्राम्य समाजमे छूताछूत, ऊँच-नीचक विचार अदौसँ रहलैक अछि। गाँधीजीक स्वतंत्रता आन्दोलनक समय अछूतोद्धारक प्रति हुनक चेष्टा ओ स्वातंत्र्योत्तर कालमे समाजक बदलैत रीति-नीतिक कारणेँ यद्यपि ग्रामो समाजमे अस्पृश्यताक प्रति भाव बदललैक अछि तथापि सहभोजनक दृष्टिऍ एखनो जाति-पातिक बीच दूरी बनले छैक। रमाकान्त द्वारा डोम भजुआक ओहि ठाम जाए भोजन करबाक कथाक माध्यमे मण्डलजी समाजक एहि समस्याक आदर्शपूर्ण समाधान देखौलनि अछि। अवश्ये एहिमे इहो संकेत देल गेल अछि जे समरसताक बाधक तथाकथित अस्पृश्य लोकनिक शुचिताक प्रति प्रतिबद्धताक अभाव रहलनि अछि। मुदा से अशिक्षाजन्य अछि तथा शिक्षा द्वारा ओकरो बदलल जा सकैत छैक।

मण्डलजीक एहि उपन्यासमे नारी विषयक चिन्तनमे प्राचीन भारतीय नारीलोकनिक आदर्शेक उपस्थापन भेल अछि। हिनक अधिकांश नारी पात्र यथा रधिया, श्यामा, सुगिया, सोनेलालक बहिन आदिमे पतिपरायणा भारतीय नारीक चित्रांकन भेल अछि। नारी-शिक्षाक प्रतिबद्धता सेहो मण्डलजीक एहि उपन्यासमे सुमित्राक माध्यमे अभिव्यक्त भेल अछि जे पढ़ि-लिखि कऽ नीक परिचारिकाक रूपमे गामक हेतु एकटा सम्पत्ति बनि जाइत अछि। सुजाता सेहो एहने नारी पात्र छथि जे श्रमिक परिवारमे जन्म लेलाक बादो महेन्द्रक

सहायता पाबि डाक्टरनी बनि जाइत छथि आ महेन्द्रक भावहु सेहो भऽ जाइत छथि। मुदा शिक्षिताक संगहि मण्डलजी जाहि नारीस्वरूपक परिकल्पना एहि उपन्यासमे रूपायित कएलनि अछि, से थिक नारीक सबला रूप। नारीक एहि स्वरूपक चित्रांकन सितियाक चरित्रमे भेल अछि। ओ नहि केवल अपन इज्जतिपर हाथ उठौनिहार ललबाकेँ थूरि कऽ राखि दैत अछि अपितु जखन ललबाक गामक लोक ओकरा गामपर आक्रमण कऽ दैत छैक, तँ नारीलोकनिक सेनानायिका बनि ओकरो सभकेँ परास्त कऽ दैत अछि।

स्वातंत्र्योत्तर भारतमे भ्रष्टाचार एक गोट कुष्ट रोगक रूपमे देखि पड़ैत अछि। एहिसँ राष्ट्रीय जीवनमे कुण्ठा अबैत छैक। मास्टरक बहालीमे हीरानन्दक आक्रोशक कारणक माध्यमे मण्डलजी सरकारी स्तरपर होइत भ्रष्टाचारक यथार्थकेँ अभिव्यक्ति प्रदान कएलनि अछि।

मिथिलाक आर्थिक समृद्धिक हेतु एहि ठाम जलकरक सदुपयोग करबाक चिन्तन सेहो एहि उपन्यासमे अभिव्यक्त भेल अछि। मौलाएल गाछक फूल'क भाषा अत्यन्त सरल, सहज ओ गमैया मैथिली थिक।

मण्डलजी अपन कल्पित संसारकेँ मूर्त्त, विश्वसनीय ओ सजीव रूपमे प्रस्तुत करबाक हेतु लेखनक अनेक प्रविधिकेँ एहि उपन्यासमे समाहित कयने देखि पड़ैत छथि। अनेक ठाम हिनक नाटकीय भाषा-प्रयोग अत्यन्त तीव्रता ओ सहजताक संग भेल अछि, यथा-

'की कहैले एलह?'

'नत दैले एलौं।'

'कोन काज छिअह?'

'काज-ताज नै कोनो छी। ओहिना अहाँ चारू गोरेकेँ खुअबैक

विचार भेल' इत्यादि।

अनेक ठाम ई संस्मरणात्मक भाषाक सुष्ठु प्रयोग कयने छथि यथा- 'एहि गाममे पहिने हम्मर जाति नै रहए। मुदा डोमक काज तँ सभ गामेमे जनमसँ मरन धरि रहै छै। हमरा पुरखाक घर गोनबा रहै। पूभरसँ कोशी अबैत-अबैत हमरो गाम लग चलि आएल। अखार चढ़िते कोसी फुलेलै। पहिलुके उझूममे तेहेन बाढ़ि चलि आएल जे बाधक कोन गप्प जे घरो सभमे पानि ढुकि गेल। तीन-दिन तक ने मालजाल घरसँ बहराएल आ ने लोके। पीह-पाह करैत सभ समय बितौलक। मगर पहिलुका बाढ़ि रहै, तेसरे दिन सटकि गेल।' इत्यादि।

परिवेश ओ वातावरणक निर्माणक हेतु मण्डलजी अभिधा शक्तिसँ संपुष्ट भाषाक प्रयोग द्वारा सटीक ओ विश्वसनीय बिम्ब ठाढ़ करबामे समर्थ देखि पड़ैत छथि यथा- 'दू साल रौदीक उपरान्त अखाढ़। गरमीसँ जेहने दिन ओहने राति। भरि-भरि राति बीअनि हौंकि-हौंकि लोक सभ बितबैत। सुतली रातिमे उठि-उठि पानि पीबए पड़ैत। भोर होइते घाम उग्र रूप पकड़ि लैत। जहिना कियो ककरो मारैले लग पहुँचि जाइत, तहिना सुरूजो लग आबि गेलाह। रस्ता-पेराक माटि सिमेंट जकाँ सक्कत भऽ गेल अछि।' इत्यादि।

पात्रक परिचय दैत काल मण्डलजी ओकर रूपरेखा, वेश-भूषा, आयु आदिक वर्णन अनेक ठाम ओहि पात्रक ठोस व्यक्तित्वकेँ अभिव्यक्त करबाक हेतु कएलनि अछि। मुदा एहि प्रकारक वर्णनक प्रति हुनक प्रतिबद्धता नहि देखि पड़ैछ। तथापि जतऽ कतहु ओ पात्रक मनोभावक वर्णन कयने छथि ओहि ठाम हुनक भाषा विश्लेषणात्मक प्रकृतिक देखि पड़ैत अछि जाहिसँ पात्रक हृदयगत भावक प्रति पाठककेँ सुनिश्चित आकलनक अवसर भेटि जाइत छनि, यथा- 'ब्रह्मचारीजीक बात सुनि रमाकान्तकेँ धनक प्रति मोहभंग हुअए लगलनि। सोचए लगलाह जे हमरो दू सए बीघा जमीन अछि, ओते

जमीनक कोन प्रयोजन अछि। जँ ओहि जमीनकेँ निर्भूमिक बीच बाँटि दिऐक तँ कते परिवार आ कत्ते लोक सुख-चैनसँ जिनगी जीबै लागत। जकरा लेल जमीन रखने छी ओ तँ अपने तते कमाइ छथि जे ढेरिऔने छथि। अदौसँ मिथिलाक तियागी महापुरुषक राज रहल। किएक ने हमहूँ ओहि परम्पराकेँ अपना, परम्पराकेँ पुन:र्जीवित कऽ दिऐक।'

एहि तरहेँ 'मौलाएल गाछक फूल'मे भाषाक कुशल ओ रचनात्मक प्रयोग भेल अछि जाहिसँ वर्णनमे सटीकता, सहजता, बिम्बधर्मिता, स्पष्टता ओ मनोवैज्ञानिक विश्लेषणक क्षमता प्रदर्शित होइत अछि। अपन गुणक कारणेँ मण्डलजीक कथासंसारमे विश्वसनीयता देखि पड़ैत अछि आ ओ अपन प्रौढ़ विचार ओ अनुभूतिकेँ पाठकीय मानसमे स्थानान्तरित करबामे सफल भेल छथि। अन्तत: महेन्द्रक उक्ति- 'समाज रूपी गाछ मौला गेल अछि, ओहिमे तामि, कोड़ि , पटा नव जिनगी देबाक अछि जाहिसँ ओहिमे फूल लागत आ अनवरत फुलाइत रहत'मे उपन्यासक उद्देश्य स्फुट भेल अछि। स्वभावत: मण्डलजी एहि कृतिक माध्यमे ग्राम ओ ग्रामेतर जीवनक संगहि व्यक्ति, परिवार, समाज ओ राष्ट्रक अभ्युन्नतिक हेतु एकर प्रत्येक इकाइकेँ त्याग ओ समर्पणक भावनासँ ओत-प्रोत रहबाक आदर्श जीवन पद्धति अपनयबाक संदेश देलनि अछि। हिनक ई संदेश 'सर्वे भवन्तु सुखिन: सर्वे सन्तु निरामया:, सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दु:खभाग भवेत्'क भावनाक पुन:उपस्थापन थिक। ❑

ग्रामजीवनक सत्यक संवाहक: 'अर्द्धांगिनी'

श्रीजगदीश प्रसाद मण्डल बहुआयामी रचनाकारक रूपमे मैथिली जगतमे प्रसिद्ध छथि। कथा-कविता-नाटक-उपन्यासादि विधाकेँ ई अपन स्वर्णलेखनीसँ सजबैत रहलाह अछि। हिनक समस्त रचना हिनका मिथिला-मैथिलक लोकजीवनक प्रत्यक्षदर्शी ओ व्याख्याताक रूपमे प्रस्तुत करैत रहलनि अछि। लोकजीवनक यथार्थकेँ यथावत् चित्रित कऽ मानवीय संवेदनाकेँ उद्बुद्ध करब हिनक रचना सबहक प्रधान विशिष्टता रहलनि अछि। प्रतिभा, व्युत्पत्ति ओ अभ्यास एहि तीनू कारकसँ सम्बलित हिनक रचनावलीमे मिथिला-मैथिलक समस्या ओ तकर समाधानक दिशा भेटैत अछि। वर्त्तमान जीवनमे होइत नित्य नूतन परिवर्त्तनक खण्ड चित्रकेँ यथावत् प्रस्तुत करब हिनक कथाक विषय-वस्तु रहलनि अछि जकरा ई सहज रीतियेँ प्रस्तुत करैत रहल छथि।

मण्डलजीक कथा सभ मिथिलाक माटि-पानिक कथा थिक। हिनक कथा सभमे मिथिलाक ग्राम्य जीवनक आशा-निराशा, सुख-दु:ख, हर्ष-उल्लास आ जीवन-संघर्षक व्याख्या भेटैत अछि। मिथिलाक सामाजिक-आर्थिक ओ राजनीतिक जीवनमे होइत परिवर्त्तन सभकेँ सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक विश्लेषण द्वारा ई अपन कथा सभकेँ प्रवाहमयता, रोचकता ओ विश्वसनीयताक संग प्रस्तुत करबामे सिद्धहस्त कलाकारक रूपमे प्रतिष्ठित भेलाह अछि।

हिनक कथासंग्रह 'अर्द्धांगिनी' बीस गोट कथाक समुच्चय थिक। एहि कथा सभमे नोकरिहाराक जीवनक संत्रास, परिश्रमी कृषकक उल्लास, सांस्कृतिक पावनि-तिहारमे पैसल अन्धविश्वासक

प्रति जुगुप्सा, ग्राम्य जीवनमे जातीय व्यवसायक महत्व, क्रमश: टुटैत सम्बन्ध-बन्ध, सामाजिक जीवनक विभिन्न समस्या आदिक सूक्ष्म विश्लेषणपूर्वक लोकमंगलक कामना देखि पड़ैत अछि। युगीन समस्याक कारण एवं तकर समाधानक प्रति चिन्तनशीलता हिनक वस्तु-विन्यासकेँ प्रेरक-प्रभावकारी बनौने रहलनि अछि जाहिमे परम्परित कथाधाराक आदर्शोन्मुख यथार्थवादी दृष्टिकोण स्पष्ट रूपेँ प्रस्फुटित देखि पड़ैछ। मिथिलाक लोकजीवनक उत्थानक प्रति सम्वेदनात्मक अभिव्यक्ति- कौशलक कारणे मण्डलजीक कथा सभ हिनका आधुनिक कथाकार लोकनिक अग्रिम पंक्तिमे ठाढ़ कऽ देलकनि अछि।

एहि संग्रहक पहिल कथा थिक 'दोहरी मारि'। एहि कथामे पुरुष पात्र गुलाबक मनोवैज्ञानिक विश्लेषण भेल अछि। अवकाश प्राप्त प्रोफेसर गुलाब कतोक वर्षसँ डाइबीटीज ओ ब्लड-प्रेसर सदृश बिमारी सभसँ ग्रस्त छथि। गामक घर-घराड़ी पर्यन्त बेचि शहरमे बनाओल मकानमे पति-पत्नी एकाकी रहैत छथि। बेटा-पुतोहु परदेशमे रहैत छनि तेँ हिनका लोकनिक सुधि लेनिहार कियो नहि छनि। नागर जीवनक चाकचिक्यसँ सम्मोहित भऽ ई शहरी जीवनमे बसि तँ गेल छथि, मुदा चोरी-डकैती, लूट-पाट, अपहरण, गंदगी आदि समस्यासँ ग्रस्त शहरी जीवनक प्रति असौकर्य ओ ग्राम्य जीवनक सौहार्दपूर्ण वातावरणक प्रति आकर्षण जगैत छनि। हद तँ तखन भऽ जाइत अछि जखन पुत्र द्वारा ई समाद भेटैत छनि जे पौत्रक मूड़न घरपर नै भऽ कऽ वैष्णो देवीमे होयतनि, जाहि लेल हुनकोलोकनिकेँ ओही ठाम अएबाक आमंत्रण भेटैत छनि आ ओ अपनाकेँ अशक्य बूझैत छथि।

एहि कथाक माध्यमे मण्डलजी साम्प्रतिक जीवनमे उपकल विस्थापनक समस्याक कारणे अवस्था-दोषग्रस्त बुजुर्ग पीढ़ीक व्यथाकेँ अभिव्यक्ति प्रदान कएलनि अछि। एहि समस्या सभक

कारणे नोकरी-चाकरी भेला उत्तर लोक शहरमे बसि ग्राम्यजीवनक सौहार्दसँ तँ वञ्चित होइते छथि संगहि वृद्धावस्थामे जखन परिवारोक लोक हुनक संग छोड़ि दैत छथिन तँ अपनाकेँ वंचित अनुभव करऽ लगैत छथि।

एही समस्याकेँ संग्रहक दोसर कथा 'केना जीब' मे सेहो उठाओल गेल अछि। एकर पुरुष पात्र अवकाशप्राप्त प्रोफेसर छथि। ई बेटाकेँ पढ़ा-लिखा कऽ विदेश पठयबामे सफल तँ होइत छथि मुदा बेटा विदेशी सभ्यता ओ संस्कृतिक रंगमे रमि जाइत छनि आ हिनका लोकनिक खोजो-पुछारि नहि कऽ पबैत छनि। परिणामत: दुनू परानी एकाकी जीवन बितएबाक हेतु बाध्य होइत छथि। एहन स्थितिमे हिनका लोकनिक लग एकमात्र अवलम्ब बचि जाइत छनि-जिजीविषा ओ संघर्ष। यैह जिजीविषा ओ संघर्ष करबाक मानसिकता एहि कथाक युग जीवनक अनुकूल संदेश थिक जे एकरा पूर्व कथासँ भिन्न आ स्तरीय बनबैत अछि। एहि कथाक वृद्ध दम्पत्ति कखनो हताश आ निराश नहि देखि पड़ैत छथि।

संग्रहक तेसर कथा ग्राम्य जीवनक परिश्रमी कृषकक गाथा थिक जे अपन परिश्रमक बलेँ अपन भाग्यविधाता बनल अछि। 'नवान' शीर्षक एहि कथामे मिथिलाक लोकजीवनक विभिन्न खण्डचित्र उपस्थित कएल गेल अछि यथा वृक्ष-लतादिक पहिल फड़ देवताकेँ चढ़ायब, गाय बिअएलापर महादेवकेँ दूधसँ अभिषेक करब आदि। ग्राम्य जीवनमे पसरैत जातीय ओ साम्प्रदायिक विद्वेष दिस सेहो एहिमे संकेत कएल गेल अछि। मुदा एहि कथामे मिथिलाक लोकजीवनक आर्थिक स्थितिकेँ बदहाल करएबला जाहि समस्यापर विशेष दृष्टिनिक्षेप कएल गेल अछि, से थिक बाढ़िक समस्या। एहि समस्याक कारणे मिथिलाक ग्राम्य जीवनक आर्थिक व्यवस्था अस्त-व्यस्त भऽ जाइत अछि। तथापि एहि कथाक नायक आधुनिक

वैज्ञानिक पद्धति अपनाए नव किसिमक धान उगबय लगैत छथि, तीमन-तरकारीक नगदी फसिल उपजाबय लगैत छथि आ नूतन नस्लक माल-जाल पोसि अपन जीवनकेँ खुशहाल बना लैत छथि। वस्तुत: एहि वैज्ञानिक पद्धति द्वारा मिथिलाक कृषक जीवनक समुन्नति भऽ सकैत अछि, से संदेश देब कथाकारक उद्देश्य छनि।

संग्रहक चारिम कथा थिक 'तिलासंक्रान्तिक लाइ'। एहि कथामे ग्राम्यजीवनमे पसरल अन्धविश्वासपर प्रहार कएल गेल अछि। तिलासंक्रान्ति एकटा एहन पर्व थिक जे सोत्साह मिथिलाक घर-घरमे मनाओल जाइत अछि। एहि दिनसँ सूर्य उत्तरायण भऽ जाइत छथि आ क्रमश: शीत ॠतु वसन्त आ गृष्म दिस बढ़ऽ लगैत अछि। मिथिलाक प्रशस्त भोजन चूड़ा-दही एहि दिन गरीबो-गुरबा धरि खाइते अछि। चूड़ा ओ मुरहीक लाइ, तिलबा आदि देवताकेँ चढ़ा प्रसाद रूपमे ग्रहण करब एहि पावनिक कृत्य होइत छैक। शीत ॠतु रहलाक बादो मिथिलाक ग्राम्यजीवन एहि पर्वक ओरिआओनमे मास दिन पूर्वहिसँ लागि जाइत अछि। मुदा एहि पर्वक प्रसाद ग्रहण करबाक हेतु प्रात:स्नान जरूरी बूझल जाइत छैक। मिथिलामे ई अपवाद सेहो पसरल छैक जे एहि दिन जे किओ भोरे नदी वा पोखरिमे डूब दैत छथि हुनका नदी-देवता तत्काले लाइ धरा दैत छथिन। एही अपवादपर विश्वास कऽ गोपाल नामक एकटा नेना बारहे बजे रातिमे नदीमे डूब देबऽ चल जाइत अछि आ ठंढसँ ग्रस्त भऽ जाइत अछि। ग्राम्यजीवनक अन्धविश्वासी समाजकेँ एहि कथाक माध्यममे ई संदेश देल गेल अछि जे वस्तुत: ई पावनि प्रकृति-परिवर्त्तनपर आधारित अछि आ एहिमे बिनु पाखंड कयने लोककेँ अपन सामर्थ्यक अनुसार समयपर स्नान करबाक चाही, नहि कि अन्धविश्वासमे पड़ि रोगग्रस्त भऽ जएबाक चाही। हरड़ीवालीक उक्ति- "अहाँ जकाँ रातिमे कुकुर घिसियौने छलौं जे भोरे नहा कऽ पाक हएब" अन्धविश्वासक प्रति बेस

प्रहार कएलक अछि। कथामे एहि पावनिक तैयारीमे जुटल लोकजीवन अत्यन्त सुन्दर चित्र भेटैत अछि।

पाँचम कथा 'भाइक सिनेह' भाइ-भैयारीक आपसी कलह ओ आत्यन्तिक प्रेमक कथा थिक। शिष्टदेव आ विचारनाथ दुनू भाइ एक दोसराक प्रति अगाध श्रद्धा, भक्ति ओ बन्धुत्वक भाव रखैत छथि मुदा देयादिनी लोकनिक बीच खट-पटसँ परिवारमे भिन्न-भिनाउज भऽ जाइत छनि। भिन्न-भिनाउजक मूलमे अर्थसत्तापर कबजा रहैत अछि। मुदा जखन दुनूक मनमे परस्पर प्रेमक भाव जगैत छनि तँ दुनू एक-दोसराक दु:ख बँटबाक हेतु तत्पर भऽ जाइत छथि। एहि कथामे कृषक जीवनमे पारस्परिक सहयोग, सद्भाव ओ शक्तिक अनुकूल श्रमपर आधारित संयुक्त परिवारक उपयोगिताक परम्परित अनुगायन देखि पड़ैछ।

संग्रहक छठम कथा 'प्रेमी' वस्तुत: प्रेमकथाक रूपमे लिखल गेल अछि मुदा एहि कथामे रचनाकारक उद्देश्य समाजिक जीवनमे व्याप्त दहेज प्रथाक कुरीतिकेँ समाप्त करबाक संदेश सएह अभिव्यक्त भेल अछि। पक्षधर आ ज्ञानचन्द दू गामक छथि। दुनूमे प्रगाढ़ दोस्ती छनि। ज्ञानचन्दक पौत्र परीक्षा देबाक हेतु पक्षधरक गाम अबैत छथिन जतए परीक्षावधि धरि ज्ञानचन्दक पौत्र लोचन आ पक्षधरक पौत्री सुकन्याक बीच संवाद होइत छनि आ दुनू परस्परानुरक्त भऽ जाइत छथि। लोचनकेँ विदा करबाक क्रममे सुकन्या ओकरे संग ओकरा घर धरि चलि जाइत अछि जे ओहि गाममे गुलञ्जरक वस्तु भऽ जाइत छैक। विजातीय रहलाक बादो पक्षधर आ ज्ञानचन्द पारस्परिक मैत्रीकेँ सम्बन्धमे बदलि एकटा आदर्शक स्थापना करैत छथि। पक्षधरक उक्ति- "जइ समाजमे मनुक्खक खरीद-बिकरी गाए-महींस, खेत-पथार जकाँ होइए ओइ समाजकेँ पञ्च तत्त्वक बनल मनुक्ख कहल जा सकैत अछि? जँ से नै तँ हमर कियो मालिक

नै छी। कियो अगुँरी देखाओत तँ ओकर अगुँरी काटि लेबै।" मे दहेज प्रथाक समर्थक ओ प्रेम-विवाह, विजातीय विवाहक अवरोधक तत्वपर प्रहार कएल गेलैक अछि।

संग्रहक सातम कथा 'बपौती सम्पत्ति' कृषक जीवनमे जातीय व्यवसायक महत्त्वक अवधारणापर आधारित अछि। सम्प्रति कृषक-मजदूरक पलायनसँ गामक अर्थ-व्यवस्था चरमरा गेल अछि, तकरा सुधारबाक हेतु एहि कथामे चिन्तनक एकटा दिशा भेटैत अछि। कथानायक गुलटेन अपन पिताक सिखाओल व्यवसायसँ नीक जकाँ परिवारक परिपालन करबामे सक्षम अछि। तेँ कथाकारक उद्देश्य ग्राम्य स्वावलम्बनकेँ पुन:स्थापित करबाक हेतु मार्गदर्शन करब बुझना जाइत अछि।

आठम कथा 'डंका' लोकजीवनक अवमूल्यनकेँ रेखांकित करैत अछि। एकर मुख्य पात्र भैयाकाका गामक रक्षा करबाक संकल्प लऽ अपनो गाममे अखड़ाहाक प्रचलन शुरू करैत छथि जाहिसँ पास-पड़ोसक गाम किंवा जमीन्दारक पहलमान हुनकालोकनिकेँ अबल बूझि प्रताड़ित नहि कऽ सकनि। एहि तरहेँ समस्त समाजक हितकामनाक प्रति हुनका व्यग्रता छनि मुदा साम्प्रतिक जीवनमे स्वार्थक प्रवेशसँ ओ ई जानि विचलित भऽ जाइत छथि जे आब गाम-घरक लोकक कल्याणक गप्प तँ दूर, लोक अपनो सर-सम्बन्धीक खोज-पुछारि करबासँ कतरयबाक मूल्यरहित संस्कार पोसऽ लागल छथि। हिनक उक्ति- "माए-बाप, भाए-बहिन सबहक सम्बन्ध आ शिष्टाचार एहि रूपेँ नष्ट भऽ रहल अछि जे साधनाभूमिकेँ मरुभूमि बनब अनिवार्य छै" मे समस्त कथासार अभिव्यक्त भऽ जाइत अछि।

नवम कथा 'संगी' शिक्षा जगतमे भेल अध:पतनक कथा थिक जाहिमे स्कूल-कओलेजमे शिक्षाक व्यवसायीकरणक फलस्वरूप सामान्य जनसँ छीनल जाइत शिक्षाक समस्यापर विमर्श भेल अछि।

एकर समाधानक हेतु दूटा संगी पारस्परिक परिणयपूर्वक क्रान्तिक शंखनाद करैत देखि पड़ैत छथि। कथाक घटनाक्रम आकस्मिकताक दोषसँ ग्रस्त बुझना जाइछ, जे प्रभावान्वतिकेँ कमजोर करैत अछि।

'ठकहरबा' पूर्णत: राजनीतिक कथा थिक। एहिमे स्वातंत्र्योत्तर भारतमे पुलिस ओ नेता लोकनिक भ्रष्ट चरित्र, मतदानमे गड़बड़ी आदिक चित्रण करैत लोकजगतमे क्रमश: पसरैत भ्रष्टाचारक अतिरेकक चित्रण भेल अछि, जाहिसँ कोनो वस्तुक विश्वसनीयतापर प्रश्नचिन्ह लागि गेल अछि। ई कथा लोकतंत्रमे लोक आ तंत्र दुनूक स्खलनपर सोचबाक हेतु विवश करैत अछि।

'अतहतह'मे मिथिलाक वैवाहिक प्रथामे बरियाती पक्ष द्वारा सरियाती पक्षकेँ देखार करबाक हेतु खाद्य वस्तुपर जोर देबाक परिष्कारक रूपमे सरियाती पक्ष द्वारा तकर बदला लेबाक कथा कहल गेल अछि। एहि कथामे बरियाती पक्षकेँ पानिक संग दवाइ पिआय ओकरा सभकेँ देखार करबाक प्रयास कएल गेल अछि जे लोकसंस्कृतिक प्रतिकूल होएबाक कारणेँ प्रतीयमान नहि भऽ सकल अछि। अवश्ये एहिमे वर पक्षमे शराब पीबि कऽ बरियाती जएबाक आधुनिक प्रचलनक विरुद्ध आक्रोशक अभिव्यक्ति भेल अछि। मण्डलजीक ई कथा कन्यादान-वरदानमे दुनू पक्षक सम्मान रक्षाक पारस्परिक दायित्वक प्रति कान्तासम्मित उपदेश दैत अछि।

बारहम कथा 'अर्द्धांगिनी' एहि पोथीक नामकरणक आधार बनल अछि। एहि कथामे अवकाशप्राप्त शिक्षकक अत्यन्त सूक्ष्म मनोविश्लेषण भेल अछि। अपन कमाइक बलें ओ आजीवन अपन पत्नीकेँ दासीसँ आगू बुझबाक हेतु तैयार नै होइत छथि मुदा जखन नोकरी समाप्त भऽ जाइत छनि तखन पत्नीक आवश्यकतापर ध्यान जाइत छनि आ अर्द्धांगिनीक महत्त्व बूझि पड़ैत छनि। लेखक नारीक सेविका स्वरूपकेँ मर्यादित कऽ ओकरा पुरुषक समानान्तर मूल्य

प्रदान करबाक पक्षपाती छथि, जकर अभिव्यक्ति एहि कथाक लक्ष्य बुझना जाइत अछि।

तेरहम कथा थिक। 'ऑपरेशन' एहि कथामे मइटुग्गर नेनाक सामाजिक स्थितिपर विमर्श कएल गेल अछि। जखन कोनो नेनाक माय असमय कालकवलित भऽ जाइत छैक, तँ समाज ओकरा अलच्छ कऽ कऽ बूझऽ लगैत छैक आ ककरो ओकर शारीरिक ओ मानसिक विकासक चिन्ता नहि रहैत छैक। मुदा जँ ओहि बच्चाक पिता दोसर विवाह कऽ ओकर प्रतिपालनक हेतु, स्थानापन्न माताक व्यवस्था करैत छथि तँ वएह समाज बेर-बेर ई जनबाक प्रयास करैत अछि जे सतमाय ओकर पालन नीक जकाँ कऽ रहल छैक वा नहि। समाजक ई व्यवहार ओकर क्रूर मानसिकताक परिचय दैत अछि जाहिसँ नेना आ ओकर पिता आहत होएबाक लेल बाध्य होइत छथि। लेखक समाजक एहि विरूपित मानसिकतापर व्यंग्य करब एहि कथाक उद्देश्य रखलनि अछि। एही माध्यमसँ अस्पतालक दुर्व्यवस्था तथा प्राइवेट प्रैक्टिसक कारणपर सेहो विमर्श कएल गेल अछि।

चौदहम कथा 'धर्मनाथ' ढहैत जमींदार परिवारक गाथा थिक। एहिमे दहेज प्रथाक उन्मूलनक हेतु सामाजिक जागरण कथाकारक उद्देश्य बुझना जाइत अछि। एकर नायक धर्मनाथ जमीन्दार परिवारक छथि आ पिताक अमलदारी धरि हुनक परिवार दहेजक संपोषक रहल अछि आ खेत बेचि-बेचि कन्यादान करैत अपन कुलाभिमानक रक्षा करैत रहल अछि। मुदा ई मिथ्याभिमान जमीन्दारी उन्मूलनसँ क्षत-विक्षत भऽ गेल छैक आ धर्मनाथ एहि स्थितिमे नहि रहि पबैत छथि जे पुत्रीक विवाह जमीन्दारे परिवारमे करबाक हेतु धन जुटा पाबथि। अन्तत: ओ प्रो. रामरतन सन दहेजविरोधी व्यक्तिक सहायतासँ एकटा कर्मयोगी बालकसँ अपन बेटीक विवाह ठीक कऽ लैत छथि आ मिथ्या प्रतिष्ठाकेँ चुनौती दैत छथि। परिणामत: हुनक पिता अपन

कुलाभिमानपर प्रहार होइत देखि मृत्युकेँ प्राप्त कऽ लैत छथि। धिया-पुताक थपड़ी बजा-बजा ई कहब जे- "बाबा मुइलाह- पूरी-जिलेबीक भोज खायब.." वस्तुत: परम्परा आ अन्धविश्वाससँ जकड़ल सामाजिक व्यवस्थाक विनाशक प्रति उत्सव थिक जे दहेज प्रथाक उन्मूलनकेँ संकेतित करैत ई ईंगित करैत अछि जे जँ लोक मिथ्याभिमानक त्याग नहि करताह आ दहेज देब-लेबकेँ सामाजिक प्रतिष्ठाक मानदंड बनौने रहताह तँ अध:पतन अवश्यम्भावी अछि।

'सरोजिनी' प्रेमविवाहपर आधारित कथा थिक। नायिका सरोजिनी जमीन्दार घरक कन्या छथि। हिनक भाय हृदयनारायण बिलैतिन कन्यासँ प्रेमविवाह कऽ लेने छथिन। इहो अपन बालसखा रमेशक संग विवाह कऽ लैत छथि। रमेश हिनके नोकर घूरनक शिक्षित पुत्र छथि। आर्थिक ओ सामाजिक दुनू स्तरपर असमान लोकक विजातीय विवाहक समर्थनक ई आधार जे "अपन मालिक हम स्वयं छी। अखन धरि जातिक पहाड़ जे अपना समाजमे बनल अछि, ओकरा मेटाएब। जे समाज भूखलकेँ ने पेट भरैत अछि, ने नाङटकेँ वस्त्र दैत अछि, ने बेघरकेँ घरे। एतऽ धरि जे मूर्खकेँ पढ़ा नहि सकैत अछि, लूटैत इज्जतकेँ बचा नहि सकैत अछि, ओहि समाजकेँ विरोध करबाक कोन अधिकार?"

कथा उपदेशात्मक प्रकृतिक अछि तथा सिने जगतक वस्तु जकाँ असहजतासँ प्रभावित बुझना जाइत अछि। तथापि कथाकार जातीय व्यवस्थापर आधारित वैवाहिक पद्धतिकेँ गुण ओ प्रेमपर आधारित करबाक समर्थन कऽ एहि प्रथामे युगानुरूप परिवर्त्तनक आकांक्षी बुझना जाइत छथि। विश्रृंखलित होइत वैवाहिक व्यवस्थाक प्रति समाजक ध्यान आकृष्ट करब एहि कथाक उद्देश्य बुझना जाइत अछि।

संग्रहक सोलहम कथा 'सुभद्रा' विधवा विवाहक समस्यापर

आधारित अछि। दैवयोगसँ सुभद्राक पतिक देहान्त हवाइ दुर्घटनासँ भऽ जाइत छनि। ओ अभिशप्त जीवन बितएबाक हेतु बाध्य भऽ जाइत छथि। एकर कारण ई अछि जे ओ जाहि जातिसँ अबैत छथि ताहिमे विधवा विवाहकेँ मान्यता नहि छैक। कथाकार रूपलाल बाबा नामक एक गोट गाँधीवादी चरित्रक अवतारणा करैत छथि जे नारी-समुत्थानक प्रति समर्पित छथि। हिनक मान्यता छनि जे जहिना पत्नीक मुइला उत्तर पतिकेँ दोसर विवाह करबाक अधिकार छैक तहिना पतिक मुइला उत्तर पत्नीयोकेँ दोसर विवाहक अधिकार भेटबाक चाही। रूपलाल बाबा सुभद्राक पिताकेँ मनाय सुशील नामक युवकसँ ओकर विवाह सम्पन्न करबैत छथि। एहि तरहेँ समाजमे विधवाकेँ मान्यता भेटैत छैक। आदर्शवादी संकल्पनापर आधारित ई कथा वस्तुत: एहि सामाजिक समस्याक प्रति कथाकारक प्रगतिवादी मूल्यकेँ उद्घाटित करैत अछि।

'सोनमा काका' एहि संग्रहक सतरहम कथा थिक। ई कथा मानव धर्मपर आधारित अछि। एकर प्रधान पात्र सोनमा काका स्वयं पत्नीक बीमारीसँ त्रस्त छथि। ओकर इलाज करा जखन गाम घूमैत छथि तँ रामकिसुन नामक एकटा बिगड़ैल व्यक्तिक मृत्युक समाचार भेटैत छनि। ओ व्यसनक चक्रमे पड़ि ततेक निर्धन भऽ गेल छल जे ओकरा लेल कफनो धरिक उपाय नहि छलैक। सोनमा काका समाजक सहायतासँ ओकर संस्कार करबैत छथि आ ओकर अनाथ बालककेँ अपन बेटीक संग विवाह कराय ओकर जीवनकेँ सामान्य बनयबाक प्रयत्न करैत छथि। कथाकार एहि आदर्श पुरुषक स्थापना कऽ ई सिद्ध' करऽ चाहैत छथि जे जँ समाज चाहय तँ केहनो पैघ समस्याक निदान भऽ सकैत छैक।

अठारहम कथा 'दोती बिआह' परित्यक्ताक पुनर्विवाहपर आधारित अछि। एकर प्रमुख पुरुष पात्र उमाकान्त छथि जे पचास

वर्षक आयुमे पत्नीक देहावसानक कारणेँ एकाकी जीवन जीबाक हेतु बाध्य छथि। जीवन-संगिनीक अभावमे हिनक दिन काटब पहाड़ भऽ गेल छनि। दोसर दिस यशोदिया नामक एकटा युवती अछि जकर पति दिल्लीमे नोकरी करैत छलथिन मुदा शहरी चाकचिक्यमे पड़ि यशोदियाकेँ परित्यक्त कऽ कतहु पड़ा जाइत छथि। निस्सहाय यशोदिया गाम घूरि अबैत अछि आ हरिनारायण नामक एक गोट सम्भ्रान्त व्यक्तिक आश्रममे रहि जीवन-यापन करऽ लगैत अछि। हरिनारायण उमाकान्तक स्थितिकेँ परखि हुनका यशोदिया संग विवाह करा दैत छथिन जाहिसँ दुनूकेँ अवलम्ब भेटैत छनि आ दूटा उजड़ल परिवार बसि पबैत अछि। एहि कथाक माध्यमे कथाकारक ई उद्देश्य स्पष्ट होइत छनि जे मानव जीवनकेँ सन्तुलित रखबाक हेतु पति-पत्नीमे किओ जँ एकाकी जीवन जीबैत अछि, तँ ओ अनेक प्रकारक मानसिक व्यथामे पड़ल रहैत अछि जकर निदानक हेतु समतूल युगल बनयबाक हेतु प्रयत्न होएबाक चाही।

उनैसम कथा ‘पड़ाइन’ ग्राम्य जीवनमे पसरल अराजकताक कथा थिक जकरा कारणेँ बलगर लोक निर्बलकेँ सता कऽ ओकरा गामसँ उपटयबापर लागल रहैत अछि। एहि कथाक पात्र चेथरू महाजनी अत्याचार, खेत-पथारमे बेइमानी-शैतानी, चोरि, बलपूर्वक दोसराक जजाति नष्ट करब आ माय-बहिनिक इज्जतक संग खेलवाड़ करब आदिसँ त्रस्त भऽ गाम छोड़ि दैत अछि आ नेपाल जा कऽ बसि जाइत अछि। ओतऽ परिश्रमपूर्वक अर्जित धनसँ सम्पत्तिशाली बनि नीक जकाँ गुजर करऽ लगैत अछि। एहि कथामे कथाकारक उद्देश्य ग्राम्य जीवनक किछु समस्या सभकेँ इंगित करब बुझना जाइत अछि। मुदा आधुनिक परिप्रेक्ष्यमे एहिमे स्वभाविकताक अभाव बुझना जाइत अछि।

‘कतौ ने’ कथा संग्रहक अन्तिम कथा थिक जे वस्तुत: यात्रा-

वृत्तान्त थिक। एहिमे जनकपुर यात्राक वर्णन आएल अछि। गामक एकटा टोली जनकपुरमे विवाह पंचमीक मेला देखबाक हेतु प्रस्थान करैत अछि। विवाह पंचमी दिन ई लोकनि धनुषा दर्शन करबाक हेतु जाइत छथि आ ओतए गाड़ी खराब भऽ जएबाक कारणेँ विवाह पंचमीक रातिमे पुन: जनकपुर घुमि नहि पबैत छथि, जाहिसँ हुनका लोकनिकेँ जनकपुरक कार्यक्रम देखबाक अवसर नहि भेटि पबैत छनि। अन्तत: हारि-थाकि कऽ सभ सोचैत छथि जे कतए एलौं तँ कत्तौ ने। दुर्योगवशात् मनोरथपूर्त्तिमे बाधा होएबाक एहि कथामे वस्तुत: जनकपुर यात्राक एक गोट मनोरम वृत्तान्त भेटैत अछि।

एहि तरहेँ 'अर्द्धांगिनी' कथा संग्रह मिथिलाक ग्राम्य जीवनक विभिन्न आयाम ओ समस्या तथा तकर समाधान सबहक आदर्शोन्मुख यथार्थवादी व्याख्या थिक।

एहि संग्रहक कथा सभ वर्णन-प्रधान देखि पड़ैत अछि। कथाकारक शैली एहन छनि जे ओ कोनो घटनाकेँ प्रस्तुत करबासँ पूर्व ओकर पूर्वपीठिकाकेँ ततेक सघन कऽ दैत छथि जे पाठक ताहिमे तल्लीन भऽ जाइत छथि। एहि प्रकारक वर्णन-विन्यास हिनक औपन्यासिक वृत्तिकेँ स्पष्ट करैत छनि जाहिमे वर्णनक हेतु पर्याप्त अवसर रहैत छैक।

मनोविश्लेषण मण्डलजीक कथा सबहक अन्यतम विशिष्टता थिकनि। ई जाहि कोनो पात्रकेँ प्रस्तुत करैत छथि तकर अन्तस्तलमे प्रवेश कऽ ओकर भावराशिकेँ अभिव्यक्त कऽ दैत छथि जाहिसँ पात्रक चरित्र स्वत: स्फुट होमऽ लगैत छैक। उदाहरणार्थ 'बपौती सम्पत्ति' कथामे गुलटेनक मानसिक स्थितिकेँ अभिव्यक्त करैत ई पाँती द्रष्टव्य अछि- "मनमे उठलै- पुरने कपड़ा जकाँ परिवारो होइए। जहिना पुरना कपड़ाकेँ एक ठाम फाटल सीने दोसर ठाम मसकि जाइत अछि, तहिना परिवारोक काज अछि। एकटा पुराउ दोसर आबि

जाएत। मुदा चिन्ता आगू मुँहेँ नहि ससरि रुकि गेलै। चिन्ताक अँटकिते मनमे खुशी भेलै। अपनापर ग्लानि भेलै जे जाहि धरतीपर बसल परिवारमे जन्म लेबाक सेहन्ता देवी-देवताकेँ होइत छनि ओकरा हम मायाजाल किअए बुझैत छी। ई दुनियाँ ककरा लेल छै? ककरो कहने दुनियाँ असत्य भऽ जाएत? ई दुनियाँ उपयोग करैक छैक नहि कि उपभोग करैक।"

मण्डलजी कथाक भाषामे मैथिलीक गमैया बोली-वाणीक सहज स्वरूप अभिव्यक्त भेल अछि। ई पात्रानुरूप भाषाक प्रयोग कएलनि अछि जाहिसँ प्रत्येक पात्रक बौद्धिक ओ सामाजिक स्थिति स्पष्ट होइत चल जाइत अछि। हिनक कथा सभमे कथाकारक भाषा सेहो मैथिलीक लोकजगतक भाषाहिक अनुगमन करैत अछि जाहिमे सहजता अछि। ई कनेको कृत्रिम प्रयोगसँ ई बचैत रहल छथि। हिनक भाषामे तद्भव ओ देशज शब्दक प्रचुर प्रयोग भेल अछि। युग्म शब्दक प्रयोग हिनक भाषाकेँ लालित्य प्रदान करबामे आ ओकर प्रवाहमयतामे सहायक रहलनि अछि। उदाहरणक हेतु माल-जाल, लेब-देब, दोकान-दौरी, चट्टी-बट्टी, ताड़ी-दारू, छहर-महर, चोरी-डकैती, बाल-बोध, बेटा-पुतोहु, भोज-काज, अन्हर-बिहाड़ि, दार-मदार, सुक-पाक, भुखल-दुखल, चीज-बौस, घुसका-फुसका आदिकेँ देखल जा सकैछ।

मण्डलजी कथा भाषाक ई अन्यतम विशिष्टता थिकनि जे ई कोनो स्थितिकेँ पाठकक समक्ष अभिव्यक्त करबाक हेतु चमत्कारिक उपमानक प्रयोग करैत छथि जाहिसँ वस्तुस्थितिक स्पष्ट चित्र पाठकक सोझाँ आबि जाइत छनि यथा- "जहिना खढ़ाएल खेतमे हरबाहकेँ हर जोतब भरिगर बूझि पड़ैत छैक तहिना सुशीलक मन समस्याक बोनाएल रूप देखलक। जहिना पहाड़सँ निकलि अनवरत गतिसँ चलि नदी समुद्रमे जाय मिलैत अछि तहिना ने टटघरक ज्ञान उड़ि कऽ

सर्वोच्च ज्ञानक समुद्रमे मिलत।” आदि।

एतावता कहल जा सकैछ जे मण्डलजीक कथा वर्णनक दृष्टिञे मिथिलाक ग्रामजीवनक यथार्थवादी चित्र, घटनाक दृष्टिञे आदर्शक प्रति अभिभूत, सूक्ष्म मनोविश्लेषणक प्रति प्रतिबद्ध तथा उद्देश्यक दृष्टिञे लोक मंगलकारी अछि। मैथिलीक आधुनिक कथा लेखन हिनक रचना सभसँ सम्बलित भेल अछि आ एकर समाजोपयोगी तत्व सभ अनन्त काल धरि मिथिलाक लोकजीवनकेँ प्रेरित-प्रभावित करैत रहत। ❑

लोकजीवनक घनीभूत चिन्तनक राजमार्गपर दृष्टिपात: 'कर्ताक रंग कर्मक संग'

'टैगोर लिटरेचर एवार्ड' आ अनेक सम्मान-पुरस्कार सभसँ समलंकृत श्रीजगदीश प्रसाद मण्डल नाटक, एकांकी, गीत, कविता, कथा, उपन्यास आदि विविध विधामे रचनाशील छथि आ आधुनिक मैथिली साहित्यकार लोकनिक मध्य प्रकाशित पुस्तकक संख्याक दृष्टियेँ चरम बिन्दुपर स्थापित होयबामे सफल सिद्ध भेल छथि। अन्यान्य भारतीय भाषामे ई दृष्टिगोचर होइत अछि जे एकेटा लेखक विभिन्न विधाक शताधिको शीर्षकक पोथीक रचनाकारक रूपमे अखिल भारतीय पटलपर प्रख्यात ओ प्रशंसित होइत छथि मुदा मैथिली लेखनक हेतु ई मण्डलजीक ऊर्जस्वित लेखनसँ पूर्व दूरेक कौड़ी छल। मैथिलीमे एहि अभावक पूर्त्तिक दिशमे मण्डलजीक प्रयत्न सम्प्रतियो एकले कहल जा सकैत अछि। तेँ एहि आशुलेखकक जतेक अभ्यर्थना कएल जाइनि से थोड़े होयत। मैथिली लेखन हिनक मार्गदर्शितासँ अनुप्राणित अछि।

'कर्ताक रंग कर्मक संग' पोथी हिनक कथा लेखनक एक गोट बानगी मात्र थिक। एहिमे हिनक आठ गोट कथा अनुगुम्फित भेल अछि। प्रत्येक कथा मिथिलाक ग्राम्य जीवनक झाँकी प्रस्तुत करैत अछि आ एहि ठामक लोकजीवनक घनीभूत राजमार्गपर दृष्टिपात करैत देखि पड़ैत अछि। कथाकार अतिसाधारण पात्र ओ घटनावलीक माध्यमे लोकजगतक आशा-आकांक्षा, सुख-दु:ख ओ नित्य-नैमित्तिक संघर्षक हेतु चिन्तनक दृश्यावली प्रस्तुत करबामे समर्थ भेल छथि। स्वभावत: हिनक सभटा कथामे पाठककेँ स्वाभाविकताक दर्शन

होइत छैक, विश्वसनीयताक भान होइत छैक आ पाठक ओकर आस्वादन कऽ परितृप्त अनुभव करैत अछि।

पोथीक केन्द्रीय कथा जकर शीर्षककेँ पोथीक शीर्षकक रूपमे चयनित कएल गेल अछि, अनुक्रममे चारिम स्थानपर राखल गेल अछि। ई कथा, संग्रहक आने कथा सभक सदृश गल्प शैलीमे रचित अछि। सरकारी तंत्रमे परिव्याप्त भ्रष्टाचारक उत्खनन एहि कथाक केन्द्रीय बिन्दु थिक तथा भ्रष्टाचारक उन्मूलनक हेतु जनताक प्रतिबद्धताक विज्ञापन उद्देश्य। विभिन्न गामक बाटकेँ राष्ट्रीय उच्च पथसँ जोड़बाक हेतु एक गोट मुख्य सड़कक निर्माण विभागीय अभियंताक माध्यमे प्रायोजित होइत अछि। मुदा अभियन्ता जानि-बूझि कऽ स्वलाभक चिन्तन -प्रवृत्तिक कारणेँ एहि तथ्यकेँ अपवारित कऽ कऽ चलैत अछि जे मुख्य सड़क बनला उत्तर जँ जलनिकासीक मार्ग समुचित स्थलपर नहि देल जायत तँ समस्त गामक लोक वर्षा जलक बाढ़िसँ प्रताड़ित होयत। ओकर चिन्तन छैक जे एहि प्रकारक कृत्रिम आपदाक जँ सृजन होयतैक तखने ओकरा सड़ककेँ काटि नाला बनयबाक पुन: प्राक्कलन आ कार्य करऽ पड़तैक जाहिसँ सरकारी पाइक भने अपव्यय होइक, ओकरा लाभे-लाभ होयतैक। अन्तत: सड़क बनैत अछि। वर्षाक ऋृतुमे सम्बद्ध गाम सभमे जलप्लावन होइत छैक आ जनसामान्यक जीवन कष्टमय भऽ जाइत छैक। ऊँचपर बसल गामक लोकक प्रति गँहीर स्थलपर बसल गामक लोककेँ द्वेष होइत छैक, कारण ऊँचपर बसल गामक पानि सेहो नीचा बसल गामहिमे जमा भऽ कऽ बाढ़िक कारण होइत छैक। एहि तरहक स्थिति अनेक ठाम जातीय ओ साम्प्रदायिक तनावकेँ जन्म दैत छैक आ सम्पूर्ण सामाजक व्यवस्था ध्वस्त होमऽ लगैत छैक। अभियंता पहिनहिसँ ऊँचपर बसल गामक किछु दलाल सभकेँ पोषण दैत अछि जकर कारणेँ सरकारक अव्यवस्थाक विरुद्ध लोकजगतक एकटा

समूह एहि समस्याक प्रति नि:स्पृह भऽ जाइत अछि। मुदा ओही गामक एक गोट सचढ़ लोक जगरनाथ कका ब्लॉकसँ लऽ कऽ जिला धरि एहि सार्वजनिक समस्याक विरुद्ध सूचनाक अधिकार आ लोक अदालतक कानूनी प्रक्रिया कऽ अन्तत: सरकारकेँ बाध्य करबामे समर्थ होइत छथि जे जल निकासीक हेतु अस्सी फुट चौरस ओहि नवनिर्मित सड़ककेँ चीड़ि नाला बनाओल जाय आ लोककेँ बाढ़िसँ बचाओल जाय। फलत: लोककेँ तँ त्राण भेटि जाइत छैक। मुदा सरकारी अभियंता जे पहिने सड़क बनयबामे अतिरिक्त आय बनयबामे सफल भेल छल पुनश्च ओकर नालाक अंशक तोड़-जोड़मे सेहो अतिरिक्त आय कमयबामे सफल भेल अछि। एतावता सरकारी तंत्र द्वारा निर्माण कार्यमे अपव्यय ओ अतिरिक्त आमदनीक हेतु जोड़-तोड़क भ्रष्टाचार पूर्ण प्रयासकेँ उजागर करैत लेखक एहि चिन्तनधाराकेँ प्रवाहित कएलनि अछि जे जनता जँ सजग भऽ जाय तँ कोनो सार्वजनिक ओ सरकारी कार्य संघर्ष ओ कानूनक बलपर कराओल जा सकैत अछि। सम्पूर्ण कथा जनचेतनाक जागरणक दिस उन्मुख अछि आ यथार्थक पृष्ठभूमिपर अवलम्बित अछि। एकर शीर्षक सेहो अत्यन्त सार्थक अछि जे कथाक मूल उद्देश्यकेँ प्रकाशित करैत अछि। अर्थात् कर्त्ताकेँ ओहने फल भेटैत छैक जेहन ओकर कर्म रहैत छैक। कृत कर्म कखनो निष्फल नहि होइत छैक, तेँ कोनो काजमे सफलताक हेतु कर्त्ताक सक्रियता आवश्यक अछि। ओ जतबे सक्रिय रहत ततबे शीघ्र आ सुन्दर परिणामक भोक्ता भऽ सकैत अछि अन्यथा सदिखन सांसारिक शोषण, उत्पीड़न आ प्रताड़नक भागी बनल रहत। कथामे सरसताक भने अभाव होअओ मुदा वैचारिकताक धरातलपर ई उत्तम कथा थिक।

संग्रह पहिल कथाक शीर्षक थिक 'अप्पन काज अपने चिन्हू'। एहि कथाक केन्द्रीय बिन्दु अछि बिखरैत संयुक्त पारिवारिक व्यवस्था

आ तकर स्थानापन्न होइत एकाकी पारिवारिक व्यवस्थाक बीच सामंजस्यक स्थापनाक विवेचन। एकर कथानायक हीरालाल बाबाकेँ चारिटा बेटा छनि आ चारू बेटाकेँ क्रमश: पाँचटा बेटी एकटा बेटा, चारिटा बेटा आ एकटा बेटी, दूटा बेटा आ एकटा बेटी तथा एकटा बेटा मात्र छनि। एहि तरहेँ चारू बेटामे पारिवारिक सदस्यक असमानता आ तदनुसार व्ययक असमानता छनि। तेँ चारू भाइ भिन्न भऽ गेलाह। तथापि चारू भैयारीमे परस्पर मेल छनि आ चारू अपन-अपन परिवारकेँ डेबैत आनो भाइक मदतिक हेतु सतत तत्पर रहैत छथि। परिणामत: पारिवारिक क्लेश नहि छनि। तेँ हीरालाल बाबाक एहि कथनमे दम छनि जे जँ लोक व्यक्तिगत स्वार्थकेँ तिलांजलि दऽ केवल अपनेमे लिप्त नहि भऽ आनो परिवार, समाज आ राष्ट्रक प्रति अपन दायित्वकेँ ध्यानमे राखय तँ एकाकीयो परिवार संयुक्ते परिवार जकाँ मर्यादित ओ समुन्नत जीवन जीबि सकैत अछि।

अगिला कथाक शीर्षक थिक 'लजाउ काज'। एहि कथामे भारतीय चिन्तन धाराक अनुरूप 'उत्तम खेती मध्यम बान अधम चाकरी भीख निदान'केँ प्रतिष्ठापित करबाक प्रयास भेल अछि। जीवनलाल कक्काक पुत्र मनोहर बी.ए. पास कऽ गामक आने युवा जकाँ नोकरी करबाक दिस आकर्षित होइत अछि। तकर कारण अछि नोकरिहारा लोकनिक रहन-सहनक स्तरमे बढ़ोत्तरी। मुदा नोकरी नहि केवल आत्मसम्मानक घातक होइत अछि अपितु ई व्यक्तिकेँ अपन परिवार ओ समाजसँ बहिष्कृत जीवन जीबाक हेतु विवश कऽ दैत छैक। एहि वृत्तिक लोक अपन रहन-सहनक स्तरक वर्द्धिष्णुता ओ संरक्षणमे ततेक बेमत भऽ जाइत अछि, जे ओकर आत्मा मृतप्राय भऽ जाइत छैक, भने लौकिक सुविधा-सम्पन्न किएक ने भऽ जाय। दोसर दिस किसानी अपन समाज, परिवार ओ संस्कृतिक संग जीबाक अवसर प्रदान करैत छैक आ आत्मोन्नतिक अवसर, सहज स्वातंत्र्य

सेहो प्रदान करैत छैक। मानवक मूलभूत आवश्यकताक पूर्तिमे एकर प्राथमिक स्थान छैक मुदा समाजमे कृषि-कर्म उत्तम कोटिमे परिगणित नहि छैक, तेँ पढ़ल-लिखल युवाक हेतु ई लजाउ काज बुझल जाइत छैक जखन कि चाकरीक अत्यन्त नीचो काज कयनिहारकेँ सामाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त होइत छैक। जीवनलाल काका मनोहरकेँ वास्तविक लजाउ काज नोकरीसँ मुँह मोड़ि अत्यन्त प्रतिष्ठित कृषिकर्म दिस अभिमुख करबामे सफल होइत छथि आ युवा वर्गकेँ, खास कऽ शिक्षित समुदायकेँ वैज्ञानिक कृषि दिस आकृष्ट करबाक प्रयास करैत छथि जे पर्याप्त आर्थिक सम्पन्नताक संगहि सामाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त करयबामे सक्षम अछि। कथा कृषि-कर्मक प्रति समाजक रूढ़ अवधारणापर कशाघात करैत अछि।

'सीमा बद्ध जीवन' संग्रहक तेसर कथा थिक। वस्तु, घटना ओ उद्देश्यसँ रहित ई गल्प निबन्धक स्वच्छन्द शैलीक आनन्द प्रदान करैत अछि जाहिमे मिथिलाक एक गोट बाढ़िग्रस्त गामक प्राकृतिक आपदाक प्रति सहिष्णुताक चित्र भेटैत अछि।

'जिनगीक हिसाब' संग्रहक पाँचम कथा थिक। दू पीढ़ीक मानसिकताक अन्तर जन्य संघर्षपर आधारित एहि कथामे कथाकार ई दर्शयबाक प्रयास कएलनि अछि जे जखन पूर्व पीढ़ीक लोक अपन अवस्था ओ परिवेशक संग सामंजस्य स्थापित करबामे असमर्थ होइत छथि तँ सामाजिक आ पारिवारिक जीवनमे संघर्ष ओ क्लेशक बीजवपन भऽ जाइत छैक। तेँ प्रत्येक पीढ़ीकेँ अपन अवस्थाक अनुरूप कर्त्तव्य ओ अधिकार क्षेत्रकेँ सीमांकित करबाक चाही। कथाकार अत्यन्त चतुरतापूर्वक परमानन्द काका ओ खण्डिता काकीक मनोवैज्ञानिक विश्लेषण कएलनि अछि। एक दिस परमानन्द काका ससुरक पदवी पाबि अपन चारू पुतोहुक कार्य-व्यापारमे हस्तक्षेपकेँ परिहार्य बुझैत छथि, तँ दोसर दिस खण्डिता काकी अपन

चारू पुतोहुपर शासन करबाकेँ अपन अधिकार क्षेत्रक अन्तर्गत बुझैत छथि। एकर परिणामस्वरूप पारिवारिक कलहक संभावना बनैत छैक आ एहि कलहसँ बचबाक हेतु परमानन्द काका अपने कनियाँसँ रुस्सा-फुल्ली कऽ उठैत छथि। प्रत्येक पीढ़ीक लोककेँ अपन कार्य क्षेत्रमे स्वतंत्रता भेटबाक चाही, कथाकार एहि मान्यताक पक्षधरताकेँ कथाक उद्देश्यक रूपमे विज्ञापित कएलनि अछि।

छठम कथाक शीर्षक थिक 'अपना जनैत'। एहि कथामे एकटा नोकरिहाराक कुण्ठा आ ताहिसँ त्राण हेतु ओकर आकुलताकेँ केन्द्रबिन्दु बनाओल गेल अछि। नोकरिहारा छथि रघुवंश काका जे जुआनीमे शिक्षकक नोकरी पाबि आन गाम चलि जाइत छथि आ चालीस वर्षक बाद अवकाश प्राप्त कऽ गाम घुमैत छथि। नोकरीमे रहबाक कारणेँ गाम-समाजसँ कटल रघुवंश जखन गाम अबैत छथि, ताधरि गाम-घरक परिवेशमे आमूल परिवर्त्तन भऽ गेल रहैत छैक। एहि परिवेशमे ओ जेना गामक हेतु अनभोआर बनि गेल रहैत छथि। तेँ गाम-समाजमे पुन: सक्रिय जीवन बितयबाक हेतु गामक लोक सभसँ, खास कऽ नवका पीढ़ी सभसँ सुपरिचित होमऽ चाहैत छथि। एहि हेतु ओ जीविते अपन श्राद्धकर्मक भोज करऽ चाहैत छथि आ समाजक अभिन्न अंग बनि जीबाक हेतु वर्त्तमान पीढ़ीक संग तालमेल बैसाबय चाहैत छथि। ओना हुनक कुण्ठा दूर करबाक जाहि उपाय दिस कथाकार इंगित कएलनि अछि ताहिसँ उत्तम भऽ सकैत छल जे ओ अपन पुन: परिचिति नवका पीढ़ीक शैक्षणिक व्यवस्थामे अपन योगदानक रूपमे कम्प्यूटर इन्स्टीच्यूट किंवा कोचिंग इन्स्टीच्यूट खोलबितथि आ युवा शक्तिकेँ दक्षता प्राप्त करबामे सहयोग करितथि, जाहिसँ ओ लोकनि राष्ट्रसेवाक प्रशस्त मार्गक अवलम्बन कऽ सकितथि।

सातम कथा 'सुदृढ़ जिनगी' ग्राम्य जीवनक प्रति लोकजीवनक

व्यामोहक कथा थिक। एकर नायक सुशील नोकरी करबाक हेतु प्रवासी जीवन जीबाक हेतु बाध्य अछि। अल्पवेतन भोगी रहबाक कारणेँ ने अपने सौख-मनोरथ नीक जकाँ पुरा पबैत अछि आ ने पत्नीयेँ वा बच्चे सभक। नागरिक जीवनक सौविध्यो ओकरा प्राप्त नहि छैक तथापि जेना-तेना दुनू प्राणी जीवन खेपैत मशीनी जीवन जीवैत जा रहल अछि। ओकरा गाम-समाज तँ छुटिये जाइत छैक, संस्कृति आ संस्कार, नेह आ छोह सेहो विस्मृत भऽ जाइत छैक। ओ केवल रोटीक हेतु पाइ बनयबाक मशीन भऽ कऽ रहि जाइत अछि। जखन ओकरा बहुत दिनक बाद अपन शिक्षक नीलकण्ठ बाबा मन पड़ैत छथिन तँ हुनक दरश-परस हेतु गाम कऽ विदा होइत अछि। अपन घराड़ी ढहि-ढनमना जयबाक कारणेँ हुनके घरपर आश्रय लैत अछि आ बाबासँ जखन भेँट होइत छनि तँ ओ कहैत छथिन, “बौआ,... एक्के बेर बुझि लहक जे 1967 इस्वीक रौदी, 1971 इस्वीक सालो भरिक बरखा, 1987 इस्वीक बाढ़ि आ 1988 इस्वीक भुमकम, सभ भेल, मुदा जेही घराड़ीपर घर पहिनौं छल तेतइ अखनो अछि। ई तँ जीवनक खेल छी। सुदृढ़ भऽ खेलैक अछि। (पृ. 91)” बाबाक एहि उक्तिमे ग्राम्य जीवनक प्रति हुनक निष्ठा आ प्रवासीकेँ ओहि निष्ठाक निर्वाहक प्रति अडिग होयबाक उपदेशपूर्वक सर्वसामान्य नागरिक जीवनक कुत्सित पद्धतिपर ग्राम्य जीवनक स्निग्धताक विजयक उद्घोष कएल गेल अछि।

अन्तिम कथा ‘मुराम जगह’ ऐतिहासिक बालकथा थिक जाहिमे कुमारघाट गामक दुइ गोट छात्र गुलटेन आ तेतरकेँ ट्यूटोरियल क्लासमे शिक्षक द्वारा लक्ष्मीनाथ गोसाँइक जीवन गाथाक संक्षेप पढ़ाओल जाइत छनि आ ताहि माध्यमे पाठककेँ ओहि मैथिल सन्तक विषयमे अभिज्ञान होइत छनि।

एहि तरहेँ संग्रहक कथा सभ मिथिलाक जन-जीवनक

सकारात्मक चित्र मनोरंजक शैलीमे उपस्थापित कयने अछि। कथा सभकेँ पढ़ैत काल मिथिलाक लोकजीवन, एहि ठामक गप्प-शैली साकार भऽ उठल अछि। संगहि ग्राम्य जीवनक कठिनता, सुख-सुविधा, भौगोलिक परिदृश्य, प्राकृतिक छवि, सांस्कृतिक पक्ष, नोंक-झोंक आदि पाठककेँ आद्योपान्त बन्हने रहैत छैक। कथाकार ग्राम्य जीवनक विविध सन्दर्भ, अनुभव आ संवेदनाकेँ एहि तरहेँ मूर्त्त कऽ दैत छथि जाहिसँ लोकजीवन अपन सम्पूर्णतामे स्पन्दित भऽ उठैत अछि आ पाठक रसास्वादनमे निमग्न भऽ जाइत छथि। स्वभावत: प्रत्येक कथा लेखककेँ एकटा अन्तर्दृष्टिसम्पन्न रचनाकारक रूपकेँ निखारैत चलैत छनि। संग्रहक कथा सभ आत्यन्तिक रूपेँ यथार्थक चित्रणपर आधारित अछि जाहिमे कतहु कृत्रिमताक आभास नहि होइत अछि। एहिमे चित्रित पात्र लोकनिक वार्तालापक माध्यमे कथाकार व्यापक जीवन-मूल्यक अन्वेषण दिस उन्मुख देखि पड़ैत छथि। अवश्ये वर्णनात्मकताक अतिव्याप्ति ओ असहज वर्तनी, भाषा-प्रवाह ओ कथ्यक संप्रेषणीयताकेँ अनेक ठाम बाधा पहुँचबैत देखि पड़ैत अछि। संघर्षक अभावमे अधिकांश कथा गप्प साहित्येक लोकरंजकता धरि आबद्ध बुझना जाइत अछि। तथापि एहि संग्रहमे कथाकारक भाषाक सम्प्रेषणीयता, समाजसँ जुड़ल वस्तु-विन्यासक प्रति प्रतिबद्धता ओ रोचक शैली हिनक लेखन कौशलकेँ गरिमा प्रदान करैत अछि। ❑

कथाकृति: 'बजन्ता-बुझन्ता'

कथाकृति साम्प्रतिक गद्य साहित्यक सर्वाधिक लोकप्रिय अंग अछि। एकरा द्वारा पाठककेँ अल्प समयमे मनोरंजन ओ ज्ञान दुनू एके संग उपलब्ध भऽ जाइत छैक। अनादि कालसँ मानवमे कथा कहबाक ओ सुनबाक प्रवृत्ति रहल अछि। प्राचीन कालमे श्रुत साहित्यक रूपमे कथाक प्रचलन छल। एकरा लोककथा कहल जाइत छैक। ई श्रुत साहित्य निरन्तर एक कण्ठसँ दोसर कण्ठ धरि क्रमश: कण्ठान्तरित होइत रहैत छल आ एही क्रममे एहिमे निरन्तर परिवर्तन होइत रहैत छलैक। लोकरंजन ओ लोकशिक्षणक महत्त्वपूर्ण साधनक रूपमे ई जनसमाजमे प्रचलित रहल अछि।

समाजमे निरन्तर विभिन्न प्रकारक घटना-उपघटना घटैत रहल अछि आ ओहि घटनाक विवरण सुनि-सुना कऽ लोक परितृप्तिक अनुभूति करैत रहल छथि। कथा कहबाक-सुनबाक ई प्रवृत्ति मानवक मूल प्रवृत्ति जिज्ञासासँ सम्बद्ध रहल अछि आ 'फेर की भेलैक?' तकर जिज्ञासा समस्त सभ्य समाजमे आदिकालेसँ वर्तमान रहल अछि। मैथिली लोकसाहित्यमे अनेक कोटिक वीरगाथा, प्रेमगाथा, धार्मिक कथा आदिक बाहुल्य देखल जाइत अछि। एहन गाथा सभकेँ कथावाचक लोकनि अपन हाव-भाव ओ स्वर-भंगिमा द्वारा सुनबैत छलाह जाहिसँ श्रोताकेँ रसानुभूति होइत छलैक। वाचिक कथा परवर्ती कालमे लिखित कथाक रूपमे समक्ष आबऽ लागल। लिखित कथाक रसानुभूति पाठक लोकनि मानस ओ हृदयसँ करैत छथि। स्वभावत: एहि कोटिक कथाक प्रणयनमे कथाकारकेँ विशेष सावधान रहऽ पड़ैत छनि। ओ कथ्यकेँ एहि तरहेँ प्रस्तुत करबाक लेल बाध्य होइत छथि जाहिसँ श्रोता हुनक भावकेँ सहजताक संग ग्रहण कऽ

अनुप्राणित भऽ सकथि।

मैथिलीमे लिखित कथा आधुनिक कालक देन थिक। आरम्भमे एहि कोटिक कथाकृतिक दूटा स्थूल स्वरूप समक्ष आएल। ई दुनू छल क्रमश: उपन्यास ओ लघुकथा। उपन्यासकेँ मानवक वास्तविक जीवनक काल्पनिक कथा कहल गेल अछि। मानव चरित्रक व्याख्या ओ ओकर रहस्यक उद्घाटन उपन्यासक लक्ष्य होइत अछि। एकरा आधुनिक जीवनक महाकाव्य कहल गेल अछि जे एकर व्यापकता ओ आकारक दीर्घताकेँ स्थापित करैत अछि। वस्तु, चरित्र-चित्रण, कथोपकथन, शैली, देश-काल ओ वातावरण तथा उद्देश्य आदि एकर तत्त्व होइत अछि। एहिमे मानव जीवनक यथार्थक चित्रण अभिप्रेत रहैत अछि। वस्तुत: ई विशालकाय गद्यमय उपाख्यान थिक जाहिमे एकेटा कथाक अन्तर्गत यथार्थ जीवनक प्रतिनिधित्व करयवला पात्र ओ हुनका लोकनिक कार्य-व्यापारक चित्रण रहैत अछि।

दोसर दिस लघुकथा रसोद्रेक उत्पन्न करऽवला एकटा एहन आख्यान थिक जे एके बैसारमे पढ़ल जा सकय। एहिमे मानव जीवनक कोनो एकटा अंग किंवा मनोभावक प्रदर्शन द्वारा रसोद्रेक कराओल जाइत अछि। अवश्ये एहिमे मानवक सम्पूर्ण जीवनक व्याख्या नहि कऽ ओकर एकटा खण्डचित्र उपस्थापित कएल जाइत अछि आ ओहि घनीभूत क्षणक अनावरणसँ पाठकीय संवेदनाकेँ जाग्रत कएल जाइत छैक। जीवनक कोनो रहस्य, मनोवैज्ञानिक सत्य किंवा जीवनक यथार्थक चित्रण लघुकथाक आधार होइत अछि आ ई समाजक प्रवृत्तिकेँ अभिव्यक्त करैत ओकर समुचित विन्यास, सुधार ओ निराकरणक संदेश प्रक्षेपित करैत अछि। लघुकथामे सेहो वएह तत्त्व सभ अनुगुम्फित रहैत अछि जे उपन्यासक प्रणयनक आधार रहैछ। तथापि संक्षिप्तता ओ क्षिप्रता तथा तात्त्विक सन्तुलने कोनो कथाकेँ उत्कृष्ट स्तर प्रदान करैत छैक।

मैथिलीमे लघुकथा अँग्रेजीक 'शॉर्ट स्टोरी'क अनुवादक रूपमे गृहीत भेल अछि। एकर आकार-प्रकार ओ वस्तु-विन्यासक एकटा सुस्थिर रूप स्थापित भऽ गेल अछि। मुदा एहि तथाकथित लघुकथाक आकार ओ प्रकृतिसँ भिन्न अत्यन्त लघु आकारक कथा सभ सेहो लिखल जाय लागल। एहि कोटिक कथामे कथा तत्त्व सभमे चरित्र-चित्रण, कथोपकथन, वर्णन-विन्यास आदिकेँ गौण कऽ देल गेल जाहिसँ एकर आकार-प्रकार अत्यन्त संक्षिप्त भऽ गेल अछि। तथापि ई कथा सभ क्षण विशेषक उद्घाटन द्वारा पाठकीय संवेदनाक जागरणपूर्वक ओकरा चमत्कृत करबामे सफल सिद्ध भेल अछि। एहि तरहक अत्यन्त संक्षिप्त लघुकथाक स्थापनाक बाद ओकर नामकरणक आवश्यकता अनुभव कएल गेल। एहन कथाकृति सभ आख्यान, आख्यायिका, गल्प, लघुकथासँ भिन्न प्रकृतिक रहबाक कारणेँ वास्तवमे लघुकथा कहयबाक अधिकारी भेल अछि आ शॉर्ट स्टोरीक हेतु कथा, कहानी, गल्पे आदि शब्दकेँ मान्य बुझल जाइत रहल अछि।

वर्तमानमे एहि प्रकारक लघुकथाक हेतु 'क्षणिका' शब्दक प्रयोग सेहो भऽ रहल अछि आ 'बीहनि कथा' शब्दक प्रयोग सेहो। बीहनि कथा अंग्रेजीक 'सीड स्टोरी'क मैथिली अनुवाद थिक जकरा बीया कथा, बीजकथा सेहो कहल जा सकैत अछि। जेँ लऽ कऽ ई कथाविधा आब सर्वतन्त्र स्वतंत्र अस्तित्व धारण कऽ लेलक अछि, तेँ एकरा लघुकथे नामसँ अभिहित करब बेस उपयुक्त बुझना जाइछ कारण जे ई कोनो कथाक बीजस्वरूप नहि अछि। एकरा विस्तारित कऽ कथाक सृजनक अपेक्षा नहि कएल जा सकैछ, अपितु ई एकरा स्वतंत्र आ स्थापित विधा भऽ गेल अछि।

एहि प्रकारक लघुकथाक अपन इतिहास छैक। 1950-51क अभ्यन्तर वैदेहीमे पं. चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' 'गल्पक प्रपौत्र'

अभिधानसँ एहि कोटिक अत्यन्त लघु आकारक कथाक प्रकाशन करौने छथि। प्रसिद्ध कथाकार 'ललित' 'गल्पक प्रपितामह' शीर्षसँ एहि प्रकारक कथाक प्रणयन करैत छलाह। 7 दिसम्बर 1937क मिथिला-मिहिरमे आचार्य सुरेन्द्रझा 'सुमन' एही कोटिक लघुकथा 'विपरीत घटना' प्रकाशित करौने छलाह जकरा एहि कोटिक लघुकथाक आद्य स्वरूप कहल जा सकैछ। डॉ. श्री अमरनाथ झा रचित 'क्षणिका', श्री प्रदीप बिहारी कृत 'खण्ड-खण्ड जिनगी' आदि पोथी एही विधाक रचनाक प्रसिद्ध संग्रह सभ थिक। एहि क्षेत्रमे श्री मनोज कुमार कर्ण 'मुन्ना'जीक प्रशस्ति सर्वविदित अछि। श्री अनमोल झा एहि विधाक अनेक पोथीक प्रणयन-प्रकाशन करा चुकल छथि। ई विधा आब ततेक लोकप्रिय अछि जे खास कऽ नव ओ पुरान तूरक अनेक लेखक लोकनि एहि विधाक समृद्धिक हेतु निरन्तर दत्तचित्त छथि।

स्वनामधन्य श्रीजगदीश प्रसाद मण्डल जे कथा विधाक पोथी प्रणयनक दृष्टियेँ शिखर-पुरुषक रूपमे राष्ट्रीय स्तरपर मान्य छथि, लघुकथाक क्षेत्रमे सेहो दुइ गोट पोथीक प्रणयन कऽ एहि विधाकेँ सम्पुष्ट कएलनि अछि क्रमश: 'तरेगन' आ 'बजन्ता-बुझन्ता'। बजन्ता-बुझन्ताक विहंगावलोकन एहि निबन्धक प्रतिपाद्य अछि।

'बजन्ता-बुझन्ता' लघुकथा संग्रहमे श्रीमण्डलजीक अड़सठि गोट लघुकथा संग्रहीत भेल अछि। एहि लघुकथा संग्रहक समेकित विवेचन करैत श्री गजेन्द्र ठाकुरक उक्ति समीचीन छनि जे 'बजन्ता-बुझन्ता' बिहनि कथाक सुग्गा ओहन पोसा अछि जे बिनु पिजरेक मनुक्खक संग रहैए। एहि बिहनि कथा-संग्रहमे एहि तरहक बिम्बक संख्या कथाक संख्यासँ बेसीए अछि, कम नै। 'चौकीदारी'मे अठ-अठ महीना पेट बान्हि खटबाक बिम्ब अछि तँ मनोज कुमार कर्ण प्रसिद्ध मुन्नाजीकेँ समर्पित 'पटोर' बीहनि कथामे 'जेना अन्हार घर साँपे-साँप

होइ छै तहिना ने दुनू बेकती छी' बीहनि कथाक कथाकेँ चौबटियासँ दोसर दिशा दिस घुसका दै छै, आगाँ बढ़बै छै आ एहि बिहनि कथा संग्रहक कथा सभक विषयमे समदाहीक ई वक्तव्य चोटगर बुझाइए- 'बड़ काग भाषा सुननिहारि भेल छथि।' एतावता श्रीठाकुर एहि कथासंग्रहक कथासभकेँ मैथिलीक श्रेष्ठ लघुकथा माननलनि अछि।

एहि लघुकथा सभमे जे बिम्ब सभ प्रस्तुत भेल अछि से युगजीवनक प्रतिनिधित्व करैत अछि। 'बुधनी दादी'क दादी मोबाइलपर आश्रित देखि पड़ैत छथि तँ 'अनदिना'क मास्टर रामकिसुन बकरी-छागरक गनतीमे ओझरायल रहैछ। 'काल्हि दिन'क कथानायक रोजी-रोटीक हेतु व्यथित अछि तँ 'मुँहक बात मुहेँमे'क घटनामे नामेमे गुणक आरोपसँ सीदित होइत अछि। 'सोग'क प्रोफेसर लीलाधर नेना सभक शिक्षाक हेतु चिन्तित छथि तँ 'पनचैती'क सोनेलाल बाबा इन्दिरा आवासक टोहमे लागल रहैत छथि। एही तरहेँ समस्त कथामे समाजक दु:ख-दैन्यक सूक्ष्म चित्र सभ पाठकक मनपर चिरस्थायी प्रभाव छोड़बामे समर्थ भेल अछि तथा ओकर मानसकेँ अभिभूत कऽ चिन्तनक हेतु बाध्य करैत अछि।

यद्यपि लघुकथा किंवा बीहनि कथामे वर्णन-विन्यासक हेतु पर्याप्त अवकाश नहि रहैत छैक तथापि श्रीमण्डलजीक लघुकथा सभमे वातावरण निर्माणक हेतु अत्यन्त संक्षिप्त वर्णन-विन्यासक प्रयोग कऽ कथामे गांभीर्य आनल गेल अछि। द्रष्टव्य अछि 'कचोट' कथाक ई प्रसंग जाहिमे निसभेर रातिक वर्णन एहि स्वरूपक अछि- 'एक तँ सौन-भादवक अन्हार, तैपर मेघडम्बर जकाँ मेघौन। एत्ती रातिमे की करब? ने गाममे डाक्टर छथि जे लालटेनो हाथे बजा अनबनि। थाल-किचारक रस्ता, चारि किलोमीटरपर डाक्टरक घर।' ई रोगिनीक पतिक व्यग्रताकेँ सान्द्र बना दैत अछि।

एहिना 'फज्झति' कथामे सोनेलाल आ जीयालालक मैत्रीक

वर्णन करैत कहल गेल अछि जे 'सोनेलाल आ जीयालालक बीच करीब बीस वर्षसँ चिन्हा-परिचय छनि। ओना, दू गामक छथि मुदा सटल गाम रहने खेतो एकबद्धू आ हाटो-बाजारमे भेँट-घाँट होइते रहै छनि। कहैले दुनूक बीच अपेक्षो छनि, एकबद्धू खेत रहने अड़ियो छथि मुदा दुनू गामक विपरीत सामाजिक चालि-ढालि रहने बात-विचारमे अन्तरो छन्हिएँ।'

एहि तरहेँ कथाकार अल्प अवकाशक अछैतो अपन लघुकथा सभमे यत्र-तत्र सुचारु वर्णन-विन्यासक प्रयोग कऽ कथ्यक अनुकूल वातावरण निर्माणमे सफल भेल छथि जे हिनक लघुकथाक वैशिष्ट्य कहल जा सकैत छनि।

श्रीमण्डलजीक लघुकथा अन्यतम वैशिष्ट्य थिकनि हिनक आलंकारिक भाषाक प्रयोग। बहुधा ई नित्य-नूतन उपमानक प्रयोग द्वारा कथ्यकेँ सूक्ष्मतापूर्वक पाठक धरि सम्प्रेषित करबाक आग्रही छथि। उदाहरणक हेतु हिनक किछु निविष्ट प्रयोग सभ द्रष्टव्य अछि, यथा-

- जहिना कुम्हारकेँ भादवक रौद बादलमे झँपा गेने दुर्दिन आगूमे नाचए लगैछ तहिना बुधनी दादीकेँ साल भरिसँ भऽ रहल छैन।

- जहिना नन्हकी काँट बूढ-बुढ़ानुसक नजरियोपर नै पड़ैए आ धिया-पुता लप दऽ निकालि लैए, तहिना डाक्टर साहैबकेँ अन्तिम विचार मनमे अँटैक गेलैन जे भागेश्वर भैया आन थोड़े छिआ जे लाज-संकोच करब।

- सीकसँ खसल मटकूर जकाँ।

- जहिना स्वर्गक आशामे लोक सभ किछु दान करैले तैयार रहैए तहिना पटोरक आशामे तेतरी भेल।

- घिड़नीक तिनकमिया वंशीक घबाएल माछ जकाँ बुधियार

काका बीस बर्खक नोकरीक पछाइत घबाएल मने अपना दिस तकलैन।

- इचना माछ जकाँ लटपटाएल छी।

- सत्तैर बर्खक अपनाकेँ नै बुझि दादी-माँकेँ छोड़ल केचुआ जकाँ लहलही छैन्हे।

- जहिना हवा पीब अधमरुओ साँप फनफना उठैत अछि तहिना मनमे उठल।

- जहिना अकासक बून पड़िते पानि रंग जकाँ चुहुटि धरैत तहिना दुनूक बीच भेल।

- मनक बात मनेमे अँतरी जकाँ घुरियाइत बहत्तैर हाथक भऽ गेलैन।

- जेना केरा गाछक वा अनरनेबा गाछक पानि सुखने खलपैट जाइए तहिना भेने घरक सभ कपड़ो-लत्ता आ जुत्तो-चुप्पल भऽ गेलैन।

- जहिना पएर पड़िते साँप फनफना उठैए तहिना घटक बाबाकेँ फनफनी उठलैन।

- उपरका जहाज जकाँ स्त्रीगणक गप हवाइ भेल।

- रोड़ाएल दालिक सुगन्ध जकाँ अनुमान लगबए लगली।

- गणेशजी जकाँ बुझबो अनिवार्य होइ।

- कोसी-कमलाक एकबट्ट भेल पानि जकाँ घोर-मट्ठा। आदि।

एहि तरहेँ विभिन्न उपमानक प्रयोग द्वारा कथाकार व्यंजना शक्तिक माध्यमे कथ्यकेँ क्षिप्रताक संग पाठक धरि संप्रेषित कऽ कथाक चारुता, ग्राह्यता एवं सम्प्रषणीयतामे अभिवृद्धि कएलनि अछि।

श्रीमण्डलजी ग्राम्य जीवनक कथाकार छथि। तेँ ओ विषयक चयन अपन चारू कात घटैत घटनावलीक आधारपर कएलनि अछि जे यथार्थपरक आ विश्वसनीय अछि। तेँ हिनक कथामे सहजता छनि आ कथा सभ मनोरम भेलनि अछि।

विषयक दृष्टियेँ कथाकार मानव जीवनक विभिन्न विसंगतिकेँ प्रश्रय देलनि अछि। उदाहरणक हेतु किछु कथाक विषयपर ध्यान देल जा सकैछ। 'मुँह-कान'कथामे बैंक द्वारा कर्ज दऽ कऽ पशुपालककेँ रोजी-रोटी उपलब्ध करयबाक सरकारी व्यवस्थापर व्यंग्य अछि। सुनरलाल एक्कैस हजार टाका कर्ज लऽ गाय कीनैत छथि। ओकर खोराकी से जुटयबाक छनि। मुदा गायसँ जे आमदनी होयतनि ताहिसँ खोराकियो नहि जुटा पओताह किएक तँ गाइक दाम बैंके तय करैत अछि1 तखन ई प्रश्न सहजे उठैत अछि जे तखन बैंकक कर्ज सधत कोना?

एहि तरहेँ सरकारी तंत्र द्वारा पशुपालकक अप्रत्यक्ष शोषणकेँ विषयक रूपमे राखि ई कथा लिखल गेल अछि। अवश्ये एहि व्यवस्थासँ बैंककेँ जे लाभ होइक मुदा पशुपालक ठकैतीमे पड़ि जाइत अछि आ अन्तत: कर्जमे डूबि जाइत अछि। भने ओकर गाय पोसबाक शौख पूर होइत छैक मुदा से लाभकर नहि रहैत छैक।

'अनदिना' कथामे शिक्षा जगतमे व्याप्त विसंगतिकेँ विषय रूपमे राखल गेल अछि। शिक्षक अमरनाथ गुरुजी तँ बनि जाइत छथि मुदा समयपर दरमाहा नहि भेटबाक कारणेँ सीदित रहैत छथि। एहन परिवेशमे ओ नेना सभक शिक्षापर की ध्यान दऽ सकैत छथि? ताहूपर बेसीकाल एहि शिक्षक समुदायकेँ शिक्षकेतर कार्य जेना जनगणना, पशुगणना, मतगणना आदिमे लगा देल जाइत छनि। शिक्षा-व्यवस्थाक एहि विसंगतिपर व्यंग्य कथाकारक उद्देश्य छनि।

'कनीटा बात' शिक्षाप्रद कथा थिक। एकर कथानायक नेना छथि। ओ अपन ककाक संग पाइ-कौड़ीक मामिलामे झूठक व्यवहार कऽ दैत छथि। तथापि ओ अनुभव करैत छथि जे झूठ बजबाक कारणेँ ओ घृणाक पात्र भऽ गेल छथि। बाल मनक मनोवैज्ञानिक विश्लेषण एहि कथामे अत्यन्त सूक्ष्म रूपेँ उद्घाटित भेल अछि।

'पनचैती' कथामे राजनीतिक जगतमे व्याप्त भ्रष्टाचारकेँ देखार कएल गेल अछि। सोनेलाल बाबा इन्दिरा आवास चाहैत छथि। विधायकक प्रतिनिधि हुनका इन्दिरा आवास देब गछैत छनि। ओ ओही विधायककेँ भोट दऽ दैत छथिन। विधायकक जितलाक बाद सोनेलाल प्रतिनिधिसँ भेट करैत छथि। प्रतिनिधि हुनकासँ सुविधा-शुल्कक याचना करैत छनि। सोनेलाल बाबा अपन भोट गमयबाक पश्चात्तापटा कऽ कऽ रहि जाइत छथि।

'घबाह ट्यूशन' लघुकथामे ट्यूशन व्यवस्थापर व्यंग्य कएल गेल अछि। पहिलुका शिक्षण-व्यवस्थामे शिक्षक लोकनिकेँ समाजक सहयोग भेटैत छलनि आ सम्मानो। तेँ ओ सभ नीक जकाँ अपन विद्यार्थीकेँ आगू बढ़यबामे रुचि लैत छलाह। मुदा शिक्षाक सरकारीकरण आ खास कऽ प्राइवेट स्कूल सभक बाढ़ि आबि गेलासँ शिक्षक लोकनिक ध्येय केवल पाइ कमेनाइ रहि गेलनि अछि। ओ लोकनि विद्यालय-महाविद्यालयमे पर्याप्त शिक्षा प्रदान नहि कऽ शिक्षाक व्यवसायीकरण कऽ देलनि अछि आ ट्यूशन अनिवार्य भऽ गेल अछि। मुदा ट्यूशन व्यवस्थासँ एक दिस जँ गरीब-गुरबाक नेना अर्थाभावक कारणेँ ढंगसँ शिक्षा ग्रहण नहि कऽ पबैत अछि तँ दोसर दिस नारी-शिक्षाक बढ़ोत्तरीक संग शुचिता सेहो प्रभावित भऽ रहल अछि। तेँ कथाकार एहि व्यवस्थाक प्रति जुगुप्साक भाव जगयबाक संदेश आ विद्यालयीय शिक्षा-पद्धतिकेँ सुदृढ़ करबाक संदेश प्रदान कएलनि अछि।

‘भरमे-सरम’मे शिक्षा मित्रक बहालीपर व्यंग्य कएल गेल अछि। शिक्षा मित्रमे बहुधा अनपढ़े-गमार लोकनिक बहाली भेलनि। ओहिमे एहनो लोक शिक्षक बनि गेलाह जनिका अपनो नाम ठीकसँ लिखऽ नहि अबैत छलनि। भ्रष्ट-व्यवस्थामे सभ केओ सर्टिफिकेटक जोगाड़मे सफल होइत गेल आ एहनो लोक बहाल भऽ गेल जकर आयु सर्टिफिकेटमे पुत्रोक आयुसँ कम दर्शा कऽ नोकरी प्राप्त करा देल गेलैक। शिक्षा मित्रक बहालीमे भेल भ्रष्टाचारकेँ एहि कथाक माध्यमे उजागर कएल गेल अछि।

‘बुधिबधिया’ कथामे कपटी मित्रक प्रति व्यंग्य कएल गेल अछि। एहि कथामे रामकिसुन आ देवनारायण परस्पर मित्र छथि। रामकिसुनकेँ टाकाक बेगरता रहैत छनि। ओ देवनारायणसँ टाका मङैत छथिन। मुदा देवनारायण टका अछैतो हुनका पैंच नहि देबए चाहैत छथिन किएक तँ मित्रसँ सूदि कोना लेताह। तेँ ओ लाथ कऽ दैत छथिन आ अपना पत्नीक कोसलियासँ सामान्यसँ बेसी सूदिपर टाका दिया देबाक आश्वासन दैत छथिन। गाम-घरमे चलैत एहि प्रकारक कुटिचालिक भर्त्सना कथाकारक उद्देश्य छनि। तथापि ई लघुकथा मनोरंजक होइतो एकटा चुटुक्का मात्र बनि कऽ रहि जाइत अछि आ पाठकीय मानसक अपेक्षित उद्वेलनमे समर्थ नहि बूझि पड़ैत अछि।

लघुकथोक क्षेत्रमे अनेक नूतन प्रयोग सभ भऽ रहल अछि। स्वभावत: इहो कथा सभ अनेक धारा-उपधारामे विभाजित कएल जा सकैत अछि। एहने एक गोट उपधाराक संकेत प्रसिद्ध लेखक प्रो. मायानन्द मिश्र कयने छथि। हुनक कहब छनि जे ‘हिन्दी ओ मैथिलीमे लघुकथाक नामे एकटा अन्ये कथाविधाक विकास भेल अछि जे समकालीन कथा-कहानी गल्प नहि थिक अपितु चुटुक्काक थिक (मैथिली कथाक विकास, स. बासुकी नाथ झा, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली, 2009, पृ. 39)। हुनक ई अवधारणा एहन लघुकथाकेँ

देखला उत्तर बनल होयतनि जाहिमे पाठकीय मानसकेँ उद्बुद्ध कऽ ओकरा चिन्तनक हेतु बाध्य करबाक सामर्थ्य नहि रहैत छैक। मुदा ओहूमे तात्कालिक आनन्दक प्राप्तिक संभावना अवश्य रहैत छैक। लघुकथाक ई लोकरंजक धारा सेहो लघुकथा लेखनमे विद्यमान अछि जकरा सभकेँ हास्य कथा, ललित कथा, सत्य कथा, गप्प आदिक अन्तर्गत राखल जा सकैत अछि। 'बुधि बधिया' एही कोटिक लघुकथाक मध्य परिगणनीय अछि। एहिमे देवनारायण सोझे रस्ते तँ सूदि नहि लेबाक स्वांग करैत छथि मुदा पत्नीक लार्थें पर्याप्त सूदिपर मित्रकेँ पाइ उपलब्ध करयबाक मानसिकताक अभिव्यक्ति द्वारा हास्यक पात्र बनि जाइत छथि।

'ओसार' लघुकथामे मातृवत्सलता सासुक स्नेहक अपरिमिति हृदयस्पर्शी अछि तँ पुतोहुक कुटिलता सेहो पाठकीय संवेदनाकेँ झकझोड़ि कऽ राखि दैत अछि। कथाकार एहि दुनू चरित्रक अत्यन्त अल्प शब्दमे चित्र प्रस्तुत कऽ लघुकथाकेँ तीक्ष्णता प्रदान कएलनि अछि। बेटा अपन वार्द्धक्यमे दुमंजिला घर बनबैत छथि। स्वभावत: हुनक बूढ़ माय जिनगी भरि घरक कष्टेमे रहै छनि। 'माए अहाँ श्रेष्ठ थिकहुँ। कोन कोठलीमे रहब पसिन्न हएत से कहू।' पुछलापर माए बुझैत छथि जे पुत्र मुँहछोहनि कऽ रहल अछि। ताधरि परिवार ततेक पैघ भऽ गेल छैक जे सभक अँटाबेस ओहू मकानमे सम्भव नहि छैक। तखन माए जँ कोठली लऽ लेथिन तँ से ककरो सोहयतैक नहियेँ। तेँ माय ओसारेपर रहब श्रेयष्कर मानैत छथि। कथाकार अत्यन्त सधल शब्दमे पुतोहुक मानसिकता व्यक्त करैत छथि- 'अपन जीत देखैत पुतोहु झाड़-झाड़ैत बजली- माएकेँ कहियो घरसँ सिनेह भेलैन, जे हेतैन?' एक तँ ओ ई कथमपि नहि चाहैत छथि जे सासु हुनक कोनो कोठली छापि लेथि, मुदा हुनक ओसारेपर रहबाक कथनसँ हुनका अपन जीत बुझना जाइत छनि। तेँ ओ हुनकापर एकटा बोझ आर

लादि देबए चाहैत छथिन जे हुनका घर सोहाइते नहि रहलनि अछि। कथा पारिवारिक जीवनक कूटनीतिपर असरदार व्यंग्य करबामे सफल भेल अछि।

'सजाए' नारी-विमर्शपरक लघुकथा थिक। एहिमे नारीक हकक लड़ाइकेँ उद्घाटित कएल गेल अछि। परिवारमे पुरुष वर्ग कमाइए आ नारी भानस-भात आदिमे लागल रहैत छथि। दुनू अपन-अपन जूति चलयबाक हेतु संघर्षशील रहैत छथि। पति अपने जूति जनयबाक कारण पत्नीक अनुकूलन नहि कऽ पबैत छथि आ रूसिकऽ खेत चलि जाइत छथि। एम्हर पत्नी सेहो रूसि कऽ भोजन नहि बनबैत छथि आ अपन अधिकारक हेतु, संघर्षरत होइत छथि।

'घटक बाबा' कथामे बाबा-पोतीक वार्त्ताक माध्यमे शिक्षित वरक संग अशिक्षिता कन्याक विवाहक अनमेल व्यवस्थाक प्रतिरोध कएल गेल अछि। पोतीक प्रश्न नारीवर्गक जागरणक प्रतीक थिक।

'मेकचो' कथामे लालफीताशाहीक कारणेँ लाभार्थीक दीनताक वर्णन भेल अछि। चुल्हाइ खादक हेतु ब्लॉकमे आवेदन दैत छथि। लालफीताशाहीक कारणेँ हुनका समयपर खाद नहि भेटि पबैत छनि आ खेती पछता भऽ जयबाक कारणेँ उपज कम होइत छनि। सरकारी तंत्रक अव्यवस्था दिस कथाकार एहि कथाक माध्यमे इंगित कएलनि अछि।

एहि तरहेँ 'बजन्ता-बुझन्ता'क लघुकथा सभ उक्ति, घटना, चारित्रिक वैशिष्ट्य, वर्णन प्रणाली, मनोवैज्ञानिक विश्लेषण ओ यथार्थक प्रति आग्रहक संग चरमोत्कर्ष धरि पहुँचैत अछि आ पाठकीय मानसकेँ उद्वेलित, चमत्कृत ओ किछु सोचबाक हेतु विवश करैत अछि। एकर कथा सभ विषय-विवेचन, संवेदनाक जागरण ओ चिन्तनक सूक्ष्मताक कारणेँ उत्कर्षपरक अछि। ❑

‘कम्प्रोमाइज’क वस्तु-विन्यास

‘कम्प्रोमाइज’ श्रीजगदीश प्रसाद मण्डल कृत नाटक थिक। एकर प्रकाशन 2017 मे भेल छल। एहि नाटकमे तेरह गोट दृश्य अछि। आने विधा जकाँ श्रीमण्डलजी एहू विधामे दर्जनाधिक पोथी प्रणयन कऽ एहि विधाक समृद्धिमे लागल रहलाह अछि। प्रस्तुत नाटक साम्यवादी विचारधारापर आधारित सामाजिक नाटक थिक जाहिमे स्वातंत्र्योत्तर मिथिलाक कृषि समस्यापर विमर्श करैत तकर समाधानक मार्गदर्शन कएल गेल अछि।

नाटककेँ अवस्थाक अनुकरण कहल गेल अछि- ‘अवस्थानुकरणं नाट्यं’। ई एकटा प्रयोगमूलक कला थिक। नाटकक सार्थकता तखने होइत छैक जखन ओकर अभिनय कएल जाइत छैक। नाट्य शास्त्रमे कहल गेल अछि जे-

न तज्ज्ञानं न तच्छिल्पं न सा विद्या न सा कला।

न तत्कर्मं न योगोऽसौ नाट्येस्मिनयन्न दृश्यते।।

अर्थात् संसारमे एहन कोनो ज्ञान, कोनो कला, कोनो विद्या, कोनो कर्म, कोनो शिल्प एहन नहि अछि जे नाटकमे नहि देखाओल जा सकैछ। तेँ उक्ति प्रसिद्ध अछि- ‘काव्येषु नाटकं रम्यम्’।

काव्यक एहि सर्वाधिक उत्कृष्ट विधामे रचना कऽ श्रीमण्डलजी मैथिलीक अभिवृद्धियेमे सहायक भेलाह अछि, सैह नहि, अपितु एहि लोकरंजनी साहित्यक माध्यमे युगीन विचारधाराक प्रसारक हेतु सेहो प्रयत्नशील भेलाह अछि।

नाटककेँ पंचम वेद कहल गेलैक अछि। एकरा द्वारा सभ आयु वर्गक, समस्त जातिक लोकक, सभ वर्ग ओ लिङ्गक लोकक मनोरंजन

सम्भव छैक। जेँ लऽ कऽ ई दृश्य विधाक काव्य थिक तेँ एहिमे ज्ञानीसँ लऽ कऽ मूर्खो सहृदयकेँ साधारणीकरण भऽ पबैत छैक। तेँ प्रभावान्वितिक दृष्टिञे सेहो काव्यक ई विधा सर्वाधिक लोकप्रिय विधा रहल अछि।

नाटकमे तीन गोट तत्त्वक प्रधानता छैक- वस्तु, नेता आ रस। आधुनिक मान्यताक अनुसार रसक स्थान विचार-मीमांसा लऽ लेलक अछि। वस्तुसँ तात्पर्य छैक कथानक। एकरे व्यवस्थापनकेँ वस्तु-विन्यास कहल जाइत छैक। वस्तु नाटकक सर्वाधिक प्रधान तत्त्व अछि। ई नाटकक शरीर मानल जाइत अछि। एकरे आधारपर नेता अथवा पात्रक सृजन कएल जाइत छैक आ रस किंवा विचारक अवक्षेपणो एकरे आधारपर होइत छैक। श्रीमण्डलजीक विवेच्य नाटकमे वस्तु-विन्यासक विवेचन एहि निबन्धक साध्य अछि। एहि नाटकक वस्तुक स्वरूप एहि प्रकारेँ विन्यस्त कएल गेल अछि-

पहिल दृश्यमे एकटा बटाइदार कृषक सुकदेव आ ओकर पत्नी सोनियाक वार्त्तासँ कथारम्भ होइत अछि। रौदीक समय छैक। सुकदेव मालजाल पोसने अछि मुदा घासक अभाव तँ छैके, ओकर सभटा नार-पुआरो सठि गेल छैक। ओ मालक सानी-पानीक चिन्तामे लागल अछि। मुदा जखन आनो-आन कृषक लग नार-पुआर रहैक तखन ने पैंचो-पालटसँ काज चलितै। तेँ ओ अत्यन्त खिन्न भऽ जाइत अछि। अन्तमे निर्णय करैत अछि जे मरहन्ना अन्नक घास तथा चिचोढ़ काटिकऽ काज चलाओत। ओकरा इहो सूचना भेटैत छैक जे रौदीक कारणेँ चापाकल सभ सेहो सुखाएल जा रहल छैक। जलक अभावमे तँ ने माले-जाल जीबि सकैत छैक आ ने मनुष्ये। तेँ ओकरा सरकारी तंत्रक प्रति आक्रोश उठैत छैक। ओ सोचैत अछि जे जँ कोसीकेँ बान्हि देल गेल रहितैक आ पनबिजलीक व्यवस्थाक संगहि नहरि बना देल गेल रहितैक तँ मिथिलाक कृषककेँ कहियो अन्नाभावक खतरा नहि

रहितैक। ओ डेराइत सोचैत अछि जे कतहु बाहरो जा कऽ नोकरी कऽ कऽ जीवन व्यतीत कऽ लेत, मुदा ताहिमे अपन जन्मभूमिक प्रति मोह ओकर बाधा बनि ठाढ़ भऽ जाइत छैक। एही प्रकारक चिन्तनसँ ओत-प्रोत दुनू परानीक वार्त्ताक संग पहिल दृश्य समाप्त भऽ जाइत अछि।

नाटकक कार्यावस्थाक आधारपर ई दृश्य वस्तु-विन्यासक प्रारम्भ थिक। एहिमे बटाइदारक दुर्दशाक चित्रण भेल अछि। सामान्यत: भूमिहीने लोक बटाइपर दोसराक जमीनक जोत-कोड़ कऽ अन्न उपजबैत अछि। मुदा जँ उपजा होइत छैक तँ खेतक मालिक आधा अन्न बटबा लैत छैक आ सम्पूर्ण खेतक हेतु जे श्रम आ पूजी ओ लगबैत अछि, तकर बदला ओकरा उपजाक आधे भाग हाथ लगैत छैक। रौदी की दाही भेलापर बटाइदारक श्रम आ पूजी (बीया-बाइलक मूल्य तथा खेतक जोतक मूल्य) दुनू नष्ट भऽ जाइत छैक तथा ओ बेलल्ल तँ भइये जाइत अछि, कर्जो तर डूबि जाइत अछि। अपन अस्तित्व-रक्षाक हेतु ओ पशुपालनक अनुषंगी व्यवसाय सेहो करैत अछि तथापि ओकर जीवन कष्टमय बीतैत छैक। सोनियाक उक्ति- “पेटक आशामे पेट काटि भरै छी आ घर अनै काल टुटरूमटुम भऽ जाइए।” मे कृषक परिवारक दर्दकेँ व्यक्त कएल गेल अछि। तथापि कृषकक जिजीविषा ततेक बद्धमूल रहैत छैक जे ओ बटाइयो कऽ कऽ जेना-तेना जीबि लेबाक आग्रही रहैत अछि। कोनो स्थितिमे कृषि व्यवसायसँ अलग नहि होमऽ चाहैत अछि। सुकदेवक एहि उद्गारमे कृषकक मन:स्थिति एहि शब्देँ निरूपित भेल अछि- ‘बटाइयो खेती केने अपन जिनगी तँ ठाढ़ केने छी। मारि-धूसि खटै छी, भरि पेट आकि अदहा पेट खाइ तँ छी। जँ इहो छोड़ि देब तँ की गोबर-गोइठा जकाँ केतौ पड़ल रहब?’ एतावता नाटककार प्रारम्भमे बटाइदार कृषकक जीवनक यथार्थकेँ उद्घाटित कऽ देलनि अछि। वस्तु-विन्यासक ई प्रक्रिया नाट्य-वस्तुक बीजकेँ प्रकट करबामे सफल भेल अछि।

दोसर दृश्यमे सुकदेव अपन समस्याक निदानक हेतु विमर्श करबा लेल सोमन नामक बटाइदार कृषकक घरपर जाइत अछि। सोमन रौदीसँ त्रस्त रहबाक कारणेँ अपन माल-जालकेँ हाटपर बेचि लेबाक हेतु जयबाक तैयारीमे अछि। ओ सुकदेवोकेँ माल-जाल बेचि देबाक सुझाओ दैत छैक। एही संग ई दृश्य समाप्त भऽ जाइत अछि। एहि दृश्यमे सोमनक एहि उक्तिमे ओकर विवशताक दृश्यांकन भेल अछि। ओ कहैत अछि- 'एको मुट्ठी नार-पात नहि अछि तेँ देहमे कछमछी लागल अछि। खढ़-पानि ले जे गाए-मालकेँ हुकरैत देखै छिऐ तँ मन घोर-मट्ठा भऽ जाइए।'

एहि दृश्यमे सुकदेवक स्वगत कथनमे मिथिलांचलक प्रति सरकारी उदासीनताकेँ एहि शब्देँ व्यक्त कएल गेल अछि। सुकदेव सोचैत अछि- 'पचास बर्खसँ किसान-बोनिहारक संग मिलि कोसी नहरक पानिसँ खेतियो आ बिजलीयोक सपना पूरा हएत, तइ आशमे रहलौं। मुदा आइ की देखै छी? घरमे अन्न नहि, खेतमे पानि नहि, मशीनक नामो-निशान नहि! इएह स्वराज साठि बर्खक छी? की हम सभ टकटकी लगौने मरि जाइ?'

तेसर दृश्यमे रामरूप आ सोमन द्वारा अपन-अपन माल-जाल हाटपर बेचि लेबाक कथा आएल अछि। दुनू गोटे मजबूरीमे अपन-अपन माल बेचि लैत अछि किएक तँ रौदीक कारणेँ माल पोसब सम्भव नहि भऽ पबैत छलैक। एहि दृश्यमे रौदी-दाहीक लाभ उठा कऽ माल-जालक व्यापारीक मुनाफाखोरी तथा रौदी-दाहीक मारल पशुपालक समुदायक करुण स्थितिकेँ निरूपित कएल गेल अछि। एही दृश्यमे रघुवीर नामक एक गोट तरकारीक खेती कयनिहार कृषकक उत्कर्षक चर्च भेल अछि जे बिनु रासायनिक खाद आ दवाइक प्रयोग कयने नीक उपजा कऽ लैत अछि। ओकर स्वास्थ्यप्रद तरकारी बेस लोकप्रिय भऽ गेल छैक।

चारिम दृश्यमे नसीबलाल नामक गृहस्थक ओतय सोमन आ सुकदेव जुटैत छथि। सुकदेव नसीबलालकेँ अपन दुखड़ा सुनबैत कहैत छथिन जे रौदी-दाही सन प्राकृतिक प्रकोप भेलापर खेतवलाक खेत तँ रहिये जाइत छनि मुदा बटाइदारक श्रम आ पूजी दुनू चलि जाइत छैक। तेँ एकर कोनो निदान होयबाक चाही। नसीबलाल कहैत छथिन जे एकर निदान ग्रामवासी लोकनिक बैसारेमे कएल जा सकैत अछि किएक तँ जनिका खेत छनि से सभ नोकरी करैत छथि आ खेती स्वयं करैत नहि छथि आ जे बटाइदार खेती करैत छथि, हुनका खेतक मालिकाना नहि छनि। बैसारक जोगाड़ करबाक हेतु कर्मदेव नामक एक गोट शिक्षित बेरोजगारकेँ लगाओल जाइत छनि। एतहि चारिम दृश्य समाप्त भऽ जाइत अछि।

पाँचम दृश्यमे देखाओल गेल अछि जे योजनानुसार गामक लोकक बैसार होइत छनि। बैसारमे तत्काल निर्णय लेल जाइत छैक जे गामक समस्त जमीनक मालिकाना हुनका लोकनिक होयतनि जे गाममे रहि कऽ खेती स्वयं करैत छथि। गामसँ बाहर रहि कऽ नोकरी कयनिहारकेँ ताधरि बटाइदार लोकनि उपजाक अंश नहि देथिन जाधरि ओ सभ स्वयं खेती नहि करताह। शिक्षित बेरोजगार कर्मदेवकेँ एहि तथ्यक सूचना गामक प्रत्येक नोकरिहाराकेँ प्रदान करयबाक हेतु नियुक्त कएल जाइत छनि तथा हुनका कहल जाइत छनि ओ ओहि नोकरिहारा लोकनिकेँ उक्त निर्णय पर मन्तव्य देबाक हेतु अगिला बैसारमे उपस्थित होयबाक हेतु सेहो आमंत्रित करथि।

छठम दृश्यमे कर्मदेव प्रो. कृष्णदेवक डेरापर जा जूमैत छथि। ओतय हुनका डेरापर शिक्षा जगतमे व्याप्त भ्रष्टाचारपर विमर्श होइत रहैत छैक। कर्मदेवक संग कृष्णदेवक वार्त्तासँ ई द्योतित होइत अछि जे स्वयं कृष्णदेव प्रोफेसर होइतो अल्प वेतन ओ अत्यधिक पारिवारिक भारक कारणेँ सीदित जीवन बिता रहल छथि।

लोकलाजक कारणेँ ओ खेत बेचबाक साहस नहि कऽ रहल छथि। अन्तमे ओ कर्मदेवकेँ आश्वस्त करैत छथिन जे ओ बैसारमे भाग लेताह आ एही क्रममे ई दृश्य समाप्त भऽ जाइत अछि।

सातम दृश्यमे बोरिंग कम्पनीक एजेण्ट आ बैंक मैनेजर घनश्यामक बीच कमीशनक लेन-देनक गप होइत अछि आ एही क्रममे राजस्व विभागक भ्रष्टाचारक परिदृश्य उजागर होइत अछि। तत:पर कर्मदेव घनश्यामकेँ गामक बैसारक सम्बन्धमे सूचना प्रदान करैत छथि।

आठम दृश्यमे इंजीनियर मनमोहन आ हुनक कृषि स्नातक पुत्र संतोषक बीच वार्त्ता होइत अछि जाहिमे संतोष उन्नत कृषिक व्याख्या करैत राष्ट्रक उन्नतिक हेतु गामेमे रहबाक निर्णयसँ अपन पिताकेँ अवगत करबैत छथि। कर्मदेव हुनका दुनू बापुतकेँ गामक बैसारक हेतु आमंत्रित करैत छथिन।

नवम दृश्यमे डॉ. रघुनाथ आ हुनक पत्नीक बीच गप होइत छनि। रघुनाथ शहरी जीवनसँ अकच्छ भऽ गेल छथि। स्वयं तँ रोगग्रस्त भैये गेल छथि, प्रैक्टिसो मन्द भऽ गेल छनि। परिणामत: भविष्यक चिन्तामे पड़ल छथि। एही क्रममे कर्मदेव हुनका गामक बैसारमे पहुँचबाक हेतु आमंत्रण दैत छथिन आ ई दृश्य समाप्त होइत अछि।

दशम दृश्यमे घनश्याम, कृष्णदेव, मनमोहन आ घनश्याम चारू गोटे, जनिका लोकनिक जमीन तँ गाममे छलनि मुदा नोकरिहाराक जिनगी शहरमे बितौने छलाह, परस्पर गामक बैसारक विषयमे परामर्श करैत जाइत छथि, जाहिमे सकारात्मक रूपेँ गामक बैसारमे उपस्थित होयबाक निर्णय करैत जाइत छथि।

एगारहम दृश्यमे गामक लोक सभ नसीबलालक दलानपर जुटैत छथि तथा विभिन्न प्रकारक राजनीतिक ओ सामाजिक समस्या

सभपर गप्प करैत छथि। एहि क्रममे राष्ट्रीय स्वतंत्रता, स्वतंत्र देशक नागरिकक कर्त्तव्य, सामाजिक ओ आर्थिक असमानता, जिजीविषा, राजनीतिक भ्रष्टाचार, घूस-पेंच आदि विषयपर विचार-विनिमय होइत अछि आ नसीबलालकेँ ई सूचना प्रदान कएल जाइत छनि जे गामक बैसारमे नोकरिहारा लोकनिक उपस्थित होयबाक बेस सम्भावना अछि।

बारहम दृश्य गामक विद्यालयक प्राङ्गणक दृश्य अछि जाहि ठाम लोक सभ बैसारमे भाग लेबाक हेतु बैसल छथि। नसीबलाल बैसारमे उपस्थित होयबाक लेल समस्त सभ्य जनकेँ बधाइ प्रदान करैत छथि। तत:पर बटाइदारीक स्थितिपर विमर्श होइत अछि। बटाइदार लोकनिकेँ समाजक विशिष्ट अंग मानि हुनका लोकनिकेँ समाजक हिस्सेदार मानबाक प्रस्ताव पारित होइत छैक। एही क्रममे इहो प्रस्ताव अबैत छैक जे जखन विभिन्न जाति आ सम्प्रदायक बीच खान-पान आ वैवाहिक सम्बन्ध होइते जा रहल अछि तँ किएक ने ओकरा सामाजिक मान्यता दऽ देल जाय। मुदा एहिपर विमर्श नहि भऽ पबैत छैक आ दृश्य समाप्त भऽ जाइत अछि।

अन्तिम तेरहम दृश्यमे ई तय होइत अछि जे कृषि स्नातक संतोष गाममे रहताह आ उन्नत खेतीक हेतु योजना बनौताह तथा कृषि आधारित कल-कारखानाक हेतु सेहो योजना बनौताह। एहिमे जाहि पूजीक आवश्यकता होयतैक से बैंक मैनेजर घनश्याम जुटौताह। डॉ. रघुनाथ गाममे रहि लोककेँ स्वास्थ्य सेवा उपलब्ध करौथिन। सहकारिताक आधारपर खेती होयत आ तकर लाभ सभकेँ बरोबरि भेटतैक। एहि तरहेँ सहकारिता आधारित ग्राम्य व्यवस्था चलाओल जायत जाहिसँ लोक-लोकक बीच आर्थिक असमानता दूर भऽ सकत।

एहि नाटकक कथा विन्यासपर विचार कयला उत्तर ई स्पष्ट अछि जे मूल स्रोतक आधारपर ई कथा उत्पाद्य अछि। एहिमे

नाटककार एकटा वैचारिक वादक अनुसरणपरक सामाजिक-आर्थिक व्यवस्थाक संकल्पना कएलनि अछि जे साम्यवादी विचारधाराक अनुयायी अछि। मुदा कथानकमे संघर्षक अभाव नाटककेँ कमजोर कऽ देने छैक आ एकर सहजता विश्वसनीय नहि रहि पबैत छैक।

प्रधानताक आधारपर एहि नाटकक कथाविन्यासमे दुइ प्रकृतिक कथा भेटैत अछि। पहिल प्रकृति आधिकारिक कथाक अछि जाहिमे बटाइदारी प्रथाक उन्मूलन आ सामूहिक कृषि व्यवस्थाक अनुगायन भेल अछि। मुदा बीच-बीचमे नाटककार विभिन्न प्रासंगिक कथा अनुगुम्फन सेहो कयने छथि जेना घास ओ पानिक अभावजन्य पशुधनक विक्रयक कथा, तरकारीक खेती करबाक कथा, पशुक व्यापारीक अत्यधिक नफा कमयबाक कथा, परीक्षामे व्यभिचारक कथा, कार्यालय ओ ठीकेदारीमे घूस-पेंचक कथा आदि।

कोनो नाटकक वस्तुविन्यास वस्तुत: नाटकीय उद्देश्यकेँ अभिव्यक्त करयबला कारक होइत अछि जाहिमे विभिन्न घटनाक्रम ओ पात्र संयोजनक आवश्यकता होइत छैक। प्रस्तुत नाटकमे नाटककार उद्देश्यक अनुरूप घटनाक संयोजन कएलनि अछि आ पात्रो सभक चयन ताही दृष्टिञे कएलनि अछि जाहिसँ नाटकीय उद्देश्य स्फुट भऽ कऽ समक्ष आबि जाइत अछि। बटाइदारी प्रथाक कारणेँ कृषक-मजदूर वर्गक शोषणक प्रतिरोधक मार्गदर्शक ई नाटक अत्यन्त समसामयिक समस्यापर आधारित अछि। नाटककार समुचित समाधानक दिस इंगित कएलनि अछि जाहिसँ सामाजिक सद्भावोपर असरि नहि पड़ैक आ समाजक प्रत्येक व्यक्ति समृद्धिक सोपानपर चढ़ि सकथि। एहि हेतु आवश्यक छैक जे भूमिपर ओकर कृषक वर्गक आधिपत्य होइक। मुदा जँ वर्तमान व्यवस्थामे से सम्भव नहि छैक तँ गामक समस्त भू-सम्पदापर सहकारिताक आधारपर कृषि हो तथा ओकर उपजाक वितरण सेहो सभक बीच कऽ देल जाय। एहिसँ

आर्थिक असमानताक स्थिति गम्भीर नहि होयतैक आ सामाजिक संघर्षक स्थिति नहि बनतैक। नाटककारक ई चिन्तन अत्यन्त उपादेय छनि।

एहि नाटकक वस्तु विन्यासमे प्रासंगिक कथाक माध्यमे नाटककार अनेक प्रकारक विसंगति दिस द्रष्टाक ध्यान आकृष्ट कएलनि अछि जाहिसँ नाटकीय सौन्दर्यमे अभिवृद्धि भेलैक अछि। यथा- परीक्षामे चलैत भ्रष्टाचारक व्याख्या करैत प्रो. कृष्णदेवक उक्ति छनि- 'ओना लोक परीक्षा केन्द्रपर जे किताब आकि चिट-पुरजी लऽ कऽ लिखैए तेतबे बुझै छइ। मुदा एहि सभसँ नमहर-नमहर चोरि दोसर होइए। जखन कॉपी एकत्रित कऽ परीक्षक ओइ ठाम पठौल जाइ छै तखन कॉपी अदैल-बदैल लेल जाइए।'

एहिना राजस्व कर्मचारीक घूस लेबाक खेरहा शिवशंकरक एहि उक्तिसँ स्पष्ट होइत अछि- 'जखन जमीन्दारीक चार्ज सरकार लेलक तखन हमरा सभकेँ अगहन आबि गेल। खेत-खरिहानसँ लऽ कऽ आँगनसँ कोठी धरि धाने-धान।'

एतावता एहि नाटकक वस्तु-विन्यासमे आधिकारिक कथा यद्यपि मिथिलाक परिवेशकेँ ध्यानमे राखि रचल गेल अछि मुदा विषयक आधारपर ई अखिल भारतक कृषक जीवनक प्रतिनिधित्व करैत अछि, ओकर समस्याक विवरण प्रस्तुत करैत अछि आ समाधानो देबाक प्रयास करैत अछि। अवश्ये ई श्रीमण्डलजीक व्यापक दृष्टिकोणक परिचायक अछि। तखन एतबा अवश्य जे सहकारी कृषि व्यवस्था किंवा कृषिकर्मक सरकारीकरण जखन रूस सन देशहुमे असफल सिद्ध भेल, तँ ओकरा आदर्श कोना मानल जाय? वस्तुत: ई गलती स्वातंत्र्योत्तर कालमे जमीन्दारी उन्मूलनेक समयमे भऽ गेल छलैक जाहिमे कृषि क्षेत्रक सन्तुलित वितरण नहि कएल जा सकलैक आ सर्वहाराकेँ ओकर अंशसँ वंचित राखल गेलैक। तथापि

श्रीमण्डलजीक चिन्तन एकटा वाद विशेषक अनुगामी अन्धसमर्थन रहितो भारतीय कृषि व्यवस्थापर अनुचिन्तनक मार्ग प्रशस्त करैत अछि जे एकर वस्तु-विन्यासक वैशिष्ट्य कहल जा सकैत छैक।

सम्पूर्णतामे नाटक रंग-मंचीय अछि आ सहजतापूर्वक अभिनीत कएल जा सकैछ। एहिमे बीस गोट पात्रक अवस्थिति अवश्य अखरैत छैक मुदा कथोपकथनमे छोट-छोट वाक्यक बहुधा प्रयोग एकरा मंचक अनुकूल सावित करैत छैक जकर अभावमे कोनो नाटककेँ श्रेष्ठ परिगणित नहि कएल जा सकैछ। दर्शककेँ आकृष्ट कयने रहबाक हेतु हास्यादिक नियोजनक अभाव तथा मूल विषयपर केन्द्रीयताक अभाव अनेक दृश्यमे नाटकक सान्द्रताकेँ प्रभावित करैत छैक। सर्वत्र ग्राम्य भाषाक प्रयोग सेहो नाटकक स्तरीयताकेँ प्रभावित कयने छैक। उच्च वर्गीय सम्भ्रान्तो पात्रक भाषा ओहिना राखल गेलैक अछि जेना सर्वहारा वर्गक भाषा जे विचारणीय भऽ जाइत छैक। तथापि एहि नाटककेँ वस्तुक दृष्टिञे एकल कहल जा सकैत छैक जाहिमे मिथिलाक कृषक जीवनक आर्थिक समस्यापर सूक्ष्मतापूर्वक विचार कएल गेलैक अछि। ❑

'एक चुटकी खुशी'क पाठ

स्वनामधन्य श्रीजगदीश प्रसाद मण्डलजीक 'एक चुटकी खुशी' कथासंग्रहमे हिनक दस गोट कथा संगृहित छनि। लोकजीवनक भाषामे मिथिलाक लोकजीवनक बहुरंगी चित्रावलीसँ मण्डित हिनक कथा सभ भने शास्त्रीयताकेँ अवडेरैत हो, मुदा वाणी- विलासक अन्यतम संसाधनक रूपमे प्रस्तुत भेल अछि। कथाकारक भावुकता ओ अप्रतिहत गति प्रत्येक कथाकेँ प्राणवन्त बनौने अछि। एहि कथा सभमे लोकजीवन अपन सहज स्वरूपमे अभिव्यक्त भेल अछि, कतहु कृत्रिमताक भान नहि होइत अछि। शृंखलाबद्धता, औत्सुक्य, संघर्ष, सघनता आदिक अभावक कारणेँ पाठकीय प्रभावान्वितिमे यत्र-तत्र व्यवधानक अछैतो हिनक सभटा कथा एकटा एहन केन्द्र-बिन्दु दिस अग्रसर होइत देखि पड़ैछ जे अन्तत: पाठककेँ एकटा निस्सन संदेश प्रदान कऽ ओकर साधारणीकरणमे सक्षम सिद्ध होइत अछि आ साहित्यक कान्तासम्मिततयोपदेशयुजे हेतुकेँ प्रतिपादित करबामे समर्थ सिद्ध होइत अछि।

संग्रहक पहिल कथाक शीर्षक अछि 'लोक लाज'। वस्तुत: लोक लाज सामाजिक जगतमे व्याप्त ओ संकोच थिक जकरा एक-दोसराक देखाउँसमे लोक परम्परित रूपमे ग्रहण कयने रहैत छथि। 'लोक की कहत?' एहि भावसँ सीदित भऽ अनेक अनटोटलो परम्परा सामाजिक जगतमे व्याप्त रहैत अछि आ नहियोँ चाहला उत्तर ओकर अनुपालनक बाध्यता रहैत छैक। कथाकार नवान्नक पावनिकेँ एही कोटिक परम्पराक रूपमे चित्रित कएलनि अछि। एकर कथानायक मंगल भायकेँ नवान्न पावनिक अवसरपर पत्नीक विभिन्न फरमाइस पूर करबाक बाध्यता होइत छनि आ तकर कारण छनि जे जँ ओ से

नहि करैत छथि तँ लोक कुटिचाल करतनि, ततबे नहि, पत्नीसँ सेहो मनोमालिन्य होयबाक सम्भावना होयतनि। तेँ ओ लोकलाजक कारणेँ पत्नीक फरमाइस पूर करबाक हेतु तत्पर भऽ जाइत छथि। एही क्रममे कथाकार जितिया पावनिमे माछ-मड़ुआक उपयोग तथा सुअन्न ओ कदन्नक भेदक लाथेँ सर्वहारा वर्गक प्रति शोषक ओ सामन्त वर्गक दृष्टिकोणकेँ अभिव्यक्त करैत कहलनि अछि जे 'समाजमे किछु गोरे एहनो छथि जे कमाएलो अहींक खेता आ अहींकेँ अछोप, अपवित्र आ अपनिचल्ला सेहो कहता'। तहिना घर-घरमे कमासुत पुरुष वर्गपर ओकर आश्रित नारी-वर्गक आधिपत्यक सेहो चर्चा कएल गेल अछि। कथाकारक लोकजीवनक सहज वर्णनमे हिनक नैबन्धिकक स्वतंत्र वृत्तिक दिग्दर्शन होइत अछि।

दोसर कथा 'धानक कमठौन' कृषक जीवनक मानसिकतापर केन्द्रित अछि। एकर कथानायक विश्वनाथ बाबाकेँ विद्यालयमे आयोजित खेल प्रतियोगिताक अवसरपर पुरस्कार वितरण हेतु आमंत्रित कएल जाइत छनि मुदा ओ धानक कमठौन छोड़ि कऽ पुरस्कार वितरणक हेतु तत्पर नहि होइत छथि। कथा ग्राम्य जीवनमे कृषिक महत्वक प्रतिपादन करैत अछि।

तेसर कथा 'एक चुटकी खुशी' मे एकटा एहन चरित्रक उपस्थापन भेल अछि जे ग्राम्य जीवनक हेतु आदर्श अछि। महादेव नामक ई चरित्र समाजमे जाति ओ धर्मक आधारपर होइत परस्पर कटुताकेँ समाप्त करऽ चाहैत अछि, सभक संग मिलान कऽ कऽ रहैत अछि, सभक संग भोजन करैत अछि आ सभकेँ मरनी-हरनीमे संग दैत अछि। एहि चरित्रक माध्यमेँ कथाकार ई संदेश प्रक्षेपित करैत छथि जे कोनो व्यक्तिक प्रसन्नताक निवास ओकर मनेमे रहैत छैक। तेँ जे व्यक्ति अपन मनकेँ जतेक उदार बना सकत, ततबे प्रसन्न अनुभव करत।

चारिम कथा 'अनका सिरे'मे पुरुषार्थक महत्ता विज्ञापित कयल गेल अछि। एकर कथानायक गोपाल अपन पुरुषार्थक बलपर एकटा सुभ्यस्त परिवारक निर्माण करैत छथि। ओ सदिखन एहन जीवनक अवहेलना करैत छथि जे दोसराक धन किंवा श्रमबलपर आश्रित रहैछ। एतावता हिनक चरित्र लोककेँ स्वावलम्बी होयबाक मार्गदर्शन करैत अछि। कथाकार हिनका माध्यमेँ एकटा सोझ-साझ संदेश विज्ञापित करबामे समर्थ भेल छथि।

अगिला कथा 'समयक फेड़' मे ग्राम्य संस्कृतिमे होइत परिवर्तनक चित्र उरेहल गेल अछि। एहि कथाक माध्यमे कथाकार समाजमे अन्तर्जातीय विवाहक समर्थन कऽ प्रगतिशील विचारधाराक उपस्थान कएलनि अछि। कथानायक वसन्तक बेटी पढ़ल-लिखल छथिन आ स्वेच्छापूर्वक अन्तर्जातीय विवाह कऽ लैत छथि। समाज एहि विवाहक भर्त्सना करैत अछि आ वसन्त समाजसँ बहिष्कृत कऽ देल जाइत छथि। मुदा शिक्षाक प्रसारक संग आनो लोकक बेटा-बेटी एहि प्रकारक विवाह करैत अछि आ ओकरा सभकेँ लोकमान्यता भेटि जाइत छैक। एकरे कथाकार समयक फेड़ कहि सम्बोधित कएलनि अछि। ग्राम्य जीवनमे टूटैत जातीय बन्धनकेँ जगजियार करब कथाक केन्द्रबिन्दु थिक।

'कोढ़ि' कथा दूटा भाइक कथा अछि। ई दुनू सहोदर छथि। एकटाक नाम छनि बालगोबिन आ दोसराक माङैन। बालगोबिन जेठ छथि आ माङैन छोट। बालगोबिन मन्दबुद्धि छथि तेँ परिवारक मुखिया माङनिएँ छथि। मन्दबुद्धि आ अविवाहित रहबाक कारणेँ बालगोबिन पारिवारिक काजमे रुचि नहि लैत छथि। ताहिपर माङैन हुनका दस लोकक बीच कोढ़ि कहि दैत छथिन। मुदा बालगोबिनकेँ से नीक नहि लगैत छनि। ओ अपन सम्पत्तिक अधिकारक चर्चा करैत छथि। माङैन हुनकासँ माफी मङैत छथि तथा बालगोबिन सेहो सहृदयतापूर्वक

हुनका माफ कऽ दैत छथिन। एहि तरहेँ ई कथा भाय-भैयारीक बीच आभ्यन्तरिक स्नेहक प्रतिपादन कयने अछि जाहिमे अन्तर्द्वन्द्वक चित्रणमे कथाकार अत्यन्त सफल भेलाह अछि। बालगोबिनक मनोविश्लेषण कथाकारकेँ अत्याधुनिक कथाकारक मध्य स्थापित करैत छनि।

सातम कथा 'मुहाँ-ठुठ्ठी' दू पीढ़ीक बीच चलैत अन्तर्द्वन्द्वक कथा थिक। एकर कथानायिका सहना दादी अजोह केराक खोइँचा सहित तरकारी बनयबाक उद्योग करैत छथि मुदा हुनक पुतोहु तकर प्रतिरोध करैत छथिन। दू पीढ़ीक बीच खान-पान, रहन-सहनक स्तरक परिवर्तनक चित्र उपस्थापित करब एहि कथाक केन्द्रबिन्दु अछि। ग्राम्य संस्कृतिक अविकल प्रस्तुतिमे कथाकार एतऽ सफल भेल छथि।

आठम कथा 'औना कऽ मरए लगलौं' एकटा विधुरक करुण कथा थिक जे पहिल पत्नीक मुइलाक बाद दोसर बिआह करैत छथि मुदा इलाजक अभावमे दोसरो पत्नीक देहान्त भऽ जाइत छनि। एहि कथामे ग्राम्य जीवनमे स्वास्थ्य सेवाक दुर्लभताजन्य जनसामान्यक नियति दिस कथाकार इंगित कएलनि अछि।

नवम कथा 'जेहेन आँखि तेहेन पाँखि'क कथानायक दीनानाथ एकटा लोअर प्राइमरी स्कूलक सेवानिवृत्त शिक्षक छथि जे आजीवन अपन वृत्तिजन्य सरकारी पराधीनतामे जीवन गुदस्त कऽ लैत छथि। सेवानिवृत्त भेलाक बाद हुनका स्वाधीनताक बोध होइत छनि। हुनक भातिज जीवानन्द जखन स्वाधीनताक अर्थ पुछैत छनि तँ ओ अकबका जाइत छथि। ओ ई नहि बुझि पबैत छथि जे वस्तुत: एकटा सामाजिक प्रणाली सर्वतंत्र स्वतंत्र भऽ सकैत अछि वा नहि, किएक तँ ओ अपन परिवेशक अनुगामी तँ बनले रहैछ। लोकजीवनमे परिवेशपर निर्भरताक कारणेँ परतंत्र जीवन बितयबाक बाध्यताक अन्तर्द्वन्द्वकेँ एहि कथामे निरूपित कएल गेल अछि।

अन्तिम कथा ‘चौरचनक केरा’ ग्राम्य जीवनमे पसरल अन्धविश्वासपर व्यंग्य अछि। एक दिस जखन विश्व चन्द्रमापर विजय स्थापित करबामे लागल अछि ततहि मिथिलामे चन्द्रमाक हेतु विशेष पावनि मनाओल जाइत अछि। एहि पावनिमे तँ जे पूजा-पाठ कएल जाइत अछि से मिथिलाक संस्कृतिक अंग बनि गेल अछि, मुदा खास कऽ स्त्रीगण अनेक प्रकारक कबुला कऽ अपन मानता पूर करयबाक जे अन्धविश्वास पोसने छथि, से एहि ठामक नारीक दीन-दशार्कें अभिव्यक्त करैत अछि। मकसूदनक उक्ति “जखन सोल्होअना पाबैन करिते छी तखन बीचमे केराक घौरक कबुला केतएसँ चलि आएल” अन्धविश्वासक प्रति कथाकारक वितृष्णार्कें अभिव्यक्त करैत अछि आ एकटा ठोस संदेशक संग कथा समाप्त भऽ जाइत अछि।

एहि तरहेँ ‘एक चुटकी खुशी’ कथासंग्रहक सभटा कथा कोनो-ने-कोनो संदेश अवश्यमेव बिलहैत अछि। एहिमे बहुधा ग्रामीणे परिवेशक चित्रण भेल अछि आ प्रत्येक कथा पढ़ैत काल ग्राम्य जीवनक दृश्यावली साकार होइत देखि पड़ैत अछि। एहि कथासंग्रहक कथामे वर्णनक प्रधानता अछि आ वर्ण्य विषय अछि ग्राम्य जीवनक परिदृश्य सभ, जे एकर अन्यतम वैशिष्ट्य अछि। तथापि एकर वातावरण-सृजनजन्य वर्णन सभ जेना कथाक अन्य समस्त तत्त्वपर भारी पड़ल अछि जकर परिणामस्वरूप ने पात्रक चरित्रेक प्रस्फुटन भऽ पबैत अछि, ने केन्द्रबिन्दुए स्पष्ट भऽ पबैत अछि। तथापि परिमाणात्मकताक दृष्टियेँ श्रीमण्डलजीक मैथिली कथा साहित्यमे विशिष्ट अवदानक रूपमे एहि संग्रहक अपन खास महत्त्व अछि जकरा नकारल नहि जा सकैछ। ❑

‘एकलव्यपन’मे मिथिलाक जीवन-दर्शन

‘एकलव्यपन’ श्रीजगदीश प्रसाद मण्डलक कथाविधाक पोथी अछि। एहिमे जून 2023 सँ अगस्त 2023 मध्य रचित हिनक दस गोट कथा संकलित अछि। एहि कथा सभमे संघर्षपूर्ण मानव जीवनक खण्ड चित्र उपस्थापित भेल अछि जाहिमे कथाकारक वैयक्तिक दृष्टिकोणक प्रधानता अछि। स्वभावत: ई कथा सभ मिथिलाक ग्राम्य जीवनक दर्शनकेँ अत्यन्त सूक्ष्मताक संग उत्कीर्ण कऽ अप्रत्याशित ढंगसँ घटना-उपघटनाक उत्थान-पतन ओ मोड़क संग पात्रक चरित्रपर प्रकाश दैत कौतूहलपूर्ण वर्णनसँ समृद्ध अछि।

एकर प्रथम कथा **‘हँस्सा ठक’** गरीब किसान परिवारक मोहिनी दादीक कथा अछि जे गाएकेँ पोसि-पालिकऽ कहुना अपन परिवारक परिपालनमे तल्लीन छथि। गाइक प्रति हुनका असीम प्रेम छनि। ओकरा लेल चारा जुटयबामे हुनक सम्पूर्ण दिनक श्रम खर्च भऽ जाइत छनि मुदा प्राप्ति होइत छनि फुच्ची, दू फुच्ची दूध। परिणामत: हुनका श्रमक वास्तविक मूल्य नहि भेटि पबैत छनि। तत:पर ओ अधिकाधिक दूध देबयवाली गाय लेबऽ चाहैत छथि। बैंक गाय पोसबाक हेतु सबसिडीपर लोन देबाक व्यवस्था कयने अछि। ओ बालगोविनक माध्यमे एकटा जरसी गाय लोनपर लेबऽ चाहैत छथि। मुदा लालफीताशाहीक फेरमे पड़ल लोनक प्रक्रिया ततेक जटिल छैक जे अन्तत: हुनका लोन नहि भेटि पबैत छनि आ सरकारी व्यवस्थाक लाभ पयबामे ओ असमर्थि रहि जाइत छथि।

कथा मिथिलाक पशुपालक समुदायक व्यथा ओ लाभार्थी धरि लाभ पहुँचयबामे व्यवस्थाक दोषकेँ केन्द्रमे राखि लिखल गेल अछि आ मिथिलाक पशुपालक समुदायक करुण स्थितिकेँ उजागर करैत

अछि।

'विश्वासू मन' संग्रहक दोसर कथा अछि। एहि कथाक नायक थिकाह रामानुज। ओ शिक्षा प्राप्त करऽ चाहैत छथि आ जेना-तेना मैट्रिक धरि पास कऽ जाइत छथि। गाममे महाविद्यालय नहि रहबाक कारणेँ ओ उच्च शिक्षा प्राप्त नहि कऽ पबैत छथि किएक तँ हुनक आर्थिक स्थिति एतेक दृढ़ नहि छनि जे शहर जाय शिक्षा ग्रहण कऽ सकथि। अन्तत: हुनक विवाह भऽ जाइत छनि आ परिवारक भरण-पोषण हेतु ओ कर्मण्यतापूर्वक जीवन गुदस्त करऽ लगैत छथि। कथाकार मिथिलाक ग्राम्य जीवनक शिक्षाक स्थितिक यथार्थपर विमर्श प्रस्तुत करैत श्रमकेँ प्रतिष्ठित करबाक प्रयास कएलनि अछि। एही क्रममे ओ सामाजिक जीवनमे व्याप्त विसंगतिपर सेहो कशाघात कएलनि अछि आ कहलनि अछि जे समाजमे तीन चौंथाइ लोक तेहन छथि जे जाति-सम्प्रदाय आ वर्चस्वक रोगसँ ग्रसित भऽ आनकेँ आन नजरिसँ देखैत छथि जकर परिणामस्वरूप लोकजीवनमे सभक समान विकास नहि भऽ पबैत छैक। एकर परिणामस्वरूप लोकजीवनमे वैचारिक विभेद ओ पारस्परिक संघर्षक स्थिति बनल रहैत छैका। कथाकार सभकेँ शिक्षाक समान अधिकारक पक्षपाती छथि जाहिसँ सभ वर्गमे उन्नयन सम्भव छैक। कथा एही केन्द्र बिन्दुक परित: आघूर्णित अछि।

'चोरनी पिल्ली' एकटा शब्दचित्र अछि जाहिमे एकटा पिल्ली द्वारा दूध पीबि लेलाक बाद चाहक ओरिआओनक विषद् वर्णन भेल अछि। मिथिलाक लोकजीवनमे चाहक प्रति व्यग्रताक चिन्तनक संगहि एहिमे अँग्रेजक एहि देनक भर्त्सना कथाकारक उद्देश्य बुझना जाइत छनि। एही क्रममे कथाकार शिक्षा जगतमे व्याप्त भ्रष्टाचारक सेहो चर्चा कएलनि अछि जकर कारणेँ मुँहदुब्बर विद्यार्थीकेँ नीको लिखलाक बाद परीक्षामे कम अंक दऽ प्रताड़ित कएल जाइत छैक,

ओकर भविष्यक संग खेलवाड़ कएल जाइत छैक आ मुँहगर लोकक धिया-पुता अनेरे नीक अंकसँ उत्तीर्ण घोषित कऽ देल जाइत अछि।

'गामक जमीने पथरा गेल' मे मिथिलाक लोकजीवनक अनेक तथ्यक दिग्दर्शन कराओल गेल अछि। कथाकार रौदी आ दाहीसँ सीदित मिथिलाक किसानक करुण स्थितिपर ध्यान आकृष्ट करौलनि अछि, मिथिलाक तांत्रिक विचारधारापर व्यंग्य करैत एहि ठाम ओझा-गुणीक वर्चस्व जन्य अन्धविश्वासपर व्यंग्य कएलनि अछि, सर्वशिक्षा अभियानक निष्फलतापर चिन्ता व्यक्त कएलनि अछि तथा कृषि योग्य भूमिक विकासक हेतु प्रयत्न करबाक आवश्यकतापर बल देलनि अछि। एही क्रममे कथाकार मिथिलाक उर्वरताक प्रशंसा करैत एहि भूमिक प्रशस्त फल-वृक्ष आमक उत्कर्षपर गौरवान्वित अनुभव कएलनि अछि। एहि कथाक माध्यमे कथाकार मिथिलाक लोकजीवनमे हस्तरेखा विशेषज्ञ लोकनि द्वारा अन्धविश्वासक प्रसार करबाक सेहो भर्त्सना कयलनि अछि आ कहलनि अछि जे ई लोकनि हस्तरेखा देखि कऽ कोनो नेनाकेँ विद्यावान आ ककरो विद्याविहीन कहि दैत छथि जकर कारणेँ दुनू प्रकारक नेनाक प्रति ओकर अभिभावक निश्चिन्त भऽ जाइत छथि। जाहि नेनाकेँ ओ विद्यावान कहि दैत छथिन ओहि नेनाक अभिभावक ई बुझैत छथि जे ई तँ शिक्षित होयबे करत, तेँ ओकर शिक्षाक प्रति कटिबद्ध नहि रहैत छथि तथा जकरा विद्याहीन कहि दैत छथिन, ओकर शिक्षाक प्रति अभिभावक लोकनि निःस्पृह भऽ जाइत छथि। एहिसँ दुनू प्रकारक नेनाक क्षति होइत छैक आ ओ कर्मण्यतासँ विमुख होइत चल जाइत अछि। स्वभावत: मिथिलाक लोकजीवनमे व्याप्त टिपणि-टिपौधपर आश्रयणक विरोध कथाकारक ध्येय छनि।

एहि कथामे नारी-शिक्षा आ प्रेम विवाहक ऐतिहासिकताक उद्घाटन करैत मिथिलामे नारी-शिक्षाक प्रति लोकजीवनक आस्थाकेँ

जाग्रत करयबाक प्रयास तँ भेले अछि संगहि स्वयंवर प्रथाक माध्यमे कन्याकेँ वर-चयन करबाक अधिकारक सेहो मान्यता देबाक विचार संप्रेषित भेल अछि। एतावता ई कथा मिथिलाक जीवन-दर्शनक अनेक विषयपर प्रभावशाली आलेखक सादृश्य रखैत अछि।

'एकलव्यपन' सेहो वैचारिकताप्रधान कथा अछि। एकर कथानायक सुशील गीत-संगीतमे निपुण छथि। ढोल, हरमुनिया, खजुरी आदि बजायब जनैत छथि आ लोकरंजन द्वारा उपार्जन करैत छथि। कोसी नदीक कटाओक कारणेँ हुनक गाम क्षत-विक्षत भऽ जाइत छनि। कथाकार कोसी नदीक स्थान परिवर्त्तनजन्य मिथिलाक लोकजीवनक व्यथाकेँ एहि कथामे साकार कएलनि अछि। एही क्रममे कथाकार मिथिलाक लोक संस्कृतिक भजन-कीर्त्तन आदिक महत्ताकेँ सेहो विज्ञापित कएलनि अछि। मुदा आधुनिक परिवेशमे विकृतिक कारणेँ संस्कृतिक ई स्वरूप बाजारवादसँ प्रभावित भऽ गेल अछि आ भक्तिभावक स्थानपर एकरा व्यापारक स्वरूप प्रदान कऽ देल गेलैक अछि। एहूपर कथाकार चिन्ता व्यक्त कयने छथि। कथाक आरम्भमे मिथिलाक लोकजीवनक प्रात: कृत्यक अत्यन्त सुष्ठु वर्णन सहज संवेद्य अछि। सुशीलक माध्यमे कथाकार मिथिलाक लोक संस्कृतिमे होइत परिवर्तन दिस सेहो इंगित कएलनि अछि। पहिने अभ्यागतक आगमन भेलापर एक लोटा जलसँ हुनक स्वागत कएल जाइत छल आ अभ्यागत पैर धोलाक बाद दरवज्जापर जाइत छलाह, किएक तँ हुनक पैर थाल-कीचपरसँ गुजरैत छल। मुदा आब पनही सर्वजनसुलभ भऽ गेलाक कारणेँ तथा सड़क सभक पक्कीकरण भऽ गेलाक कारणेँ अभ्यागतक पैर धोब अनिवार्य नहि रहल जे मिथिलाक विकासक प्रतीक थिक।

छठम कथा थिक **'केलहा साफल'**। एहि कथामे एकटा बीस-बाइस वर्षक युवक द्वारा चारि-पाँच वर्षक कन्याक चोरि आ पकड़ा

गेलापर थाना द्वारा ओकर मरम्मति आ जहल पठयबाक घटनाक माध्यमे अन्तर्राष्ट्रीय होटल सभमे मनुष्यक मांस बिकयबाक भ्रष्ट आचरणक वर्णन भेल अछि। एहि कथाक माध्यमे लेखक अन्तर्जातीय विवाहक समर्थन करैत देखि पड़ैत छथि। कथाकारक कहब छनि जे जखन भोटमे सभकेँ समान अधिकार छैक, जाति-पातिक बन्धन नहि छैक, अगिलग्गी भेलापर सभ जातिक लोक एकत्र भऽ ओकर शमनमे लागि जाइत अछि, तीर्थमे सेहो छूता-छूतक कोनो विचार नहि रहैत छैक, तखन भोज आ विवाहमे सेहो जातिक बन्धन टुटबाक चाही। एकर संगहि मिथिलाक लोक व्यवहारमे पीढ़ीपर बैसिकऽ भोजन करबाक स्थानपर टेबुल-कुर्सीपर भोजन करबाक विकासक चर्च भेल अछि। कथाकारक सामाजिक परिवर्तनक दिस सूक्ष्म दृष्टिक परिचय एहि कथामे स्पष्ट भेल अछि।

'त्रिशूलपर लटकल गाम' कथामे मिथिलामे प्रचलित सोमवारी व्रतकेँ केन्द्रमे राखल गेल अछि। एहि पावनिमे लोक भरि दिन उपास कऽ रात्रिकालमे भोजन करैत छथि। एहिना रवि, बुध, शुक्र आदि दिवसपर सेहो विभिन्न व्रत-उपवास आदिक प्रचलन अछि। ई उपवास सभ विभिन्न प्रकारक मनोभिलाषाक पूर्त्यर्थ कएल जाइत अछि। धर्माचरणपर आधारित एहि तरहक व्रतादिमे अन्धानुकरण देखल जाइत अछि। एही अन्धानुकरणक परिणाम अछि जे कतोक ठाम पाथरक मूर्त्तिकेँ दूध पिआओल जाइत अछि तँ कतोक ठाम मनुषदेवाकेँ अपन घोड़ापर सवार देखल जाइत अछि आ ओकर मुहसँ निकलल वाक्यकेँ ब्रह्म वाक् मानि लेल जाइत अछि। एतऽ धरि जे मनुषदेवाक देल प्रसादसँ रोगी-कारणीक झाड़-फूकपर सेहो लोक पूर्ण विश्वास करैत आएल अछि, ज्योतिषक बातकेँ तँ लोक भविष्यक हेतु सत्य मानिते आएल अछि। कथाकार एहि सभ ढोंगपर एहि कथाक माध्यमेँ कशाघात करैत छथि। कथाकारक स्पष्ट उक्ति खुशीलालक

माध्यमेँ अभिव्यक्त भेल अछि जाहिमे कहल गेल अछि जे “पावनिक विध-व्यवहार क्रमश: मेटा रहल अछि, तथापि अनेकानेक अन्धविश्वास अखनो समाजमे बचले अछि, बढ़ले जा रहल अछि।” मिथिलाक जीवनमे व्याप्त अन्धविश्वासपर प्रहार करब कथाकारक लक्ष्य छनि। सम्भवत: एही कारणेँ कथाक शीर्षक ‘त्रिशूलपर लटकल गाम’ राखल गेल अछि, जकर सार्थकता स्वत:सिद्ध अछि।

अगिला कथा **‘त्रिशंकू गाम’**मे कृषक जीवनक व्यथा-कथाकेँ विभिन्न पौराणिक प्रतीकक माध्यमे व्यक्त करैत जातिप्रथा, धार्मिक असहिष्णुता, मिथिलाक गौरवपूर्ण इतिहास, बाढ़ि, भूकम्प आदिक चर्चा भेल अछि। कथामे कथाकारक दार्शनिक ओ नैबन्धिकक स्वरूप देखि पड़ैत छनि। मिथिलाक लोकजीवनक प्रति आप्त भाव हिनक शब्द-शब्दमे रूपायित भेल अछि।

‘चारिम कनियाँ’क कथानायक दोरिक भाय अस्पतालमे नोकरी करैत छथि। अस्पतालमे रहबाक कारणेँ पहिल पत्नीक अछैत ई दूटा परिचारिका सभसँ सम्बन्ध कऽ लैत छथि आ तीन पत्नीक पतिक रूपमे नोकरीसँ अवकाश ग्रहण करैत छथि। मुदा तथापि हिनक कामपिपासाक अन्त नहि होइत छनि आ अन्तमे एकटा आर परिचारिकाक संग ओकरा मातृत्व सुख प्रदान करबाक लाथेँ चारिमो विवाह कऽ लैत छथि, कारण ओ कमासुत अछि आ ओकरा संग विवाहक बादो हिनकापर कोनो आर्थिक भार पड़यवला नहि छलनि। फ्रायडक मनोविश्लेषणवादपर आधारित ई सेक्स प्रधान कथा वस्तुत: देहक भूखपर आधारित कथा थिक जाहिमे कामहिकेँ मानव मनक परिचालकक रूपमे चित्रित कयल गेल अछि।

अन्तिम **‘वंश नाश’** कथामे मिथिलाक विशिष्ट फल केराक खेतीक सम्बन्धमे विस्तृत विवेचन भेल अछि। मिथिलाक जलवायु केराक फलक हेतु अनुकूल अछि आ ई बरहमसिया फल अल्पे श्रममे

सालो भरि प्राप्त कएल जा सकैछ। ई फल ततेक उपयोगी अछि जे एकर जहिना तरकारी प्रशस्त मानल जाइत अछि, तहिना फलोक रूपमे सेवन करब स्वास्थ्यकर होइत अछि। एकर गुणकेँ जानि कथानायक फूलकुमार एकर खेती आरम्भ करैत छथि मुदा केराक धड़ ओ पातक रस कपड़ापर दाग उत्पन्न कऽ दैत छैक, से नहि जनैत छलाह। तेँ किछु दिन हिनका पराभव उठाबऽ पड़ैत छनि। पछाइत ई नव-नव प्रजातिक केरा उपजाबऽ लगैत छथि। तकर परिणाम ई होइत अछि जे देशी केराक वंशक नाश भऽ जाइत छैक। मिथिलामे केराक खेतीक विडम्बनासँ परिचय कराएब कथाकारक उद्देश्य बुझना जाइत अछि।

एहि तरहेँ 'एकलव्यपन'क दसो तथाकथित कथा मिथिलाक सांस्कृतिक जीवनक विभिन्न चित्रावली प्रस्तुत कयने अछि। कथाकार मिथिलाक सांस्कृतिक जीवन-दर्शनक यथार्थकेँ एहि कथा सभक माध्यमे प्रस्तुत कएलनि अछि। एहि कथा संग्रहक ई अन्यतम वैशिष्ट्य थिक जे एहिमे शास्त्रीय मैथिलीसँ सर्वथा परहेज रखैत लौकिक ओ स्थानीय पचपनिञा बोलीक शब्दावलीक प्रचुर प्रयोग भेल अछि जे मैथिलीक लोकजगतक स्वरूपक प्रतिनिधित्व करैत अछि। कथाकारक कथ्य भाषा ओ पात्रक भाषा दुनूमे कोनो अन्तर नहि देखि पड़ैत अछि।

जतऽ धरि कथा कहबाक शैलीक प्रश्न अछि ततऽ यैह कहल जा सकैछ जे श्रीमण्डलजीक शैली अप्पन छनि, वर्तनी अप्पन छनि आ एहिमे ई पूर्ण स्वतंत्रताक उपयोग कएलनि अछि आ एकटा फुट्टे भाषा-शैलीक निर्माण दिस सन्नद्ध छथि जे मिथिलाक लोकभाषा, मैथिलीक लोकस्वरूपक प्रतिनिधित्व करैत अछि। हिनक शैली विवरणात्मक ओ कथ्य सर्वथा मनोविश्लेषणसँ पूर्ण तथा भावनात्मक प्रकृतिक छनि। कथा कहबाक हिनक रीति अवश्य जटिल छनि जकर कारणेँ

कथा अप्पन केन्द्रबिन्दुपर दृढ़ नहि रहि पबैत अछि। तथापि हिनक कथा सभ मिथिलाक माटि-पानिक कथा थिक, मिथिलाक लोकजीवनक कथा थिक। लोकरंजकताक प्रधानता होइतो हिनक कथा सभ जनसामान्यक हेतु प्रवचनात्मक निबन्ध ओ गद्यकाव्यक सरसतासँ मण्डित रचनावली थिक जाहिमे युगसत्यक संवहन भेल अछि। कथाकार एकटा दार्शनिक जकाँ व्यक्ति ओ समाजक जीवनक विभिन्न तन्तुक व्याख्या करैत देखि पड़ैत छथि। ❑

‘सतबेध’: काव्य सौन्दर्य

‘सतबेध’ श्रीजगदीश प्रसाद मण्डलक काव्यकृति थिकनि। एहिमे हिनक उनचालीस गोट कविता संकलित छनि। ओना तँ मूल रूपमे श्रीमण्डलजी प्रशस्त गद्यकारक रूपमे प्रसिद्ध छथि आ परिमाणात्मक दृष्टियेँ साम्प्रतिक मैथिलीक ई नहि केवल उपन्याससम्राटेटा छथि अपितु निविष्ट कथाकारो छथि। शताधिक पोथीक प्रणयन हिनका आधुनिक मैथिलीक इतिहासपुरुषक रूपमे आख्यात कयने रहलनि अछि। विधाक दृष्टियेँ ई बहुआयामी रचनाकार छथि आ गद्य-पद्य-नाटक-काव्य सभ विधामे विपुल रचनाक सम्भार लगयबामे दत्तचित्त रहल छथि।

‘सतबेध’ पोथी 2018 इस्वीमे प्रकाशित भेल। एहिमे श्रीमण्डलजीक कवित्व शक्तिक ओहि स्वरूपक दर्शन होइत अछि जे मानव जीवनकेँ केहनो सम-विषम परिस्थितिमे अनुप्राणित कऽ नहि केवल आनन्द प्रदान करैत अछि अपितु निरन्तर विकासक पथपर अग्रेषित होयबाक प्रेरणा सेहो प्रदान करैत अछि। हिनक कविता मन, हृदय आ बुद्धिकेँ निर्मल कऽ पारस्परिक घृणा, द्वेष आदि दुर्भावनाक त्यागक मन्त्र दैत अछि, प्रेम आ समता सन उदात्त भावक जागरण करैत अछि तथा शाश्वत आनन्दक दिशामे उन्मुख करैत अछि जकरा काव्यशास्त्रीय लोकनि ब्रह्मानन्द सहोदर कहलनि अछि। सहृदयकेँ हिनक कवितामे युग जीवनक विकृति ओ नग्न यथार्थोक दर्शन भऽ सकैत छनि मुदा से विकृतिक प्रति जुगुप्साक भाव उत्पन्न करबाक हेतु बनैत अछि आ आदर्शक कल्पनापूर्वक आत्माकेँ विमुग्ध करबाक सामर्थ्यो रखैत अछि। हिनक कविता सभमे लोक कल्याणकारी भावनाक प्रधानता अछि।

गीतामे भगवान श्रीकृष्ण कहने छथि- ‘चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं गुणकर्म विभागश:’ अर्थात् संसारमे जतेक मनुष्य अछि तकरा हमहीं चारि वर्णमे विभाजित कयने छी। मुदा विभाजनक आधार छल गुण आ कर्म। जकरामे नीक गुण होइत छलैक आ जे नीक कर्ममे रत रहैत छल, सएह उच्च वर्णमे गनल जाइत छल आ जकर गुण आ कर्म क्रमश: न्यून होइत जाइत छलैक, से तहिना निम्न वर्णमे गनल जाइत छल। ई वर्णव्यवस्था जन्मपर आधारित नहि छलैक। तेँ एके परिवारमे गुण आ कर्मक आधारपर अनेक वर्णक लोक रहि सकैत छल। मुदा परवर्ती कालमे वर्ण-व्यवस्था जन्मक आधारपर रूढ़ भऽ गेल जकरा जाति-व्यवस्था कहल गेलैक। आब उच्च आ निम्न जातिक निर्धारण जन्मक आधारपर होमऽ लगलैक। मुदा तकर ठीक विपरीत उच्चो जातिमे अपकर्मीक जन्म होइत रहलैक आ निम्नो जातिमे उत्कृष्ट गुण-कर्मबला लोक उत्पन्न होइत रहलाह। परिणामत: समाजमे जातिगत आधारपर वैमनस्य बढ़लैक। एही स्थितिकेँ व्याख्यात करैत कविक उक्ति छनि-

“घरे घर जातिये जाति
टोले टोल बटमारि करै छइ।
अपना अपनी अपना पाछू
दिन-राति घटमारि करै छइ।” (जीवनधार, पृ. 10)

एहि कवितामे मानवक शील आ गुणकेँ ओकर स्तरीयताक मापक वा कसौटी कहल गेल अछि नहि कि जातिकेँ। जाति तँ कोढ़ बनि गेल अछि आ समाज तथा राष्ट्रकेँ खण्ड-पखण्ड करबापर लागल अछि। संगहि ई राष्ट्रीय समस्या बनि गेल अछि।

‘अपन बल’ कवितामे कवि स्वावलम्बिताकेँ मानव जीवनक हेतु आवश्यक माननि अछि। वस्तुत: स्वावलम्बिताक अभावमे लोक

कुण्ठाग्रस्त भऽ जाइत अछि, पराधीन भऽ जाइत अछि। कविक शब्दमे-

“अपना बलेँ जहिया जीअब
बलगर जिनगी तहिया पाएब
अपन कल-बल जहिया अपने
तहिया अपन जीवन पाएब।” (पृ. 8)

वस्तुत: जखन लोक स्वावलम्बी रहैत अछि तखने अपना मोने काज कऽ सकैत अछि। अपन बुद्धिक प्रयोग करबा लय स्वतंत्र रहैत अछि। बल मात्र भऽ गेने थोड़े केओ उत्कर्ष प्राप्त कऽ सकैत अछि? उत्कर्ष तखने भेटि सकैत छैक जखन बलक संग बुद्धि सेहो हो। कवि कहैत छथि-

“बलो की ओहिना अबै छै
बुधि बल सिरजय पड़ै छै
बुधि बल केर सीर पकैड़
सिर चढ़ि कहए लगै छइ।”

श्रीमण्डलजीक एक गोट कविता अछि ‘दियादी’। ई कथाकाव्य अछि। एहि कवितामे पद्यकथाक आस्वादन भेटैत अछि। कविक प्रकृति-प्रेम एहि कवितामे उत्कर्ष पओने अछि। कवि तिलकोर आ कुरलीक तुलनात्मक अध्ययन कऽ दुनूक वैशिष्ट्यकेँ निरूपित कएलनि अछि आ ई सिद्ध करबामे सफल भेल छथि जे प्रकृतिमे कोनो वस्तु ने सर्वथा नीके अछि आ ने सर्वथा अधलाहे। सभ वस्तुमे गुणो छैक आ अवगुणो। प्रत्येक सांसारिक वस्तुमे कोनो सर्वांगपूर्ण नहि अछि। महात्मा तुलसीदास एही तथ्यकेँ एहि तरहेँ कहने छथि- “विधि प्रपंच गुन-अवगुन साना।”

कविताक आरम्भ प्रबन्धात्मक शैलीमे भेल अछि। जयनगर-जगरनाथ मेल ट्रेनमे तिलकोर आ कुरलीक भेँट होइत छैक। दुनू एक्के प्रजातिक लता थिक। नजरि मिलैत देरी जेना एके परिवारक लोक घुलि-मिलि जाइत अछि आ परस्पर गप्प-सप्पमे लागि जाइत अछि, तहिना दुनू गप-सप्पमे निमग्न भऽ गेल। एतऽ एहि लता द्वयक मानवीकरण कवि-कल्पनाक उत्कर्ष दरसबैत अछि। कविक शब्दमे-

"जयनगर-जगरनाथ मेल ट्रेनमे
तिलकोर-कुरलीक चेहरा मिलल
एक-दोसरपर नजरि पड़िते
हब-गब क्रियमाण मिलल।"

ट्रेनमे दुनूक सीट नीचा-ऊपर छलैक। दुनू हाथ मिलाकऽ परस्पर अभिवादन कएलक। दुनूक रूप-रंग सामने छलैक। मुदा अन्तर ई छलैक जे तिलकोरक पातमे गुण छलैक आ कुरलीक फड़मे गुण छलैक। तिलकोरक फड़ मानवक हेतु अकार्यके होइछ। ओ फल सुग्गा आदि पक्षी खाइत अछि। मानव ओकर उपयोग नहि करैछ। मुदा तिलकोरक पातक तड़ुआ नामी छैक। एहिमे औषधीय गुण सेहो होइत छैक। दोसर दिस कुरलीक फलमे गुण होइत छैक। ओ खाद्य होइत अछि मुदा ओकर पात मनुष्यक हेतु उपयोगी नहि होइत छैक। तेँ दुनूक गुणमे भेद छै- एके कुल अर्थात् लता-कुलक होइतो दुनूक शील अर्थात् गुणमे अन्तर छै। तेँ तिलकोरक पात कुरलीक पातकेँ दुसि रहल छल आ कुरलीक फड़ तिलकोरक फड़केँ। मुदा से सर्वथा अनुचित भऽ रहल छल। एही अनौचित्यपर कवि पाठकक ध्यान आकृष्ट कऽ कहऽ चाहैत छथि जे एक-दोसराक प्रति खास कऽ गुण-शीलसँ निम्न स्तरीयोक प्रति स्नेह, सद्भाव ओ दयाक भाव रखबाक चाही। कथाकाव्य नीतिमूलक अछि।

संसारमे मनुष्य तँ सभ अछि मुदा जाहि मनुष्यमे विद्या, कला, शील, गुण किंवा दक्षता नहि रहैत छैक ओकरा मनुष्य कोना मानल जा सकैत छैक? एही तथ्यपर आधारित कविक एक गोट कविता छनि ‘ओइ पोखरिक मानियेँ की?’। पोखरिकेँ प्रतीक रूपमे प्रस्तुत कऽ कवि एहि कवितामे कहलनि अछि-

“ओइ पोखरिक मानिये की
जइमे डुबकी काटि ने पाबी
लीढ़, समार, केचलीसँ भरल
कमल-कलीकेँ देखि ने पाबी
सिंघार-माछ-मखानक चर्चे की
भेँटो-भाँट पाबि नहि पाबी।”

एतऽ धरि जे एहन पोखरिक अस्तित्वे पर प्रश्न उठबैत कवि कहैत छथि-

“जे पोखरि हेलइ जोग नै हुअए
ओइ पोखरिमे हेलब केना?
जे पोखरि बिनु महारक हुअए
ओ पोखरि भेल केना?”

एकटा कवितामे संसारक तुलना रणभूमिसँ कऽ कऽ तीक्ष्ण भावविन्यास कएल गेल अछि आ कहल गेल अछि जे एहि रणभूमिमे जे जतेक जिवटगर अछि, से ततबे नीक जीवन बिता पबैत अछि-

“जखने रणभूमि बीच जिनगी
हाथ अस्त्र शस्त्र माथ अबैत अछि

जेकर जेहन जेहेन जिबटगर
से तेहेन जीवन गढ़ै छै।”

अवश्ये कवि जीवनमे कर्मण्यता ओ संघर्षक महत्त्वक पाठ एहि माध्यमेँ प्रस्तुत कएलनि अछि।

साम्प्रतिक मानव जीवनमे जेना-जेना प्रतियोगिता बढ़ैत गेलैक अछि, तेना-तेना विश्वस्त लोक भेटब मुश्किल भऽ गेलैक अछि। तेँ आधुनिक युग-प्रवृत्तिसँ सावधान करैत कविक उक्ति छनि-

“के केकर हित के केकर मुद्दै
दिन राति देखैत रहै छी
गरदेन पकैड़ जे कानए-कलपए
पकैड़ गरदेन तोड़ैत देखै छी।”

सांसारिक परिवर्त्तनकेँ लक्ष्य करैत कविक उक्ति छनि-

“नजैर-नजैरमे तफरका भैया
सभ दिन होइत एलैए
कहियो नावपर गाड़ी तँ
कहियो गाड़ीपर नाव चढ़ैत एलैए।”

श्रमिक जीवनकेँ उत्साहित करैत कवि कहैत छथि-

“हे दुनियाँ के भाग्य विधाता
हाथ अहाँकेँ सभ किछु अछि
जे हाथ जेना झाड़ि पकड़बै
फल से साथ अहींकेँ अछि।”

एकटा कवितामे कविक राष्ट्रवादिता ओ ‘जय जवान जय किसान’क प्रति प्रतिबद्धताक भाव एहि शब्देँ अभिव्यक्त भेल अछि-

“किसानक देश भारत
भारत देश किसानक कहबैए
हरल-भरल हरियर धरती
साज श्रृंगार सजैए।”

एही तरहेँ श्रीमण्डलजीक कविता सभ भाव, विचार ओ कल्पनासँ परिपुष्ट अछि। ग्राम्य भाषा ओ वर्त्तनीक प्रयोग हिनक अन्यतम विशिष्टता छनि। भाषा हिनक प्रसादगुण सम्पन्न होइत छनि। समग्रतामे हिनक कवितापर यथार्थवादी वृत्तिक प्रभाव देखि पड़ैछ।❑

स्वतंत्रतापूर्व मिथिलाक इतिवृत्त: 'उत्थान-पतन'

श्रीजगदीश प्रसाद मण्डल विभिन्न विधामे विपुल रचना करैत रहलाह अछि आ मैथिली साहित्यक भण्डारकेँ समृद्ध करबामे एकल परिगणित भेलाह अछि। टैगोर साहित्य सम्मानसँ विभूषित मैथिलीक एहि एकल साहित्यकारकेँ औपन्यासिक कृति 'पंगु'पर 'साहित्य अकादेमी पुरस्कार'सँ समलंकृत कएल गेलनि आ तदतिरिक्तो अनेक सम्मान आ पुरस्कारसँ मण्डित हिनक व्यक्तित्व हिनका मैथिलीक शलाकापुरुषक रूपमे स्थापित कऽ देने छनि। 'वर्धस्व राष्ट्रं विमली कुरुष्व'क एहि प्रतिमानकेँ गद्य विधामे हिनक दक्षतासँ प्रभावित भऽ श्रीगजेन्द्र ठाकुरक ई उक्ति मैथिलीक आधुनिक साहित्यक क्षेत्रमे विमर्शक एकटा विशिष्ट आधार प्रस्तुत करैत अछि जाहिमे कहल गेल अछि जे "हिनका द्वारा कथ्यकेँ उद्देश्यपूर्ण बनयबाक आग्रह आ क्षमता हिनका मैथिली साहित्यमे ओहि स्थानपर स्थापित करैत अछि जतयसँ मैथिली साहित्यक इतिहास 'जगदीश प्रसाद मण्डलसँ पूर्व आ जगदीश प्रसाद मण्डलसँ' एहि दू खण्डमे पाठित होयत। समाजक सभ वर्ग हिनकर कथ्यमे भेटैत अछि आ से आलंकारिक रूपमे नहि वरन् अनायास, जे मैथिली साहित्य लेल एकटा हिलकोर अयबाक समान अछि।"

श्रीठाकुरक उपर्युक्त उक्ति भने 'अहो भाषामहोध्वनि:'क प्रतिरूप मानल जाय मुदा एतबा तँ स्वयंसिद्ध अछि जे परिमाणात्मक दृष्टियेँ ई मैथिली साहित्यकेँ जे प्रभुत्व प्रदान कएलनि आ ओकरा लोकसिद्ध प्रमाणित करबाक प्रयासमे जुटलाह, से सर्वथा अलौकिक बुझना जाइत अछि। हमर व्यक्तिगत मान्यता अछि जे प्रभावान्वितिक दृष्टियेँ हिनक सफलताक श्रेय हिनक औपन्यासिक कृति सभकेँ जाइत

छनि जाहिमे 'उत्थान-पतन' उपन्यास हिनक श्रेष्ठतम कृति थिकनि। एहि उपन्यासमे स्वतंत्रतापूर्वक मिथिलाक सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक ओ स्वास्थ्य सम्बन्धी गतिविधिक इतिवृत्त प्रस्तुत भेल अछि।

उपन्यासक प्रथम तत्त्व अछि कथानक। एहिमे घटना शृंखलाक वर्णन रहैत अछि। एहि उपन्यासमे ग्राम्य जीवन सम्बन्धी विषयकेँ कथानकक मूलमे राखल गेल अछि। कथाकार तटस्थ दर्शक जकाँ कथाक वर्णन कयने छथि तथा बीच-बीचमे पात्र लोकनिक कथोपकथन द्वारा ओकरा आगू बढ़ौलनि अछि। कथानकमे रोचकता, प्रवाह, सहजता, औचित्य आदिक समुचित रूपेँ पालन भेल अछि।

एहि उपन्यासमे आधिकारिक कथाक विस्तार आदिसँ अन्त धरि नहि भेल अछि अपितु विभिन्न प्रासंगिक कथा सभक संयोजनसँ उपन्यासकार पात्र लोकनिक मनोवैज्ञानिक विश्लेषण प्रस्तुत करैत केन्द्रीय भावक पल्लवन कएलनि अछि। कथाक आरम्भ होइत अछि एगारहटा ग्रहक एकत्रीकरणक अन्धविश्वासजन्य अनिष्टक आशंकासँ त्रस्त भऽ ग्रामीण लोकनिक अष्टयाम, नवाह ओ यज्ञमे संलग्नता तथा रौदीक कारणेँ सामान्य जनक भयावह स्थितिक चित्रणक संग। एकर किछु पाँती द्रष्टव्य अछि- "गामे-गाम केतौ अष्टयाम-कीर्तन तँ केतौ नवाह, केतौ चण्डी यज्ञ तँ केतौ सहस्र-चण्डी यज्ञ होइत। किएक तँ एगारहटा ग्रह एकत्रित भऽ गेल अछि। की हएत की नहि हएत कहब कठिन। एकटा बालग्रह भेने तँ सुखौनी लगि जाइत अछि आ जैठाम एगारहटा ग्रह एकत्रित अछि तैठाम तँ अनुमानो कम्मे हएत। परोपट्टा भगवानक नाओंसँ गदमिसान होइत। जअ-तील आ घीक गन्धसँ हवा सुगन्धित। सबहक हृदयमे भगवानक स्वरूप बिराजैत।"

"सभ व्यस्त। सभ हलचल। खर्चक कोनो इत्ता नहि। जेना निशाँ लगलापर बेहोशी होइत तहिना। जाधैर लोक कीर्तन मण्डलीक संग, मण्डपमे कीर्तन करैत ताधैर घरक सभ सुधि-बुधि बिसैर मस्त भऽ

रहैत। मुदा घरपर अबिते कियो भूखल गाए-महींसक डिरियाएब सुनि चिन्तित होइत तँ कियो बच्चाकेँ बाइस-बेरहट-ले ठुनुकब सुनि बेथाकेँ दबैत तँ कियो आँखिक होइत नोर बहबैत।”

“चारि सालक रौदीक चलैत पोखरिक पानि सुखि गेल। नमहर-नमहर दराइर खेतसँ लऽ कऽ पोखैर धरिमे फाटि गेल। इनारक मटियाएल पानि भरि-भरि सभ घैलमे रखि फरिछा-फरिछा लोटा-गिलासमे लऽ लऽ पीबैत। लोक की करत। केतए जाएत। मृत्युक मुँह छोड़ि दोसर रस्ते की?”

एहि प्रस्तावना वाक्य सभक द्वारा उपन्यासकार उपन्यासक उद्देश्यकेँ इंगित करैत ग्राम्य जीवनमे अन्धविश्वासक स्थिति एवं प्राकृतिक विपदा जन्य लोकक स्थितिसँ परिचय करबैत छथि आ ई सूचित करैत देखि पड़ैत छथि जे उपन्यास लोकजीवनमे पसरल अन्धविश्वास पर प्रहारपर आधारित होयत आ लोकजीवनमे प्राकृतिक विपदासँ हेठ होयबाक उपायक चिन्तन प्रस्तुत करत।

तत:पर गंगानन्दक कथाक आरम्भ होइत अछि। एहन अधलाह समयमे गंगानन्द लग बेटीक बिआहक चिन्ता घेरने छनि। मुदा ओ दू सालसँ जमीनक मालगुजारी नहि चुकौने छथि, तकर चिन्ता अलगे घेरने छनि। मालगुजारी नहि देबाक कारणेँ हुनक जमीन नीलाम भऽ सकैत छलनि आ तखन ओ अन्न-अन्न कऽ बेलल्ल भऽ जइतथि। जमीन्दारक सिपाही गंगानन्दसँ मालगुजारी ओसूल करबाक हेतु अबैत छनि। हुनक दीन-दशासँ द्रवित भऽ ओ हुनका ई उपाय बतबैत छनि जे जँ ओ अपन बेटाक विवाह पटवारीक बेटीसँ कऽ लेथि तँ ततेक दहेज भेटि जयतनि जे अपनो सुभ्यस्त भऽ जेताह आ जमीनक रसीद सेहो कटि जयतनि।

एमहर पटवारीकेँ तीनटा विवाह भेल रहैत छनि जाहिमे तेसर

पत्नी नीक कुल-शीलक नहि रहबाक कारणेँ हुनकासँ भेल बेटीक विवाह नीक कुल-शीलक वरसँ होयब असम्भव छल। तेँ गंगानन्दक उच्च कुल-शील रहितो हुनक मजबूरीक लाभ उठाय सिपाही हुनक पुत्रसँ पटवारीक ओहि बेटीक विवाह तय करबैत छथि। एहिसँ गंगानन्दकेँ सभटा जमीनक रसीदो भेटि जाइत छनि आ पर्याप्त भू सम्पत्तिक संग दहेजो हाथ लागि जाइत छनि। एहि तरहेँ गंगानन्दक विपत्तिक हरण भऽ जाइत छनि।

एही क्रममे उपन्यासकार तत्कालीन जमीन्दारी प्रथामे जमीन्दारक सिपाहीक अत्याचारक वर्णन कएलनि अछि। बिशेसर नामक एक गोट गृहस्थ अछि। एकर जमीन बेलगान छैक तेँ एकरा मालगुजारी नहि देबऽ पड़ैत छैक। मुदा जमीन्दारक सिपाही बलजोरी एकर बाड़ीसँ कदीमा तोड़ि लैत छैक। बिशेसर सिपाहीकेँ चारि-पाँच पैना लगा ओकरासँ कदीमा छीनि लैत अछि आ ओकर अपमानो करैत अछि। एहि उपकथाक माध्यमे जमीन्दारक अत्याचारक विरोधमे पनुगैत रैयतक संघर्षकेँ रूपायित कएल गेल अछि।

तत:पर जमीन्दार लोकनिक कल्याणकारी योजनाक कथा कहल गेल अछि। बिशेसरक सासुरक गाममे अगिलग्गी भऽ जाइत छैक। सौंसे गाम गृहविहीन भऽ जाइत अछि। जमीन्दार प्रत्येक रैयतिक हेतु काठ-बाँस उपलब्ध करयबाक आदेश दैत छथिन। मुदा ताहिमे सँ अधिकांश बराहिल आ पटवारी बेचि लैत अछि आ अत्यल्प संख्यामे काठ-बाँस रैयतकेँ उपलब्ध करबैत छैक। बिशेसर सासुर जाय केवल भोजनपर क्रमश: सासुरक प्रत्येक लोकक घर ठाठि-छाड़ि दैत छैक। एतावता उपन्यासकार जमीन्दारीमे होइत कल्याण-कार्यक लाभांश अमला सभक द्वारा हड़पि जयबाक भ्रष्टाचार तथा निम्नवर्गीय मजदूरक औदार्यक वर्णन कऽ कथाकेँ आगू बढ़ौलनि अछि।

तत:पर दीनानाथक प्रासंगिक कथा आएल अछि। दीनानाथ

अपन सतमायक द्वारा सताओल जयबाक कारणेँ पटुआ कटबाक नोकरी करबाक उद्देश्यसँ दिनाजपुरक यात्रा करैत अछि। मुदा बथनाहामे ओकरा एकटा वैद्य अपन नोकरीपर राखि लैत छैक। वैद्यक ओहि ठाम नोकरी करैत-करैत ओ स्वयं नीक वैद्य बनि जाइत अछि आ दस वर्षक बाद एकटा नीक वैद्यक रूपमे गाम घुरि अबैत अछि।

अगिला प्रासंगिक कथामे अन्धविश्वासपर प्रहार कएल गेल अछि। लालपुर गाममे लेलहा नामक एकटा व्यक्ति रहैत अछि। ओकर बेटा गुलबा लतामक गाछपर चढ़ैत अछि। ओकरा पैरमे झुनझुनी पैसि जाइत छैक। सभ बुझैत अछि जे ओकरा भूत लागि गेलैक अछि। लोक सभकेँ ई विश्वास भऽ जाइत छैक जे एहि बेरुक दशमीमे दूटा नवकनियाँ डनिपन सिखलक अछि आ वएह सभ लेलहाकेँ भूत लगाय ओकर जान लेबए चाहैत अछि। ढोरबा नामक ओझाकेँ बजयबाक जोगाड़ धराओल जाइत छैक। ढोरबा बँसबाड़िमे बाँस काटैत भेटैत छैक। ओ आँगन जाए, गंगाजल छीटि, गोसाँइकेँ गोड़ लागि अपन देह बान्हि लेलहाक ओतय पहुँचैत अछि आ कुश नहि भेटलापर बाढ़निक टुकड़ी आनि मंत्र फूकि गुलबाक उपचार करैत अछि। मुदा ढोरबाक मंत्र काज नहि करैत छैक। तकर बाद ओ माटिकेँ मंत्रा कऽ झाड़-फूक करैत अछि। मुदा गुलबाक झुनझुनी नहि छूटैत छैक। तखन भगतकेँ ताकल जाइत अछि। ओ गुलबाकेँ एकटा फूल खोआ देबऽ कहैत छैक आ भाओ करयबाक मंत्रणा दैत छैक। मुदा फूल खयलोपर गुलबाक हालतिमे सुधार नहि होइत छैक। तखन गुनीकेँ ताकल जाइत अछि। मुदा गुनीकेँ जनीजातिक मन्तर तँ अबैत छैक मुदा ओ गुलबाक मर्द होयबाक कारणेँ ओकर उपचार नहि कऽ पबैत अछि। तखन एक मालीकेँ पकड़ल जाइछ। ओ एक्कैस रुपैआ मङैत छैक। मुदा गरीब लेलहा लग तकर उपाय नहि छैक। तखन माली ओकरा किछु टोना बतबैत छैक मुदा ओहूसँ गुलबाकेँ कोनो सुधार नहि होइत छैक। तखन

दोसर भगतकेँ बजाओल जाइत छैक। ओ पहिने दू सय टाकाक सामग्री ओरियाबऽ कहैत छैक। लेलहा दुनू प्राणी खेत बेचि कऽ टाका जुटयबाक जोगाड़मे लगैत अछि। तावत बिसेसर आबि जाइत छैक आ ओ कहैत छैक जे गुलबाकेँ भूत नहि लागल छैक। ओकरा रोग छैक तेँ दीनानाथ वैदसँ देखाउ। अन्तत: दीनानाथ वैद्य गुलबाक रोग छोड़यबामे समर्थ होइत छथि। एहि प्रासंगिक कथाक माध्यमे उपन्यासकार लोकजगतमे व्याप्त अन्धविश्वासक पराकाष्ठाक वर्णन कएलनि अछि।

तत:पर ज्ञानचन्दक प्रासंगिक कथा आएल अछि। ज्ञानचन्द गाममे रहि नेना सभकेँ अल्प वेतन आ शनिचराक भरोसे पढ़ायब शुरू करैत छथि। मुदा बाढ़िमे गाम ध्वस्त भऽ जाइत छनि। हुनको पलायन करऽ पड़ैत छनि। पितासँ किछु सहायता पाबि ओ पुन: गाम प्रत्यावर्तित होइत छथि। मुदा गाममे आजीविकाक कोनो जोगाड़ नहि देखि ओ कमलपुर जाइत छथि। ओहि ठाम हुनका एकटा सुभ्यस्त परिवारमे तीनटा कन्याकेँ पढ़यबाक चाकरी भेटैत छनि। मुदा पढ़यबाक बदला ओ परिवार हिनका भोजनटा प्रदान कऽ सकैत छलनि। एहि परिवारक मुखियाक नाम विहारी रहैत छैक। ओ बिशेसरक संग एहि विषयमे विमर्श करैत अछि जे ज्ञानचन्द नामक एकटा शिक्षक गाममे आएल छथि। हुनका हम अपना ओहि ठाम रखने छियनि। बिशेसर टोलक लोक सभक बैसार करैत छथि आ टोलक सभटा नेनाकेँ पढ़यबाक हेतु ज्ञानचन्दकेँ बहाल कऽ लैत छथि। भोजनक अतिरिक्त हुनका घरपरक हेतु अतिरिक्त एक धारा चाउर वेतन देबाक निर्णय होइत छैक। एतावता कमलपुर गाममे नेना सभक पढ़ौनीक व्यवस्था शुरू भऽ जाइत अछि। एहि उपकथाक माध्यमे उपन्यासकार सामूहिक प्रयत्न द्वारा शिक्षाक प्रसारक व्यवस्थाक अनुमोदन कएलनि अछि। ओ एहि मान्यताकेँ स्थापित कएलनि अछि

जे गरीब-गुरबाक नेनाक शिक्षा-व्यवस्थाक एहने उपाय होइक तँ सभ वर्गक नेना शिक्षित भऽ सकैछ।

तत:पर अगिला प्रासंगिक कथामे जूड़-शीतल पाबनिक अवसरपर शिकार खेलयबाक क्रममे रूपनगर आ प्रेमनगर गामक लोकक बीच अनेरेक मारि-पीट आ दुनू दिसुक खेत परता रहबाक कथा आएल अछि। एही क्रममे दुनू गामक घसवाहिनीक बीच भेल मारा-मारीक रोचक वर्णन भेल अछि आ बिशेसरक प्रयाससँ दुनू गाममे मिलानी करबाक कथा कहल गेल अछि।

तत:पर दुखन सिपाहीक कृपासँ बिशेसरकेँ एकटा परती जमीन प्राप्त होयबाक तथा गामक सभटा लोकक जमीनक रसीद बिनु मालगुजारी लेने काटि देबाक वार्त्ता आएल अछि जे विश्वसनीयताकेँ खण्डित करैत बुझना जाइत अछि।

एकर बाद गंगानन्दक दोसर भाइ श्यामानन्दक कथा आएल अछि। श्यामानन्दकेँ हिस्सामे दस बीघा जमीन भेटलनि। ओ पारम्परिक खेती आ भगवान भरोसे पानिक आशा छोड़ि उन्नत खेती करय चाहैत छथि। ताहि लेल बोरिंग आ पम्पिंग सेट कीनए चाहैत छथि। पत्नी हुनका सहयोग करैत छथिन। ओ पत्नीक किछु गहना बेचि बोरिंग-पम्पिंग सेट लऽ लेत छथि आ सुभ्यस्त कृषक बनि आनन्दपूर्ण जीवन जीवय लगैत छथि। एहि उपकथाक माध्यमे उपन्यासकार उन्नत खेती करबाक संदेश कृषक समुदायकेँ प्रदान कएलनि अछि। एहि कथाकेँ आगू बढ़बैत बिशेसर, बचना आ बचनूक खेत एक ठाम रहबाक कारणेँ तीनू गोटेक सहयोगसँ हुनको सभक खेतमे बोरिंग-पम्पिंग सेट गड़यबाक आ उन्नत खेतीक दिशामे आगू बढ़बाक कथा कहल गेल अछि। एही क्रममे रामफलक नोकरीक संग-संग पापड़ बनयबाक व्यवसाय करबाक तथा मिस्त्री बनबाक गाथा आएल अछि जाहिमे संदेश प्रदान कएल गेल अछि जे शिक्षित रहने

लोक अनेक तरहेँ अपन आजीविकामे क्रमिक सुधार कऽ सकैत अछि।

तत:पर रघुनाथ दासक महंथ बनबाक कथा तथा सेठक बेटीक चक्करमे पड़ि सुकलक जहलमे पड़बाक कथा तथा ओकर अपराधी बनबाक कथा आएल अछि। तदुपरान्त महंथक द्वारा मेलाक व्यवस्था आ मेलामे कन्याक चोरिक कथा आएल अछि। एहि कथाक माध्यमे उपन्यासकार मेला-ठेलाक व्यवस्थापर कशाघात कएलनि अछि।

तत:पर गंगानन्दक तेसर भाय यमुनानन्दक कथा कहल गेल अछि। ओ गंगानन्दक मौजेक काज देखैत अछि जे ओकरा बेटाक विवाहक उपलक्ष्यमे समधि पटवारी द्वारा दहेजमे प्रदान कएल गेल छलैक। तत:पर घुरनीक पतिक कथा अछि जे अपन बेटीक विवाह नहि करा सकबाक कारणेँ जहर खा कऽ मरि जाइत अछि। एहि माध्यमे उपन्यासकार दहेज प्रथापर प्रहार कएलनि अछि। तत:पर यमुनानन्दक संग घुरनीक बेटी सरिताक अवैध सम्बन्ध ओ गामक लोक द्वारा यमुनानन्दकेँ मौजेपर सँ मारि-पीट कऽ भगयबाक कथाक संगहि गामक जमीनपर ग्रामीणक कब्जा कऽ लेबाक कथा आएल अछि। एहि प्रासंगिक कथामे जमीन्दारी प्रथाक विरोध कथाकारक उद्देश्य बुझना जाइत छनि।

तत:पर सर्जिकल डाक्टर नीलमणिक कथा अछि। हिनक पिताकेँ बंगालक हिन्दू-मुसलमानक दंगामे मुसलमान लोकनिक द्वारा मारि देल जाइत छनि। हिनक पिताक एकटा मुसलमान सहकर्मीकेँ जखन ई पता लगैत छनि जे नीलमणिक पिताक हत्या हुनके पुत्र कएलकनि तँ अपन ओहि मित्रक शोकमे क्रमश: दुनू प्राणी प्राणत्याग कऽ लैत छथि। कथाकार एहि ठाम हिन्दू-मुस्लिम एकताक स्थापनाक प्रति प्रतिबद्ध देखि पड़ैत छथि, मुदा तकर विश्वसनीयता संदिग्ध भऽ गेने कथावस्तु कमजोर होइत देखि पड़ैत अछि। पछाति नीलमणिक

बंगालसँ भागि कऽ दरभंगा आयब, शंकर पण्डितक ओतऽ आश्रय पायब तथा लोक सभक एलोपैथी इलाज करबाक कथा कहल गेल अछि। एही क्रममे मिथिलाक जाति प्रथाक सेहो भर्त्सना कएल गेल अछि।

तत:पर 1942क भारत छोड़ो आन्दोलनक चर्च भेल अछि। तिरवेणीक रेलवे कार्यालयसँ कागत प्राप्त करबाक क्रममे कार्यालयक भ्रष्टाचारक वर्णनक संगहि बंगट आ गणेशीक रेलवेमे बहाली कथा-क्रमकेँ आगू बढ़बैत अछि। पछाति गणेशी व्यापारीक ओतय नोकरी करऽ लगैत अछि आ ड्राइवरोक काज सीखि लैत अछि। ओ अपना धिया-पुताकेँ नीक जकाँ शिक्षा प्रदान करबैत अछि। ओकर एकमात्र बेटीक विवाह सोनेलालक बेटाक संग पर्याप्त दहेज ओ वर विदाइक संग होइत छैक। कलकत्ताक ड्रामा पार्टी लग स्थानीय मनचलक पार्टी अपन प्रतिष्ठा बनौने नहि रहि पबैत अछि। एहि कथ्यक द्वारा उपन्यासकार ग्राम्य नाच पार्टी सभक विकासक संदेश प्रदान करैत छथि। तत:पर विदेसरक पत्नीक तथा ओकर ससुर ओ साढ़ूक बाढ़िक कारणेँ मृत्युक कथा आ विदेसर द्वारा अपन विधवा सारिक संग विवाहक स्वीकृतिक माध्यमे विधवा-विवाहकेँ स्वीकृति प्रदान करबाक मानसिकताक अभिव्यक्ति भेल अछि।

तत:पर स्वतंत्रतापूर्व गाम-घरक शिक्षाक दुरवस्थाक वर्णन भेल अछि तथा जमीन्दारी प्रथाक विरोधक सेहो चर्च भेल अछि। सम्भ्रान्त लोकक बीच संस्कृत आ परिनिष्ठित मैथिलीक प्रयोग तथा जन सामान्यक बीच सर्वहाराक भाषाक प्रयोगक चर्चा कऽ भाषा, कला, संस्कृति आदिक आधारपर समाजमे दू वर्ग होयबाक चर्चा भेल अछि। तत:पर परस्पर मित्र खुशीलाल आ भोलानाथक पारिवारिक स्थितिक वर्णन भेल अछि। खुशीलाल बिलटल अछि आ भोलानाथ धर-धान्यसँ सम्पन्न अछि। मुदा खुशीलालकेँ धिया-पुताकेँ भोजनो देबाक उपाय

नहि छैक आ भोलानाथकेँ दुनू बेकतीक हेतु पयाप्त सम्पत्ति तँ छैक मुदा सन्तति नहि छैक। ओ अपन सम्पत्तिक किछु अंश खुशीलालकेँ दऽ ओकरो सुभ्यस्त बनयबाक प्रयास करैत अछि, संगहि ओकर पत्नीक इलाजमे सेहो सहायता करैत अछि। तत:पर दुनू दोस्त उन्नीकुटी तीर्थ हेतु त्रिपुरा विदा होइत अछि। ओतहि भोलानाथक मति बदलैत छैक आ ओ अपन सम्पत्ति नेना सभक स्कूल बनयबामे खर्च करबाक निश्चय कऽ लैत अछि।

उपन्यासक अन्तिम परिच्छेदमे भोलानाथ लगपासक पाँच गामक लोकक बैसार करैत अछि आ अपन सकल सम्पत्ति सार्वजनिक विद्यालयक हेतु दान दऽ दैत अछि। कालेजक अवकाशप्राप्त अध्यापक पं. शंकर नि:शुल्क शिक्षा देबाक तत्परता देखबैत छथि तथा डॉ. नीलमणि अपन आधा समय नि:शुल्क स्वास्थ्य सेवाक हेतु दान करबाक घोषणा करैत छथि। ईंटा भट्ठा चलौनिहार पंचकोसीक व्यापारी सभ स्कूलक हेतु ईंट जुटयबाक भार लैत छथि तथा मनचल अपन नाच पार्टीक माध्यमे विद्यालयक प्रचार करबाक ओ आमदनीक अंश स्कूलमे लगयबाक हेतु प्रतिबद्ध होइत अछि।

अन्तमे पं. शंकरक अध्यक्षतामे समाज उत्थान समिति बनैत अछि जे एहि सभक ताकछेम करितय। एहि तरहेँ समाजक उत्थानक एकटा रूपरेखा तैयार होइत अछि तथा लोक सभसँ आग्रह कएल जाइत छनि जे ओ सभ ग्रामोत्थानमे अपन सहयोग करैत रहथि, विवाह-श्राद्धादिमे धनक अपव्यय नहि करथि आ ओहि धनकेँ समाज कल्याणमे लगाबथि। समाजमे दहेजक प्रथाकेँ समूल नष्ट कएल जाए, आपसमे सामंजस्य बना कऽ राखल जाय आ मोकदमाबाजीकेँ प्रश्रय नहि देल जाय। एतावता उपन्यासकार एकटा विकसित समाजक परिकल्पनाकेँ साकार करबाक संदेश दैत उपन्यासक कथाक समापन कएलनि अछि।

वस्तुत: कथानकक दृष्टियेँ ई उपन्यास अनेक प्रासंगिक कथाक समाहार अछि आ एहिमे आधिकारिक कथाक अभाव अछि, तथापि उपन्यासकार समाज उत्थानक विभिन्न मार्गकेँ प्रशस्त करबाक दृष्टिकोणसँ कृषि व्यवस्था, शिक्षा, स्वास्थ्य आदिक उत्थानकेँ केन्द्रीय विषयक रूपमे कथा-वस्तुमे समेटबाक उत्तम प्रयत्न कएलनि अछि।

कथोपकथन किंवा संवाद उपन्यासक दोसर तत्त्व थिक। मुदा ई प्रमुख तत्त्व नहि थिक अपितु अनुषंगी तत्त्व थिक। नाटकमे जहिना ई प्रमुख तत्त्व होइत अछि तहिना उपन्यासमे आवश्यक भेनहि एकर प्रयोग अपेक्षित रहैछ। एकरा द्वारा कथावस्तुक विकास होइत छैक तथा पात्रलोकनिक चरित्र सम्पुष्ट होइत छनि। प्रासंगिक घटनाक वर्णन ओ परवर्ती एवं पूर्ववर्ती घटना सेहो एकर माध्यमे अभिव्यक्त होइत अछि। पात्रक मनोविश्लेषण, घटनाक वर्णन आदिमे सेहो ई सहायक होइत अछि।

'उत्थान-पतन' वर्णन-प्रधान उपन्यास अछि तेँ एहिमे कथोपकथनक अत्यल्पे प्रयोग भेल अछि। अधिकांश घटना, पात्र चरित्रक चित्र उपन्यासकार वर्णन-विन्यासक माध्यमहिसँ प्रकट कएलनि अछि। अनेक ठाम कथोपकथनक सेहो सुष्ठु निवेश देखि पड़ैत अछि। योजित कथोपकथन सभ कतहु अल्प शब्दक माध्यमे तँ कतहु-कतहु अनेक वाक्यावली द्वारा प्रकट भेल अछि।

एक वाक्य ओ एक शब्दक छोट-छोट कथोपकथनक उदाहरण एहि स्थलपर द्रष्टव्य अछि-

एका-एकी बिशेसर सभकेँ पुछए लगल-

"अहाँकेँ बाँस काटल हएत?"

'हँ'

'बत्ती चीरल हएत?"

‘हँ’

‘बत्ती छिलल हएत?”

‘हँ’

‘बन्हन देल हएत?”

‘हँ’

‘खढ़ अँटियौल हएत?”

‘हँ’

‘खरौआ जौर बाँटल हएत?”

‘हँ’

‘टाट बान्हल हएत?”

‘हँ’

“जखन सभ काज करैक लूरि ऐछे तखन बैसल किए छी?”

दीर्घ कथोपकथनक उदाहरण एहि स्थलपर द्रष्टव्य अछि-

सोनेलाल रामकिसुनकेँ पुछलक- “अहाँ की कहए चाहै छी?”

रामकिसुन- “ओना, हम सभ तैयार भऽ कऽ नहियेँ आएल छी मुदा लड़काकेँ गोरलगाइ दऽ जमाए बनाइए कऽ जाएब।”

सोनेलाल- “कोनो हरज नहि। मुदा बिनु खान-पीन केने जमाए केना बनाएब?”

रामकिसुन- “बड़बढ़ियाँ। जाउ, भानस करबाउ। मुदा बेसी असार-पसार नै करब। जाबे भानस हएत ताबे अहूँ चारिटा समाजक लोककेँ बजा लिअ। बरियातीक गप-सप्प कइए लेब।”

एही प्रकृतिक कथोपकथनक दोसर उदाहरण एहि पंक्ति सभमे द्रष्टव्य अछि- चपरासी त्रिवेणीकेँ कहलक- “समाँग सभ गाममे नै

छह? अखन धड़हल्लेसँ बहाली होइ छइ। सभकेँ नोकरी भऽ जेतह।"

त्रिवेणी- "खरचो-बरचो पड़तै।"

चपरासी- "पाँच रुपैये आदमी खरच हेतह। दू रुपैआ किरानी बाबू लेतह, दू रुपैआ साहैब आ एक रुपैआ हमर हिस्सा होइए।"

त्रिवेणी- "भाय, करए की सभ पड़तै।"

चपरासी- "किछु ने करए पड़तह। पाँच रुपैआ लाबह। तूँ एत्तै बैसह। ऑफिसेमे फारम छइ। खाली अपन नाम-गामक ठेकान कहि दाए। ओइठाम फारम लऽ किरानी बाबूसँ भरा देबह। खाली हमरा सोझहामे दसखत करए पड़तह।"

"अगर दसखत कएल नै होइत होइ तब?"

"तब की? औठा निशान दऽ देतइ"

"भाय दूटा समाँग आएल अछि। दुनूकेँ काज करबा दहक।"

"अच्छा थमहह, किरानी बाबूसँ गप केने अबै छी।"

दीर्घ संवादक उदाहरण सेहो देखल जा सकैछ-

डॉ. नीलमणि- "जखन ऐठामक लोक एलोपैथ जनितो ने अछि तखन इलाज केना कराएत?"

पण्डित शंकर बजला-

"अइले वैचारिक आ बेवहारिक संघर्ष करए पड़त। हमरा ओहिना मोन अछि जे जखन लहेरियासराय अस्पताल बनल आ अंग्रेजी दवाइक माध्यमसँ इलाज शुरू भेल तखन गाममे एहेन वातावरण बनि गेल जे अंग्रेजी दवाइ गाइक खून आ सुगरक चर्बीसँ बनैए। जेकर असर भेलै जे हिन्दुओ आ मुसलमानो अंग्रेजी इलाजसँ बिमुख हुअ लगला। मिथिलांचलक ई इलाका जाति आ धर्मसँ ओइ

रूपेँ बँटि गेल अछि जे कोनो नीक काज बिनु संघर्षे सम्भव नै अछि।"

एहि तरहेँ उपन्यासकार लघु, मध्यम, दीर्घ ओ अति दीर्घो कथोपकथनक प्रयोग कएलनि अछि। उपन्यास वर्णन-प्रधान होयबाक कारणेँ एकरसताकेँ तोड़बाक दृष्टियेँ हिनक ई प्रयोग पाठकीयताक सम्पोषक अछि। संगहि एहिसँ पात्र चरित्र ओ परिवेशक संगहि पात्रक आन्तरिक मनोवृत्तिक सेहो स्पष्टीकरण होइत अछि। कथोपकथनक पात्रानुरूपता आ सहजता एहि उपन्यासक वैशिष्ट्य थिक।

उपन्यासक तेसर प्रमुख तत्त्व अछि पात्र ओ चरित्र चित्रण। औपन्यासिक वस्तुक प्रमुख नियामक ओ ओकर स्वरूपक निर्धारण कयनिहार पात्रे होइत अछि। पात्रेक माध्यमे वस्तु सृजित होइत छैक। पात्रक चयन, ओकर सजीव चित्रण आ ओकरा माध्यमे जीवन यथार्थक अभिव्यक्तिये उपन्यासक उद्देश्यकेँ प्रकट करैत छैक। उपन्यासमे पात्रक श्रेणी ओ प्रकृतिक अनुरूपेँ ओकर क्रिया ओ भाषाक प्रस्तुति आवश्यक होइत छैक। पात्र चरित्रक विभिन्नता कथा-वस्तुकेँ क्रमश: अग्रेषित करैत छैक। पात्रेक माध्यमसँ मानव जीवनक व्याख्या कएल जाइत अछि।

श्रीमण्डलजीक 'उत्थान-पतन' उपन्यासमे कथा वस्तु विविधतासँ भरल अछि। स्वभावत: हिनक पात्र सभ विभिन्न वर्ग, जाति, वयस, लिंग, वैचारिकता आदिक प्रतिनिधित्व करैत छथि। एतबा धरि अवश्य अछि जे हिनक अधिकांश पात्र ग्राम्य जीवनेसँ सम्पृक्त छथि। ग्रामीण पात्र रहितो हिनक पात्र सभ विभिन्न आर्थिक स्थितिक कृषक, मजदूर, पटवारी, जमीन्दार, डाक्टर, प्रोफेसर आदि वर्गक छथि। हिनक पात्रमे स्त्री, पुरुष, नेना, बूढ़, सवर्ण, अवर्ण, शिक्षित-अशिक्षित सभ कोटिक लोक छथि। पात्रक एहि वैविध्यक कारण उत्थान-पतन मानव जीवनक महाकाव्य जकाँ व्यापकता प्राप्त

कयने अछि।

ओना, श्रीमण्डलजीक एहि उपन्यासमे आधिकारिक कथाक अभावक कारणेँ आदिसँ अन्त धरि विद्यमान रहऽवला कोनो प्रधान पात्र नहि देखि पड़ैछ मुदा अधिकांश पात्र अनुषंगी होइतो विशिष्ट चरित्रसँ सम्पन्न छथि। एहि उपन्यासक पात्र सभमे अधिकांश निम्न ओ मध्य वर्गक लोक छथि। सामाजिक-आर्थिक ओ शैक्षणिक दृष्टिसँ समाजक सभसँ न्यून स्तरीयता प्राप्त सामान्य सर्वहारा वर्गकेँ एहि उपन्यासक केन्द्रमे राखल गेल अछि तथापि हिनक अधिकांश पात्र उदात्त गुणसँ सम्पन्न देखि पड़ैछ। एहि पात्र सभमे त्याग, विवेक, उत्साह, जिजीविषा आदि गुणक निदर्शन भेटैत अछि। त्याग, विनय, शील, दक्षता, शालीनता, पवित्र हृदय एवं उत्साह-सम्पन्न ई पात्र सभ उपन्यासक केन्द्रीय भावक संपोषक छथि।

एहि उपन्यासमे गंगानन्द ओ हुनक तीनू भाँइक कथाकेँ प्रमुखता देल गेलनि अछि। ताहि आधारपर गंगानन्दकेँ एकर एकटा प्रमुख पात्र मानल जा सकैत अछि। गंगानन्द तीस बीघाक जोतवला सुभ्यस्त कृषक अछि मुदा तीन साल धरि लगातार रौदीक कारण ओकर स्थिति खराब भऽ जाइत छैक। ओकरा बेटीक विवाह समुपस्थित छैक, तकर चिन्ता तँ छैके, संगहि मालगुजारी जमा नहि करबाक कारणेँ जमीन हाथसँ निकलबाक डर छैक। तेँ ओ पटवारीक निम्न कुल-शीलक बेटीसँ अपन बेटाक विवाह करबाक हेतु तत्पर भऽ जाइत अछि आ धन-धान्यसँ परिपूर्ण भऽ जाइत अछि। एकर चरित्रमे कुलक मर्यादाक प्रति समझौतावादी प्रवृत्तिक दर्शन होइत अछि।

बिशेसर एहि उपन्यासक एकटा प्रधान चरित्र अछि। ई क्रान्तिकारी प्रवृत्तिक अछि तेँ जखन राजक सिपाही एकर बाड़ीसँ कदीमा मना कयलाक बादो काटि लैत छैक, तँ ई नहि ओकरा केवल चारि-पाँच पैने लगा दैत छैक अपितु ओकरासँ थूक चटबा ओकर

आदतिमे सुधार सेहो करऽ चाहैत छैक। अवश्ये ई साहसी पुरुष अछि। ई उपकारी प्रवृत्तिक अछि तेँ अगिलग्गी भेलापर सासुर जाय सभक घर ठाढ़ करबामे मुफ्ते मदति कऽ दैत छैक। बिशेसरमे सांगठनिक चातुर्य सेहो छैक। ओ अपन दूटा अरियाकेँ समझा-बुझा कऽ सझिया बोरिंगक जोगाड़ कऽ उन्नत कृषि शुरू करैत अछि। ओ समाजक उन्नति चाहैत अछि। ओ नहि चाहैछ जे लोक छोट-मोट बातपर झगड़ा-झंझटिमे दिन बिता दिअए अपितु ओ चाहैत अछि जे लोक समयक सदुपयोग कऽ सभ तरहेँ सम्पन्न बनय। ओ नहि केवल अपना गामक कृषिक उन्नतिमे सहायक होइत अछि अपितु गाममे विद्यालय सेहो खोलबाक हेतु तत्पर रहैत अछि। वस्तुत: एकरा एहि उपन्यासक नायकत्व प्राप्त छैक।

गंगानन्दक भाइ श्यामानन्द सेहो उच्च कोटिक विचारक अछि। जखन ओकरा पैतृक सम्पत्तिक बाँटमे दस बीघा जमीन प्राप्त भऽ जाइत छैक तखनेसँ ओ पारम्परिक कृषिपर भरोस छोड़ि आधुनिक ढंगक कृषि करब आरम्भ कऽ दैत अछि।

श्यामानन्दक छोट भाए यमुनानन्द लम्पट प्रवृत्तिक अछि। ओकरा जखन गंगानन्दक मौजेक रखबारी भेटि जाइत छैक तँ ओ ऐय्यासी करय लगैत अछि आ बहिकिरनीक संग बलात्कार करैत अछि। परिणामत: ओकरा मौजेपर सँ भगा देल जाइत छैक आ मौजे सेहो ग्रामीण लोकनि कब्जा कऽ लैत छथि।

एहिना पंडित शंकर ग्रामोत्थानक चिन्तक छथि आ अपन मुफ्त सेवा गामकेँ शिक्षित बनयबामे देबाक हेतु तत्पर भऽ जाइत छथि। डॉ. नीलमणि सेहो भद्र लोक छथि जे गामक स्वास्थ्य सेवाक हेतु अपन आधा समय मुफ्त देबाक हेतु तत्पर भऽ जाइत छथि। भोलानाथ उत्कृष्ट मित्र आ समाजसेवीक रूपमे चित्रित भेल छथि।

दुखन सिपाही सेहो आदर्श चरित्रक अछि जे गरीब-गुरबाकेँ

रसीद उपलब्ध करबा ओकरा सभक जमीन नीलाम होयबासँ बचा दैत छैक। दीनानाथ परिश्रमी मनुक्खक प्रतीक अछि जे अपन परिश्रमक बलपर मजदूरसँ वैद्य बनि जाइत अछि। महंथ रघुनाथ दास कोढ़ि प्रकृतिक लोक छथि जे अपन पत्नी पर्यन्तक हेतु भोजन नहि जुटा पबैत छथि जाहि कारणेँ पत्नी नैहर पड़ा जाइत छथिन आ अन्तत: हिनका महंथी गद्दी भेटि गेलासँ जीवन संयोगात् बदलि जाइत छनि। एही तरहेँ उपन्यासकार अनेक श्रेणीक पात्र सभक चरित्रकेँ उपस्थापित कऽ उपन्यासकेँ वैविध्यपूर्ण ओ रससिक्त बना देलनि अछि। पटवारी, बराहिल आदिक चरित्रमे अनैतिकता ओ भ्रष्टाचारी प्रवृत्तिक निदर्शन भेल अछि।

उपन्यासक नारी पात्र सभ सामान्ये कोटिक बुझना जाइत छथि। ई लोकनि ग्राम्य जीवनक सामान्य नारीक प्रतिनिधित्व करैत छथि। गंगानन्दक पत्नी आस्तिक छथि मुदा कर्मशील नहि। हुनक उक्ति- "यज्ञो केकरो बाँकी रहै छइ। इएह तँ भगवानक लीला छैन जे गरीबसँ लऽ कऽ अमीर धरिक काज कहुना-ने-कहुना भइये जाइ छइ।"मे भाग्यवादिता जे मिथिलाक अशिक्षिता नारीक चरित्रक प्रधान गुण होइछ, सैह हिनकोमे पाओल जाइत अछि। तथापि अपन खेत बचयबाक हेतु ओ गहना उत्सर्ग करैत उदात्त नारी चरित्रकेँ प्रस्तुत कएलनि अछि।

यमुनानन्दक पत्नी माला ईर्ष्यालु आ झगड़ाहु प्रवृत्तिक छथि। हुनका गंगानन्दक अकस्मात् प्राप्त धनराशि देखि क्वाथ होमए लगैत छनि। ओ गंगानन्दक पुत्रक द्विरागमनक अवसरपर अपन दुआरिक उपयोगसँ खिन्न भऽ जाइत छथि। पतिक प्रति हुनक उक्ति- "हम अपन घर-अँगना भैयाकेँ दऽ दिऐन आ हुनकर जे घर भरलैन से हुनकर छिऐन! अगर अहाँ बुते नै हएत तँ बाजू। हम देखा दइ छिऐन जे केहेन बापक बेटी हमहूँ छी। आइए जँ अँगनामे छहरदेबाली नै घींच दिऐन तँ

फेर ओ कहता। जाहि लोकक लाज अहाँकेँ होइए ओ सभ नै बुझै छै जे तीनू भाँइ भीन छी।" मे हुनक दम्भ ओ मूर्खता दुनू प्रकट भऽ जाइत छनि।

गंगानन्दक जेठ पुत्री रीता लोभी प्रवृत्तिक अछि। ओ सासुरमे कार्यभारसँ अगुता कऽ नैहरेमे बास करऽ लगैत अछि। ततबे नहि, ओ अपन बेटीक विवाह ओ नाति सभक भरण-पोषणो दोसरेक माथे दऽ देबए चाहैत अछि। उत्कट यथार्थक चित्र ओकर चरित्रमे छैक।

पटवारीक तेसर पत्नी लीलाक चरित्रमे सम्पत्तिक प्रति नारीक लोभक परिचय भेटैत अछि। लीला पन्द्रह वर्षक अछि मुदा ओ पचास वर्षक सम्पत्तिवान पटवारीकेँ लोभा कऽ ओकर दूटा पूर्व पत्नीक अछैतो ओकरासँ विवाह कऽ लैत अछि।

एहि तरहेँ एहि उपन्यासमे नारी चरित्रक विविध स्वरूपक दर्शन होइत अछि जाहिमे पारम्परिकता अछि। पूर्ण शिक्षिता ओ आधुनिका नारीक रूपमे केवल एकटा चरित्र एहि उपन्यासमे आएल अछि। ओ चरित्र थिक डॉलीक जे काम तृप्तिक हेतु सकुलकेँ अपन प्रेमक जालमे फसा लैत अछि आ ओकर दु:खद जीवनक कारण बनैत अछि।

देश-काल ओ वातावरणक चित्रण उपन्यास कलाक एक गोट आवश्यक अंग थिक। एकरा द्वारा उपन्यासमे स्वाभाविकताक सृजन होइत छैक। घटनाक स्थल, समय आ तत्कालीन विभिन्न परिस्थितिक चित्रण कऽ उपन्यासकार उपन्यासमे कथा प्रवाहकेँ यथार्थक अनुरूप बनयबाक प्रयत्न करैत छथि। एहिसँ उपन्यासमे सान्द्रता उत्पन्न होइत छैक।

'उत्थान-पतन'मे श्रीमण्डलजी वातावरणक वर्णनमे अपन सिद्धहस्तताक परिचय देने छथि। वातावरणेक वर्णनसँ ई प्रत्येक घटनामे सत्यताक प्रतिरोपण करैत देखि पड़ैत छथि। रोहितपुर गामक बिहारीक वर्णन करैत श्रीमण्डलजी ओकर स्वरूप ओ प्रभावकेँ एहि

तरहेँ निरूपित कएलनि अछि- "एहेन अन्हड़ जिनगीमे नै देखने छेलौं। खेतमे हवा उठल। खढ़-पात उड़ए लगल। गोलियाइत हवा पहिने सुरुंगा ऊपर-मुहेँ अकास दिस बढ़ल। बढ़ैत-बढ़ैत पसरए लगल। जे हवा खेतमे उठल ओ दौगैत टोलमे प्रवेश केलक। टोलमे प्रवेश करिते अन्हड़ घर-दुआरक छप्परकेँ उड़बैत, क्षणेमे हजारो घरकेँ खसा-पड़ा देलक। सभ चकित! जे नर्तकी जकाँ नचैत हवा कनीए कालक पछाइत एहेन भयंकर रूपमे बदैल गेल जे गामकेँ उजाड़ि-पुजाड़ि कऽ एकबट्ट केलक।"

"दुपहरक समय तेँ गामक लोको छिड़ियाएल आ मालो-जाल बाधमे। अन्हड़ समाप्त होइते जे जेतए छल, दौगल गामपर आएल। कियो बच्चा सभकेँ ताकए लगल, तँ कियो माल-जालकेँ। गाममे एकोटा एहेन घर नहि बँचल जेकरा कोनो नोकसान नइ भेल होइ। समुच्चा गामक लोक विपैतमे डुमि गेल। के केकर नोर पोछत! सभकेँ अपने खसैत!"

लालपुर गामक परिवेश, विस्तार, जनसंख्या, शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा आदिक स्थितिक वर्णन एहि रूपेँ भेल अछि-

"रोहितपुरसँ सटले लालपुर। घनगर बस्ती, सभ जातिक लोक बसल। परोपट्टामे सभसँ पुरान गाम। घनगर तेहेन जे बहुतो गोरे बेटा-बेटीक बिआह गामेमे केने। बस्तियो तेहेन गदाल जे आइ तक कियो नै सौंसे गामकेँ भोज खुआ सकल। ओना, सभ जातिक बीच जबार, सौजनी आ सभैती भोज आइ धरि अपन-अपन आन-आन गामसँ चलैत। शुरूमे गाम उत्तरे दछिने बसल। मुदा परिवारो बढ़लासँ आ आनो-आनो गामक लोककेँ आबि बसलासँ गामक नक्शे बदैल गेल। जहिना उत्तरे-दछिने पहिने छल गाम तहिना आब पुबे-पच्छिमे भऽ गेल। जे कियो आन-आन गाम जा कऽ पढ़लक मात्र ओतबे पढ़ल-लिखल लोक गाममे। ने रोहितपुरमे स्कूल आ ने लगे-पासक कोनो

गाममे। गाममे एकटा हकीम जे मात्रिक-अलीनगरमे जा पढ़ने। ओइ हकीमक माम बढ़ियाँ हकीम जे अपने लग राखि भागिनकेँ पढ़ौने। पढ़ल-लिखलमे एकटा दीनानाथ जे वैदगिरी करैत। परोपट्टामे एकेटा वैद दीनानाथक जोड़ा नहि।”

एहिना तत्कालीन शिक्षा-व्यवस्था, नारी शिक्षा, जमीन्दारी प्रथा ओ मिथिलाक ग्राम्य समाजक भाषिक स्थितिसँ सम्बद्ध विवरण दैत कहल गेल अछि जे ‘मिथिलांचलमे केतौ-केतौ संस्कृत विद्यालय, केतौ-केतौ गोटि-पँगरा संस्कृत महाविद्यालय आ एकटा संस्कृत विश्वविद्यालय, जाहिमे संस्कृत भाषाक माध्यमसँ पढ़ाइ होइत। मुदा शिक्षा जनोपयोगी कम, सेहो आमजन-ले उपलब्ध नहि। ग्रामीण इलाकामे कियो-कियो खानगी शिक्षक रखि अपन-अपन बेटाकेँ पढ़बैत। लड़कीकेँ पढ़ाएब सेहो बर्जिते जकाँ। कोनो-कोनो गाममे, गौंआँ अपन सहयोगसँ लोअर-प्राइमरी स्कूल चलबैत। हाई स्कूल आ कौलेज नगण्ये जकाँ। सेहो बजारक इलाकामे। तेँ ग्रामीण इलाकामे आगू पढ़ैक कोनो उपाइए नहि। किछु गनल-गूथल सुभ्यस्त परिवारक विद्यार्थी पढ़ैत, ओहो बाहर जा-जा।’

‘ओना, मिथिलांचलमे जमीन्दारीक विरोधमे जन-आन्दोलन शुरू भेल। जमीनक लड़ाइ जोर पकड़लक। अपन कमजोरी जमीन्दारो बुझैत मुदा अंग्रेजी हुकुमतक जन-विरोधी शासनक लाभ उठा ओहो सभ माने जमीन्दारो सभ आम जनक विरोधे करैत। गोटि-पँगरा जमीन्दार आम-जनक संग सहानुभूति रखैत। मुदा तैयो जन-आन्दोलन बढ़िते गेल। कमल नहि माने दबल नहि।’

‘भाषा आ संस्कृतिक दृष्टिञे समाज दू भागमे बँटल। एक भाग पढ़ल-लिखल पण्डित लोकनिक बीच संस्कृत आ परिनिष्ठित मैथिली चलैत तँ दोसर दिस टुटल-फुटल मैथिली–जनभाषा चलैत जेकरा पढ़ल-लिखल लोक गमार आ असभ्य बुझैत। आम-जनक जिनगियो

पछुआएल। आम जनक जिनगी पछुआइक अनेको कारण छल, जेना- जमीन्दार खेतक मालगुजारी लइ छल जे दू-साल नै देलापर किसानक जमीन निलाम कऽ लेल जाइत। जइसँ आइक किसान काल्हि बोनिहार बनि जाइत।'

एहि तरहेँ श्रीमण्डलजी वर्णनकेँ व्यापकता प्रदान कऽ तत्कालीन परिस्थितिक अत्यन्त स्वाभाविक ओ केन्द्रीय विषयक अनुकूल पूर्ण चित्रांकन प्रस्तुत कएलनि अछि। एहि प्रकारक वर्णन सभसँ उपन्यासक वस्तु आ चरित्रक विश्वसनीयता बढ़लैक अछि जाहिसँ कथ्यक गंभीरतासँ पाठकक साधारणीकरण होइत चलैत छैक।

शैलीक दृष्टियेँ एहि उपन्यासकेँ वर्णनात्मक शैलीक उपन्यास कहल जा सकैत छैक किएक तँ बेसी ठाम उपन्यासकार एकटा कथावाचक जकाँ विवरण प्रस्तुत करैत गेल छथि। कथ्यकेँ पात्रक माध्यमे कहबाक शैलीक बहुधा अनुगमन नहि भेल अछि। कथ्यकेँ आगू बढ़यबाक हेतु जेना उपन्यासकार सर्वत्र स्वयं उपस्थित रहैत छथि। एहि शैलीक माध्यमे उपन्यासकार एक दिस जँ उपन्यासकेँ मनोरंजक बनयबाक प्रयासमे सफल भेलाह अछि तँ दोसर दिस लोकशिक्षणो प्रदान करैत गेलाह अछि। एहिमे मानव जीवनक विभिन्न कार्य, भावना, नैतिक मूल्य, स्थिति आदिक दस्तावेजीकरण भेल अछि तथा ओकर प्रत्यक्ष अनुभवक आधारपर व्याख्या भेल अछि। स्वभावत: उपन्यासकार पाठकक मानसमे अपन प्रौढ़ विचार ओ अनुभूतिकेँ स्थानान्तरित करबामे सफल भेल छथि आ उपन्यास-कलाक मर्मज्ञक रूपमे स्थापित होइत छथि। वस्तुत: एहि उपन्यासमे उपन्यासकारक स्तरीयता एकटा प्रवीण कथावाचकक छनि जे कथाकेँ प्रस्तुत करबाक प्रति अत्यन्त निष्ठावान देखि पड़ैत छथि।

एहि उपन्यासमे किछु ठाम पूर्व दीप्ति (Flash back) शैलीक

प्रयोग सेहो भेल अछि। खासकऽ रघुनाथ दासक महंथ बनबाक कथा एवं डाक्टर नीलमणिक मिथिला अयबाक कथामे एहि शैलीक प्रयोग अत्यन्त चतुरताक संग कएल गेल अछि जाहिसँ कथ्यमे आकस्मिकताक निवारण भेल अछि आ ओ सहज प्रतीति योग्य भऽ गेल अछि। अवश्ये प्रो. ज्योतिमणि आ प्रो. जफरक मैत्रीक आत्यन्तिक प्रगाढ़ता थोड़ेक अविश्वसनीय जकाँ भऽ गेल अछि।

श्रीमण्डलजीक एहि उपन्यासमे मनोविश्लेषणात्मक शैलीक बहुश: प्रयोग भेल अछि जाहिसँ पात्र सभक आन्तरिक मन:स्थिति उद्घाटित भेल अछि। उदाहरणक हेतु तेतरीक मन:स्थिति एहि पाँती सभमे द्रष्टव्य अछि- “बेटाक ममता तेतरीक हृदयकेँ झकझोड़ैत रहइ। एक मन तेतरीक कहै जे खेत रखि बेटाकेँ मरए दिऐ ओहो उचित नहि। दोसर मन कहै जे बेटो चलि जाएत आ खेतो, तखन अपन बुढ़ाड़ी केना चलत? फेर मनमे एलै जे बेटाक सोग बरदास हएत आ खेतक सोग नहि! देखल जेतै बुढ़ाड़ीमे। जँ कमाइक शक्ति नै रहत तँ भीखे माँगब।”

एहिना गंगानन्दक मनोविश्लेषण द्वारा ओकर चिन्तनक विविध दिशाकेँ एहि रूपेँ प्रस्तुत कएल गेल अछि-

“दलानक चौकीपर देबालमे ओङैठ उत्तर-मुहेँ गंगानन्द बैस आँखि बन्न कऽ दुखक अथाह सागरमे उगैत-डुमैत। मनमे इएह होइ जे खेत निलाम होइपर अछि, जँ समयपर मालगुजारी नै दऽ सकब तँ निलाम भइये जाएत। जँ खेत चलि जाएत तँ जीब केना। अखन धरि जे समाज आ कुटुमक बीच प्रतिष्ठित बुझल जाइ छी ओ केतए चलि जाएत...। फल-फूलसँ लदल जहिना कोनो बगीचा हवाक सिहकी पाबि झुमैत रहैत आ एकाएक अन्हड़-तूफान आबि सभटा गाछ-बिरीछकेँ खसा-पड़ा दैत, वएह स्थिति तँ हमरो भऽ रहल अछि...। चकभौर लैत गंगानन्दक मनमे उठलैन- एते रहलापर जखन हमर ई

गति भऽ रहल अछि तखन जेकरा कम छै, ओकर गति की हेतइ। हमरे खेत जखन निलाम भऽ जाएत तखन हमहीं की करब। तीन भाँइक भैयारी अछि। परिवारो नमहर अछि। अखन धरि सभकेँ अपन बुझि दिन-राति सेवा करैत रहलौं। मुदा जेतेक अपन बुझि करैत रहलौं तेते भाए-भावो आलसी बनैत गेल। सिरिफ खाइ-पीबै आ आरामसँ रहैक चिन्ता सभकेँ रहलै।"

श्यामानन्दक मनोविश्लेषण प्रस्तुत कऽ उपन्यासकार कृषक जीवनक दैन्यक वर्णन कएलनि अछि। प्राकृतिक आपदासँ बचबाक हेतु सक्रिय भेलाक बाद ओकर परिणामक चिन्तनमे श्यामानन्दक उल्लासक वर्णन करैत उपन्यासकार कहने छथि-

"अखन धरि भगवानक भरोसे खेती चलैत रहल, जइसँ अछैत खेत रहनौं अन-पानिक दिक्कत होइत रहल। जँ कोनो साल सम-गम बरखा भेल तँ उपजा नीक भेल, नइ तँ रौदी वा दाही भेल। अढ़ाइ-तीन सालसँ रौदी अछि, मुदा रौदी-दाहीसँ बँचैक उपाय आइ धरि नै सोचलौं। बारह मासक साल होइए। जइमे सिरिफ चारिए मास बरसातक अछि। जइमे बेसी बरखा भेने दहार होइए आ कम भेने रौदी। मुदा बँचल आठ मास अछि तहूपर तँ नहियेँ किछु सोचल जाइए। ओना, अखन धरि हमहूँ इएह बुझै छेलौं जे पानि सिरिफ मेघेटा सँ होइए। माटिक तरोमे पानि छै जेकरा ऊपर आनि खेती-बाड़ी कएल जा सकैए, से बुझबे ने करै छेलौं। ओना, इनार-पोखैरमे जरूर देखै छेलिऐ मुदा तैयो किछु करै नइ छेलौं, खाएर जे भेल मुदा आब तरका पानि ऊपर अनैले बोरिंग गड़ाएब। अखन हाथमे रुपैआ नै अछि घरमे गहना, खेत आ बड़का-बड़का गाछ सभ तँ अछि। तँए चाहे गाछ बेच कऽ वा खेत बेच कऽ वा गहना बेच कऽ सभसँ पहिने बोरिंग जरूर गड़ाएब। जखने बोरिंग भऽ जाएत तखने खेती हाथमे चलि औत। जखने हाथमे खेती चलि औत तखने अन, तीमन-तरकारी उपजए

लगत। एक बीघा खेत गाछी-बिरछी, घर-घराड़ीमे फँसल अछि। नअ बीघा तँ उपजैबला अछि। नअ बीघाक उपजासँ तँ पचास गोरेक परिवार हँसी-खुशीसँ चलि सकैए। हम तँ तीनिए गोरे छी, तहूमे एकटा बच्चे अछि...। पानि हाथ एलासँ रौदियो मेटा जाएत, खाली कोनो-कोनो साल बाढ़िक खतरा रहत। सेहो मात्र चारिए मास। अन, तीमन-तरकारीक ढेरी लगि जाएत। जेते परिवारमे खरच हएत ओतबे ने, बाँकी फजिलाहा बेच कऽ जिनगीक विकासमे लगाएब। अखन धरि कोढ़ि बनि भाँग-गाँजाक पाछू समय बेरबाद केलौं मुदा आबो जँ चेती तँ बहुत-किछु कऽ सकै छी।"

उपन्यास एकटा एहन विधा अछि जाहिमे प्रबन्धकाव्य, नाटक, मुक्तक कविता, गीति, संस्मरण, रेखाचित्र, रिपोर्ताज आदि अनेक विधा अन्तर्भुक्त रहैत अछि। स्वभावत: एकर भाषा समस्त काव्यविधाक अनुरूप विविध रूप ग्रहण कयने रहैत अछि।

'उत्थान-पतन'मे मिथिलाक सामाजिक-आर्थिक जीवनक यथार्थक चित्रण भेल अछि। स्वभावत: उपन्यासकार तदनुरूप भाषाक प्रयोग कयने छथि। हिनक कथ्य भाषा ओ पात्र भाषामे कोनो अन्तर नहि छनि। दुनू भाषा जनसामान्यक ग्राम्य मैथिली थिक। तथापि उपन्यासकार भाषिक सौन्दर्यक अभिवृद्धिक हेतु अनेक प्रकारक उपकरण सभक प्रयोग कयने छथि जे सर्जनात्मकताक द्वारा कथ्यकेँ आकर्षक ओ सारगर्भित बनौने अछि। उदाहरणक हेतु किछु सूक्तिक प्रयोग द्रष्टव्य अछि यथा-

- जँ सभ चलैक ढंग सीख लिअए तँ चैनक जिनगी सहजे-सहज बनि जाएत।

- जेते हिम्मत करब तेते असानीसँ काज हएत। अपन काज तँ लगिचाइए गेल, खाली टाट छुटल अछि। चारि बजे भोरे जाबे कौआ-

डकतै-डकतै टाटो बैसा लेब।

- जे मनुक्ख सृजनशील अछि वएह एहि दुनियाँक आनन्द उठा सकैए।

- जेतेक अधिक मनुक्खक सेवा एहि शरीरसँ भऽ सकत ओते अधिक धर्म होएत।

- अधरमीसँ धरमात्मा बनब बड़ कठिन नहि अछि सिरिफ रस्ता बदलैक अछि। अखनेसँ धरमक रस्ता धरू, सभ आशा पूर भऽ जाएत।

ग्राम्य भाषाक संगहि एहि उपन्यासमे स्तरीय मैथिलीक विपरीत क्षेत्रीय वर्तनीक प्रयोग भेल अछि, से कथ्यो भाषामे आ पात्रोक भाषामे जे एकर अन्यतम वैशिष्ट्य थिक। अनेक पात्रक नाम सेहो ग्राम्य जीवनक अनुरूपे राखल गेल अछि यथा- तेतरी, लेलहा, दुखन, बचनी, ढोरबा, सुधिया, बेङबा, कुरहरिया, भोलिया, घुरनी, त्रिवेणी, सोनेलाल, मनचल आदि।

ग्राम्यशब्दावली ओ शब्दयुग्मक प्रयोगसँ उपन्यासक भाषामे चमत्कार उत्पन्न भेल अछि। एकरा सभक प्रयोगसँ ई स्पष्ट अछि जे श्रीमण्डलजीकेँ ग्रामीण क्षेत्रक भाषाक बोध अद्भुत ओ सूक्ष्म तथा सटीक छनि। द्रष्टव्य अछि किछु विशिष्ट शब्द प्रयोग, यथा-

परोपट्टा, गदमिसान, डिरिआएब, अट्ठा-बज्जर, हाँइ-हाँइ, फक्का-फुक्की, दाइ-माइ, डाइन-जोगिन, दियाद-वाद, दोस-महिम, कुटुम-परिवार, मुँहगर-कन्हगर, छनकट, छौड़ा-मारड़ि, उखड़ाहा, उपजा-बाड़ी, लगुआ-भगुआ, बेर-बेगरता, कुल-मूल, कानब-खीजब, कुल-खूट, हाँ-हाँ-हीं-हीं, तीमन-तरकारी, रौदी-दाही, हँसी-खुशी, पाहुन-परक, पानि-पाथर, बुढ़-पुरान आदि।

अनेक स्थलपर श्रीमण्डलजी विभिन्न उपमानक प्रयोग कऽ

वर्णित प्रसंगकेँ तीक्ष्णताक संग उद्भासित कऽ अपन भाषाक सर्जनात्मक क्षमताक परिचय देलनि अछि। एहि प्रकारक प्रयोग हुनक सूक्ष्म निरीक्षण शक्ति एवं उर्वर कल्पना-शक्तिक परिचय दैत अछि यथा-

- बचनाक मन, जेना धिया-पुताक हाथसँ कौआ रोटी लपैक उड़ि जाइत तहिना सोगाएल।

- समाज रूपी जंगलमे मनुक्ख रूपी गाछ एहेन अछि जइमे मीठ फल फड़ैबला गाछ झँपा गेल अछि आ कँटहा गाछ एहेन भोंगर बनि गेल अछि जे अनाड़ी-धुनाड़ी वौआ जाइए।

- बिआहक समय गीत गौनिहारि एहेन आकर्षित वातावरण अपन गीतक माध्यमसँ बनौने रहैथ जेना वसन्तक आगमनक समय प्रकृति बनबैत।

- चुनचुनमाक दशा गाममे ओहन भऽ गेल जेना कोनो बड़का डकैत जहलमे जा दाढ़ी बढ़ा बबाजी बनि जाइत।

एहि तरहक अकृत्रिम ओ नव-नव उपमानक प्रयोग कथाक्रममे यत्र-तत्र भेल अछि जे पाठकीय सम्वेदनाकेँ तीव्र करबामे सहायक भेल अछि।

पात्रक वेश-भूषा, क्रिया ओ परिवेशक वर्णन काल अनेक ठाम उपन्यासकार यति, गति सम्पन्न काव्यमय भाषाक प्रयोग करैत देखि पड़ैत छथि जे कथ्यक लालित्यक सम्बर्द्धनमे सहायक होइत अछि आ ओकरा पाठकीय मर्मकेँस्पर्श करयबामे सहायक होइत छैक। एहन वर्णनमे चित्रात्मकता अत्यन्त आकर्षक भेलनि अछि यथा-

- माथपर छिट्टा लऽ दुनू हाथसँ दुनू भाग छिट्टाकेँ पकैड़ दुलकी डेग बढ़बैत गुलाब 'सैंया भेल किसनमा' घुनघुनाइत आँगन दिस लफरल चलली।

- गोर वर्ण, रिष्ट-पुष्ट शरीर, घनगर मोँछ, बरदक आँखि सन नमहर-नमहर आँखि। कोठीक गेँटपर कान्हमे बन्दूक लटका ठाढ़ ड्यूटी सेठक करैत।

मिथिलाक सांस्कृतिक पक्षक वर्णनक अनेक अवसर कथावस्तुमे उपस्थित रहितो उपन्यासकार ग्राम्य संस्कृतिक भजन-कीर्त्तन, बिआह-दान, नाच-नाटक, बैण्ड पार्टी, छुड़छुड़ी-फटक्का आदिक वर्णन तँ कएलनि अछि मुदा बहुधा एकरा सभकेँ सूच्ये वस्तु जकाँ रखलनि अछि। जूड़शीतल पावनिक सम्बन्धमे ई वृहत्तर सूचना प्रदान कयने छथि जाहिसँ उपन्यास मिथिलाक संस्कृतिक प्रतिनिधित्व करबामे सेहो सफल भेल अछि।

समष्टिमे वर्णनात्मक शैलीमे रचित ई सामाजिक उपन्यास यथार्थक चित्रण करितो एकटा एहन आदर्श समाजक निर्माणक चिन्तन प्रस्तुत कयने अछि जाहिमे सर्वहारा वर्गक सर्वांगपूर्ण उन्नतिक परिकल्पना कएल गेल छैक। तेँ एहि उपन्यासकेँ आदर्शोन्मुखी यथार्थवादी उपन्यास कहल जा सकैत अछि। एहिमे स्वतंत्रतापूर्व ग्राम्य मिथिलाक इतिवृत्तक चित्रांकन भेल अछि। ❑

उपन्यासक सुमेरु : 'पंगु'

'पंगु' श्रीजगदीश प्रसाद मण्डलजीक उपन्यासमालाक सुमेरु थिक। हिनक रचना-संसार ततेक समृद्ध अछि जे पोथीक संख्याक दृष्टिञे मैथिली साहित्यक क्षेत्रमे ई एकल छथि आ टैगोर लिटरेचर एवार्ड, विदेह सम्मान, वैदेह सम्मान, कौशिकी साहित्य सम्मान, यात्री चेतना पुरस्कार आदि अनेक पुरस्कार-सम्मानसँ ई समलंकृत होइत गेल छथि मुदा 2021 मे हिनका एही पोथीपर अखिल भारतीय स्तरक दोसर पुरस्कार साहित्य अकादेमी पुरस्कारसँ मण्डित कयल गेलनि।

हिनक एहि पोथीकेँ उपन्यासे विधाक अन्तर्गत परिगणित कयल गेल अछि मुदा वस्तुत: ई मिथिलाक कृषि-व्यवस्थाक ऐतिहासिक दस्तावेज थिक। एहिमे हिनक गद्यात्मक महाकाव्य-रचनाक शिल्पक उत्कृष्टता प्रदर्शित भेल अछि। एहि उपन्यासक कथावस्तु अत्यन्त संक्षिप्त अछि जाहिमे देवचरण नामक एक गोट मध्यमवर्गीय कृषकक कृषि व्यवसायमे सन्नद्ध रहि पारिवारिक जीवनकेँ सुसमृद्ध बनयबाक कथा कहल गेल अछि। देवचरण लग अत्यल्प कृषि योग्य भूमि छनि, सेहो विभिन्न कोलामे बँटल छनि। पुत्र राधाचरण अत्यन्त कोढ़ि प्रकृतिक छनि तेँ हुनका पशुपालन दिस अग्रसर कय स्वयं कृषि-व्यवस्थामे जुटल रहि ई कोनहुना परिवारक गाड़ी चलबैत रहैत छथि। मुदा जखन पौत्र हरिचरण पैघ होइत छनि तँ उन्नत कृषि व्यवस्थाक लाभ उठयबाक हेतु प्रेरित भऽ अपन सभटा जमीनकेँ एकीकृत करैत बोरिंग, पम्पिंग सेट ओ रासायनिक खादक प्रयोगक संगहि सकल परिवारकेँ योग्यतानुरूप कृषि-व्यवस्थासँ जोड़ि विभिन्न प्रकारक अन्न ओ नगदी फसिल उगा कऽ ओ अपन परिवारकेँ समृद्ध ओ आधुनिक बनयबामे सफल होइत छथि। कृषक जीवन सेहो साम्प्रतिक उन्नत

खेतीकेँ अपनाय समृद्ध भऽ सकैत अछि आ पलायनक दंशसँ बँचि सकैत अछि सैह उपन्यासक केन्द्र-बिन्दु थिक।

तथापि एहि उपन्यासमे औपन्यासिकतासँ बेसी तिथि क्रमानुसार ऐतिहासिक तथ्य सभपर विचार कयल गेल अछि जाहिसँ ई इतिहास बेसी आ उपन्यास कम बुझना जाइत अछि। सम्पूर्ण उपन्यासमे लेखक एकटा वक्ताक रूपमे समुपस्थित छथि आ इतिहासक शिक्षक जकाँ ग्राम्य जीवनक क्रमश: बदलैत परिवेशक चित्रण करैत गेलाह अछि। एहिसँ केन्द्र-बिन्दुक सान्द्रता छहोछित्त भेल बुझना जाइत अछि। स्वभावत: उपन्यास अपन प्रभाव तीक्ष्णताक संग सम्प्रेषित नहि कऽ पबैत अछि अपितु इतिहास-ज्ञानक रत्नाकर जकाँ बुझना जाइत अछि।

पहिल परिच्छेदमे हरिचरणक गामक लाथेँ मिथिलाक एक गोट गामक चित्र उपस्थित भेल अछि। एहि क्रममे गामक भूमिक प्रकार, पोखरि-झाँखरि, नदी-नाला, उपजबा योग्य अन्न, तीमन-तरकारी, फल-फलहरी, साग-पात, पुष्प-लता, माछ-काछु, जन्तु-जनारो, चास-बास, जारन-गोइठा, लोक-वेद, पारिवारिक व्यवस्था, जाति-वर्ण, काज-उद्यम, अर्थ-व्यवस्था, धर्म-सम्प्रदाय, देवी-देवता, भेद-भाव, छूता-छूत, शोषण-उत्पीड़न आदिक चित्र प्रस्तुत कयल गेल अछि। तत:पर जमीन्दारी व्यवस्था, सर्वे-सेट्लमेंट, मालगुजारी-व्यवस्था आदिक चर्च कयल गेल अछि तथा भूपति ओ रैयतक बीच सम्बन्धक व्याख्या कयल गेल अछि। एही क्रममे जमीन्दार, महन्थान ओ रैयतक बीच सम्बन्धक व्याख्या कयल गेल अछि। तत:पर ई सूचित कयल गेल अछि जे 1940 इस्वीमे स्वतंत्रता प्राप्तिसँ पूर्वकालहिमे हरिचरण ओहि गाममे अवतरित भेल छलाह आ जमीन्दारसँ अपन पूर्वज द्वारा जोतल जाइत बकास्त जमीन प्राप्त करबो सफल भेल छलाह।

दोसर परिच्छेदमे 1934 क भूकम्पक त्रासदी, सनिचरापर

आधारित लोअर प्राइमरी स्कूल, बहरबैया जमीन्दारक कचहरी, पटबारी, गुमस्ता ओ बराहिलक अत्याचारी प्रवृत्ति आ रैयतक संग संघर्षक पछाति रैयत लोकनिक विजयक कथा विवृत भेल अछि।

तेसर परिच्छेदमे स्वतंत्रता आन्दोलनमे शिक्षक लोकनिक योग्दान, स्वतंत्रता प्राप्त भेला उत्तर कृषक समुदायक अभ्युन्नतिक आशाक जागरणक फलस्वरूप ओहि समुदाय द्वारा आन्दोलनमे भाग लेबाक उत्साह, विभिन्न राजनीतिक दलक उत्थान, समाजक मूलभूत आवश्यकताक पूर्त्तिक हेतु प्रयत्न, अन्धविश्वास, महाजनी व्यवस्था, सूदि-भरना-बन्हकी, बामपंथी ओ दक्षिणपंथी विचारधारा, जातीय विद्वेष आदिक स्थितिपर प्रकाश देल गेल अछि।

चारिम परिच्छेदमे स्वातंत्र्योत्तर भारतमे सिंचाइक हेतु पोखरि सभक सार्वजनीकरण, अतिवृष्टि-अनावृष्टि जन्य कृषिक दुरवस्था, पारस्परिक झगड़ा-झाँटी, उन्नत कृषि यंत्र ओ व्यवस्थाक अभावमे उपजाक क्षति, हरिचरणक प्राथमिक शिक्षा ओ तत:पर हुनक भविष्यकेँ सुरक्षित करबाक देवचरणक संकल्पक विवरण प्रदान कयल गेल अछि।

पाँचम परिच्छेदमे ई जनाओल गेल अछि जे स्वातंत्र्योत्तर भारतमे किसानक मूल पूजी भूमि जमीन्दार ओ महंथाने सभक लग संचित रहल। परिणाम ई भेल जे खेती कयनिहार किसान कृषि संसाधन, बोआइ-कटाइ, अगौ आदिक बाद उपजाक आधा भाग जमीन्दारेकेँ दऽ देलाक बाद स्वयं किछु बचा नहि पबैत छल जाहिसँ ओ वर्ग महाजनक चाङुरमे पड़ि जाइत छल। ताहिपर सँ बेलगान घराड़ीक कारणे हुनका सभकेँ जमीन्दारक अत्याचार सेहो सहऽ पड़ैत छलनि। मुदा परवर्त्ती कालमे जमीन्दारी उन्मूलन, बासडीह पर्चा, हदबन्दी कानून, भूदान यज्ञ आदिक बाद भू-राजस्व सरकारक हाथमे आयल आ उपजौनिहारक हाथमे खेतक स्वामित्व आयल। भू-

स्वामित्व समेकित रूपमे सरकारक हाथमे चल गेल। एही क्रममे उपन्यासकार प्रथम ओ द्वितीय विश्वयुद्धक विश्वक आर्थिक व्यवस्थापर कुप्रभाव, साम्यवादी व्यवस्थाक उत्थान, निलहा कोठीवलाक शोषक-व्यवस्था आदिक चर्चा कयलनि अछि तथा अन्तत: देवचरण द्वारा पौत्र हरिचरणकेँ कृषि दिस उत्साहित करबाक कथा कहलनि अछि।

छठम परिच्छेदमे देवचरण सकल परिवारकेँ योग्यतानुसार कृषि कर्ममे सन्नद्ध होयबाक व्यवस्था करैत छथि। सातम परिच्छेदमे उपन्यासकार भूदान आन्दोलन, खादी-आन्दोलन, लघु उद्योग, नगदी खेती आदिक स्थितिपर विमर्श उपस्थित कयलनि अछि। आठम परिच्छेदमे कोसी नहरि ओ बान्हक निर्माणक संगहि चीनक संग भारतक युद्ध तथा 1967 क रौदीक कारणे भारतीय अर्थव्यवस्थाक विपन्न स्थितिक वर्णन भेल अछि। तथापि लोकजीवनक स्वास्थ्य रक्षाक दृष्टिञे दरभंगा अस्पताल बनबाक सूचना सेहो प्रदान कयल गेल अछि। तत:पर जमीनक सर्वे, सरकार द्वारा स्टेट बोरिंगक व्यवस्था, सब्सिडीपर बोरिंग प्रदान कऽ प्राइवेट बोरिंगक व्यवस्था द्वारा उन्नत कृषि दिस कृषककेँ अभिमुख करयबाक युक्ति, मैट्रिक धरि नि:शुल्क शिक्षा-व्यवस्था, पाकिस्तानक संग युद्ध ओ बंगला देशक निर्माण, कृषि फार्मक माध्यमे उन्नत कृषिक प्रचार, रासायनिक खाद ओ जैबिक खाद द्वारा उपज बढ़यबाक युक्ति, पौधा-रोपण कार्यक्रम आदिक चर्चा करैत कहल गेल अछि जे एहि तरहक सम्बद्ध कार्यक्रमसँ देश उन्नतिक मामिलामे आत्मनिर्भर तँ भऽ गेल मुदा उद्योग-धंधाक अभावमे कृषि-कर्मक उचित मूल्य नहि भेटबाक कारणे किसानक जिनगी खास कऽ मिथिलामे पंगुए बनल रहल। ओ सभ राष्ट्रीय अनुपातमे अपन स्तर ऊपर नहि उठा सकलाह।

अन्तिम नवम परिच्छेदमे उपन्यासकारक ई निष्कर्ष छनि जे

मिथिलांचल ई प्रवृत्ति छैक जे सामान्यत: एहि ठामक लोक नारीकेँ पारिवारिक काजमे नहि लगबऽ चाहैत छथि आ हुनका लेल भनसीया, पनिभरनी, बहिकिरनी आदिक व्यवस्था कऽ दैत छथि एकर परिणाम ई होइत अछि जे नारी-श्रमक लाभ परिवारकेँ नहि भेटि पबैत छैक आ ओकर आर्थिक स्तर उन्नत नहि भऽपबैत छैक। तेँ कृषि-व्यवस्थामे जँ सम्पूर्ण परिवार लागि पड़थि तँ कोनो कारण नहि छैक जे परिवारक आर्थिक उन्नयन नहि होयतैक।

एही विचारधाराक अनुगमन कऽ हरिचरण उन्नत कृषि कऽ सुभ्यस्त कृषकक रूपमे स्थापित होइत छथि। तथापि उपन्यासकार मिथिलाक साम्प्रतिक कृषि-व्यवस्थासँ संतुष्ट नहि छथि आ ओकर पंगु परिवेशकेँ बदलबाक हेतु उन्नत कृषि, समवेत श्रम आ कृषि आधारित स्थानीय उद्योग-धंधाक विकासकेँ प्रश्रय देबाक प्रस्ताव रखैत छथि।

एतावता पंगु उपन्यास मिथिलाक कृषक जीवनमे होइत उच्चा-वच्च परिवेशक ब्रिटिशकालीन ओ स्वातंत्र्योत्तरकालीन इतिहासक संक्षिप्त रूप-रेखा प्रस्तुत करैत अछि। कृषि व्यवसायक पंगुतापर आधारित एहि उपन्यासक नामकरण सर्वथा सार्थक अछि। उपन्यास यथार्थवादी चित्रणपर आधारित अछि तथापि एहिमे उपन्यासकारक प्रगतिवादी चिंतन छनि जे जाधरि भू-वितरणमे स्वयं कृषि-कार्य कयनिहार प्रबुद्ध कृषककेँ प्राथमिकता नहि देल जयतनि, जाधरि कृषि आधारित परिवारक समस्त जन कृषि कार्यमे सन्नद्ध नहि होयताह आ जाधरि कृषि आधारित उद्योग-व्यवसायकेँ मिथिलामे प्रश्रय नहि भेटत, ताधरि हरिचरणो सदृश कृषक अन्यान्य व्यवसायी जकाँ उच्चवर्गीय आर्थिक ओ सामाजिक स्तरकेँ प्राप्त नहि कऽ सकैत छथि। ओ सभ अर्थ-पंगु बनले रहताह। स्वभावत: ई उपन्यास कृषक-आन्दोलनक हेतु राज्य ओ राष्ट्रक स्तरपर पर्याप्त विमर्शक अवसर प्रदान करैत अछि। सम्प्रेषणीयताक किंचित अभाव रहितो,

औत्सुक्यक अभाव रहितो ई उपन्यास पठनीय एवं उच्चस्तरीय विचारक संवाहक अछि। यैह राष्ट्रीय स्तरक चिन्तन एकरा श्रीमण्डलजीक उपन्यासमालाक सुमेरु बनौने छल होयतनि, से सहजहिँ कहल जा सकैछ।

❑❑❑
❑❑
❑

Notes